वार्षिक रिपोर्ट २०१५-२०१६

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान – भारत

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान

National Innovation Foundation - India

Autonomous Body of the Department of Science and Technology, Govt. of India

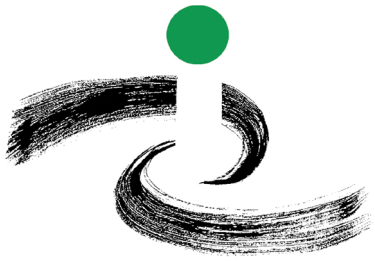

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान – भारत

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान

परिचय

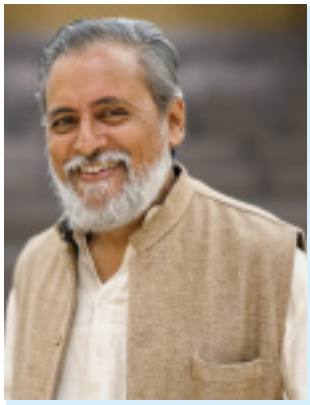

प्रो. अनिल के. गुप्ता
कार्यकारी उपाध्यक्ष, रानप्र-भारत
प्रोफेसर, भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद

तृणमूल नवप्रवर्तकों और देश के कोने-कोने के सृजनशील बच्चों को राष्ट्रपति भवन की चहारदीवारी के भीतर तक ले जाने के सफर में सहायता करना, हनी बी नेटवर्क (नेट वर्क) उसके सक्रिय हिस्से - राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान (रानप्र) के अद्वितीय विशेषाधिकारों में शामिल है। रानप्र द्वारा व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रोत्साहन के जरिए तृणमूल समुदायों के सपनों में सामाजिक सम्मान का रंग भरा जाता है। यह तृतीय पक्ष (थर्ड पार्टी) उद्यमियों को तकनीकों की लाइसेंसिंग में सहायता प्रदान कर या नवप्रवर्तकों/समुदायों के वाणिज्यीकरण में सहायता प्रदान करता है, साथ ही व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रोत्साहनों में भी योगदान देता है। नेटवर्क के पहले के अध्ययनों में देखा जा चुका है कि समावेशी नवप्रवर्तन पारिस्थितिकी तंत्र को बनाये रखने में प्रोत्साहनों का महत्वपूर्ण योगदान है।

रानप्र-भारत, ऐसे तरह-तरह के प्रोत्साहनों के साथ प्रयोग करता रहा है, जिनसे रचनात्मक समुदायों को अन्य समुदायों के साथ उनके विचारों को व्यापक रूप से साझा करने हेतु प्रेरित किया जा सके। हालांकि, यह ज्ञात है कि प्रत्येक ज्ञान-प्रदाता के साथ उपयोगी ज्ञान साझा करना एक ऐसा लक्ष्य है, जिसके लिए काफी कुछ किया जाना बाकी है। रानप्र और नेट वर्क ने शुरू में ही यह तय किया था कि खोज या तलाश की अपेक्षा साझा करने की प्रवृत्ति को अधिक प्राथमिकता मिलेगी। हालांकि, रानप्र ने देश की रचनात्मक प्रतिभाओं की तलाश में अभूतपूर्व सफलता हासिल की है, जिसका श्रेय नेटवर्क के स्वयंसेवियों को जाता है, वही विचारों के प्रसार में इसकी उपलब्धियां कम उत्साहजनक रही है।

तकनीकी का मान्यकरण, पेटेंट आवेदनों का प्राथमिकता के आधार पर परीक्षण कराने एवं इसकी प्रक्रिया को पूरा करने, तकनीकों की लाइसेंसिंग, और नवप्रवर्तकों के उद्यम संबंधी निवेदनों के लिए सहायता प्रदान करने की दृष्टि से, इस वर्ष में रानप्र ने कई चुनौतियों का सामना किया है। सूक्ष्म उद्यम नवप्रवर्तन राशि (माइक्रो वेंचर इनोवेशन फंड) के नवीकरण में समय लगा, जिसकी वजह से योजना के अनुरूप पहले से तय संख्या में नवप्रवर्तकों को समर्थन नहीं दिया जा सका। इसी तरह अपेक्षाओं में भारी वृद्धि के बावजूद आर्थिक संसाधनों की निश्चित सीमा होने से लोगों के ज्ञान एवं नवप्रवर्तनों के मान्यकरण हेतु आवश्यकतानुरूप परियोजनाओं के लिए अनुमति नहीं मिली। डीएसटी के विशेष सहयोग से, जनजातीय क्षेत्रों में नवप्रवर्तनों के प्रसार का उद्देश्य पूरा हो सका है।

इन सभी चुनौतियों के बावजूद, रा.न.प्र. ने वर्ष के दौरान मूल्य संवर्द्धन एवं शोध व विकास के तहत १६८ तकनीकियों का मान्यकरण और ४७ प्रोटोटाइप/ नवप्रवर्तनों को विकसित किया। इसने वर्ष के दौरान ६३ पेटेंट फाइल किये और उद्यमियों को दो लाइसेंस दिये। ८० औषधिय चिकित्सा पद्धतियों का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव संबंधी दावों के बारे में रानप्र और भारतीय चिकित्सीय शोध परिषद (आईसीएमआर) के सहभागिता से मान्यकरण किया जा चुका है।

लगभग तीन दशकों तक नेटवर्क के प्रयोगों के साथ-साथ डेढ़ दशक से अधिक समय का रानप्र का अनुभव स्टार्ट-अप इंडिया, डिजिटल इंडिया और स्वस्थ इंडिया को समर्थन देने हेतु ठोस आधार प्रदान करता है। हम भारत के राष्ट्रपति के कार्यालय के प्रति आभारी हैं, जिन्होंने नवप्रवर्तन उत्सव (नवप्रवर्तनों का त्योहार) को आयोजित करने और राष्ट्रपति भवन में रेजिडेंस प्रोग्राम में इनोवेशन स्कॉलर को समर्थन देने हेतु हमारी क्षमताओं में भरोसा जताया है। कार्यक्रम स्थल पर

नवप्रवर्तन प्रदर्शनी के अलावा, नवप्रवर्तन उत्सव में समावेशी नवप्रवर्तन पर वैश्विक गोलमेज सम्मेलन, नेशनल इनोवेशन क्लबों का सम्मेलन, सार्वजनिक सेवाएं उपलब्ध कराने में नवीनता, वित्तीय नवप्रवर्तन पर गोलमेज सम्मेलन, गांधीवादी युवा प्रौद्योगिकी नवप्रवर्तन पुरस्कार (जीवाईटीआई), चिकित्सा विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी में नवप्रवर्तन पर गोलमेज सम्मेलन, स्वच्छ भारत पर नवप्रवर्तन प्रदर्शनी और बच्चों की रचनात्मकता एवं सह-सृजन कार्यशाला शामिल है। रानप्र ने डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के योगदान को यादगार बनाने हेतु उनके नाम पर इग्नाइट अवार्ड्स का नामकरण किया। भारत के महामहिम राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी ने आईआईएम, अहमदाबाद में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाइटपुरस्कार के विजेता स्कूली छात्रों को पुरस्कृत किया।

मैं हनी बी नेटवर्क के सभी स्वयंसेवियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और उम्मीद करता हूं कि और अनेकानेक स्वयंसेवी रानप्र के साथ जुड़कर उभरती चुनौतियों का उतनी ही सफलता के साथ सामना करने में सहायता करेंगे, जितनी सफलतापूर्वक वह पहले भी करते रहे हैं। यह अत्यंत संतोषजनक है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने देश के कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय विकास के कार्यों में रानप्र की सहभागिता को सरल बनाते हुए इसे प्रोत्साहन दिया है। रानप्र को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग एवं इससे जुड़े अन्य विभागों से पूरा सहयोग मिला है।

संपूर्ण समर्पण एवं दृढ़ता के साथ युवा स्वप्रेरित टीम ने सृजनशील एवं समावेशी भारत के अभियान में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करने हेतु रानप्र के निदेशक एवं मुख्य नवप्रवर्तन अधिकारी, डॉ. विपिन कुमार के नेतृत्व में कड़ी मेहनत की है। रानप्र के निदेशक मंडल एवं डॉ.आर.ए. माशेलकर के अध्यक्षता वाली समिति का मार्गदर्शन एवं सहयोग अत्यंत सराहनीय है।

मेरी शुभकामना है कि रानप्र नये जोश एवं उत्साह के साथ तृणमूल नवप्रवर्तकों की उभरती महत्वाकांक्षाओं को यूं ही पूरा करता रहे।

अनिल गुप्ता

प्रस्तावना

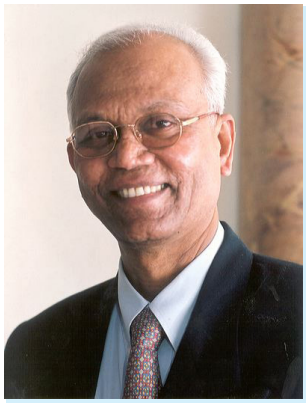

डॉ. आर. ए. माशेलकर - अध्यक्ष, रानप्र-भारत
नेशनल रिसर्च प्रोफेसर, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला

नवप्रवर्तन के इस दशक में राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान-भारत, को अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों और समाज में कई स्तरों पर नवप्रवर्तन को बढ़ावा देने वाले राष्ट्रीय कार्यक्रमों की एक धुरी के रूप में देखा जा रहा है। राष्ट्रपति भवन द्वारा रानप्र- भारत की सहभागिता से नवप्रवर्तन को बढ़ावा देने वाले, खासतौर पर देश में तृणमूल नवप्रवर्तन और इसे उच्च शिक्षा प्रणाली से जोड़ने के लिए कई पहल किये गए हैं। रानप्र-भारत, द्वारा राष्ट्रपति भवन में दूसरे नवप्रवर्तन उत्सव का आयोजन मार्च २०१६ में किया गया और नवप्रवर्तनों के रिहायशी कार्यक्रम में भी सहयोग दिया।

रानप्र-भारत, द्वारा देश के अनौपचारिक क्षेत्रों और स्कूली बच्चों के हजारों रचनात्मक विचारों को खोजा गया। इसमें कईयों के मान्यकरण, मूल्य संर्वधन, प्रोटोटाइप बनाने, उत्पाद विकास, बौद्धिक संपदा प्रबंधन और उसके प्रसार का कार्य रानप्र और उसके सहयोगियों द्वारा किया जा रहा है। रानप्र-भारत अपने शासनादेश के मुताबिक न केवल तृणमूल नवप्रवर्तकों को बढ़ावा देने का कार्य कर रहा है, बल्कि यह देश में समावेषी नवप्रवर्तन के पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत कर रहा है। इसने एक समान लक्ष्य और ध्येय वाले सरकार की योजनाओं में ज्यादा सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर दिया है और बड़ी संख्या में संस्थानों और हितधारकों को इस प्रक्रिया में भागीदार बनाया है।

आज के युग में विभिन्न हितधारकों के बीच ज्ञान की नेटवर्किंग और सूचनाओं का प्रसार एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नवप्रवर्तकों, उद्यमियो, निवेशकों, नीति निर्माताओं, परामर्शदाताओं और आर एंड डी के विशेषज्ञों की लागत को कम कर देता है।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है, कि रानप्र-भारत देश के रचनात्मक समाज की सेवा लगातार आग्रह पूर्वक करता रहेगा । मैं रानप्र-भारत, टीम को शुभभकामनाएं देता हूं।

शुभकामनाओं सहित,

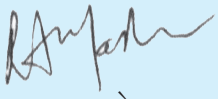

आर.ए. माशेलकर

निदेशक का संदेश

डॉ. विपिन कुमार - निदेशक/मुख्य नवप्रवर्तन अधिकारी
नामित सदस्य, अहमदाबाद

बीते वर्ष में ढ़ेर सारे कार्य हुए। रानप्र द्वारा स्वयं और अन्य संस्थानों के साथ मिलकर अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए अनेक नयी पहलें शुरू की गई हैं। भविष्य की दिशा तय करने के लिये बनाये गए पंचवार्षिक समिति के सुझाव के मुताबिक रान्-ाप्र के क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित करने हेतु कार्य योजनाएं भी बनाई गईं। मानवीय बीमारियों के उपचार के लिए ८० हर्बल पद्धतियों का वैधता परीक्षण हेतु चुनाव किये जाने के साथ, रान्-ाप्र और आईसीएमआर की साझेदारी अगले चरण में पहुंच गई। सिडबी के सहयोग से रानप्र में स्थापित सूक्ष्म उद्यम अभिनव कोष (माइक्रो वेंचर इनोवेशन फंड) अपने दूसरे चरण में पहुंच गया, जहां न केवल तृणमूल नवप्रवर्तक बल्कि उद्यम-आधारित तृणमूल नवप्रवर्तन स्थापित करने के इच्छुक किसी भी उद्यमी को सहायता प्रदान की जा सकती है। रानप्र ने देश के हजारों छात्रों तक पहुंचने के लिए साइंस एक्सप्रेस- जलवायु परिवर्तन विशेष, में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के साथ सहयोग किया। रानप्र स्कूली बच्चों के लिए अपने मौजूदा इंस्पायर योजना में नयापन लाने हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के साथ मिलकर काम कर रहा है। खोज एवं दस्तावेजीकरण, वैधांकन, मूल्य संवर्द्धन, बौद्धिक संपदा प्रबंधन, सामाजिक प्रसार आदि के लिए रानप्र
टीम द्वारा कई अन्य गतिविधियां शुरू की गईं, जिससे जुड़ी विस्तृत जानकारी आगे के पृष्ठों में अनुभागीय गतिविधियों के तहत उपलब्ध है।

विभिन्न गतिविधियों को करते हुए, रानप्र और हनी बी नेट वर्क ने डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की अपूर्णीय क्षति पर भी अपना शोक जताया। रानप्र ने डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम की याद में इग्नाइट अवार्ड्स का नाम बदलकर डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाइटअवार्ड्स रखा, ताकि सृजनशील बच्चों को उनसे प्रेरणा मिल सके। हमारे माननीय राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी ने इग्नाइट२०१५ प्रतियोगिता के पुरस्कार अपने हाथों से दिये, जो इस बात को रेखांकित करता है, जिसे रानप्र पिछले कई वर्षों से कहता रहा है कि सृजनशील बच्चों की कल्पनाएं महत्वपूर्ण होती हैं और राष्ट्र को इस पर ध्यान देना चाहिए। इस अवसर पर, भारत के माननीय राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी व उनके कार्यालय को नवप्रवर्तन से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों हेतु लगातार समर्थन देते रहने के लिए हम अपना आभार जताते हैं। सर्वोच्च स्तर से प्राप्त इस तरह की सहायता से न केवल नवप्रवर्तकों बल्कि युवा कर्मचारियों को भी प्रेरणा मिलती है। मैं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान के माननीय केन्द्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, राज्यमंत्री श्री वाई. एस. चौधरी जी के प्रति उनके मार्गदर्शन हेतु हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। रानप्र के कार्यकारी मुख्य उपाध्यक्ष, प्रो. अनिल के. गुप्ता, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव, प्रो. आशुतोष शर्मा; रानप्र के अध्यक्ष, डॉ. आर. ए. माशेलकर और शासी मंडल के सदस्यों के प्रति समय-समय पर उनके मार्गदर्शन, सहायता एवं प्रतिक्रिया हेतु आभारी हूं। मैं भविष्य की दिशा तय करने के लिये बनाये गए पंचवार्षिक समिति के सदस्यों को भी उनके द्वारा दिये गये सुझावों एवं समय के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं, जिससे रान्-ाप्र को प्रतिपादन एवं प्रभाव तथा गतिविधियों को बढ़ाने में मदद मिलेगी। रानप्र, सृष्टि, ज्ञान और हनी बी नेटवर्क परिवार के मेरे सहकर्मी भी प्रशंसा के पात्र हैं, जिन्होंने लगातार सहायता की।

रानप्र की टीम को तृणमूल नवप्रवर्तकों के कार्यों एवं हनी बी नेटवर्क के स्वयंसेवकों के निःस्वार्थ सहयोग से प्रेरणा मिलती रही है, जो तृणमूल नवप्रवर्तकों हेतु दिल खोलकर अपना समय और ऊर्जा देते हैं। रानप्र तृणमूल नवप्रवर्तकों के हितों की रक्षा के लिए सदैव संकल्पित है।

विपिन कुमार

विषय सूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	शासी मंडल	१०
२.	वित्त समिति	११
३.	सांगठनिक रूपरेखा	१२
४.	आगे कदम बढ़ाते हुए	१३
५.	रचनात्मकता की खोज में: शोधयात्रा	१४
६.	डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाइट पुरस्कार-२०१५	१८
७.	नवप्रवर्तन का उत्सव	२१
८.	अनुभागीय गतिविधियां	२७
९.	साइंस एक्सप्रेस - जलवायु परिवर्तन विशेष - महत्वपूर्ण गतिविधियां	३६
१०.	भविष्य की दिशा के लिए पंचवर्षीय समिति का गठन	३६
११.	नवप्रवर्तकों को दिलाई पहचान	३८
१२.	नवप्रवर्तन विद्वानों का रिहायशी कार्यक्रम	३८
१३.	प्रशासनिक और वित्तीय मामले	३८
१४.	प्रकाशन की सूची	३८

शासी मंडल

डॉ. आर ए माशेलकर- अध्यक्ष, रानप्र
नेशनल रिसर्च प्रोफेसर, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, अध्यक्ष - अंतरराष्ट्रीय शोध संधि, पुणे

प्रो. अनिल गुप्ता - कार्यकारी उपाध्यक्ष, रानप्र
प्रो.भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद

सुश्री इलाबेन भट्ट-सदस्य
संस्थापक- सेवा स्वाश्रयी महिला सेवा संघ, अहमदाबाद

डॉ. वीएल केलकर-डीएसटी नामित सदस्य
पुणे

श्री एच के मित्तल-सदस्य, वैज्ञानिक जी/सलाहाकार एवं प्रमुख
राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उद्यमिता विकास बोर्ड,
राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, प्रौद्योगिकी भवन, नई दिल्ली

डॉ. गिरीश साहनी -सदस्य
महानिदेशक सीएसआईआर- सदस्य

डॉ. सौम्या स्वामीनाथन - सदस्य
महानिदेशक, आईसीएमआर

डॉ. त्रिलोचन मोहपात्रा- सदस्य
महानिदेशक, आईसीएआर, नई दिल्ली

प्रो. देवाग खक्खर-सदस्य
निदेशक- आईआईटी मुंबई

सुश्री रिया सिंहा, हनी बी नेटवर्क
नामित सदस्य, दिल्ली

प्रो. पंकज चंद्रा-सदस्य
अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद, विश्वविद्यालय और
पूर्व निदेशक-आईआईएम बेंगलूरू

श्री किशोर बियानी -सदस्य
फ्यूचर ग्रुप-मुंबई

श्री प्रद्युमन व्यास- सदस्य
निदेशक राष्ट्रीय डिजायन संस्थान, अहमदाबाद,

सचिव आयुष- पदेन सदस्य
नई दिल्ली

सचिव, एम. एस. एम. ई- पदेन सदस्य
नई दिल्ली

मुख्य सचिव गुजरात सरकार- पदेन सदस्य
गांधीनगर, गुजरात

वित्तीय सलाहकार- पदेन सदस्य
विज्ञान एव प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली

निदेशक/मुख्य नवप्रवर्तक अधिकारी- नामित सदस्य
अहमदाबाद

वित्त समिति

१. **डॉ. आर ए माशेलकर- अध्यक्ष**
नेशनल रिसर्च प्रोफेसर, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, अध्यक्ष - अंतरराष्ट्रीय शोध संधि, पुणे

२. **प्रो. अनिल गुप्ता - कार्यकारी उपाध्यक्ष रानप्र**
प्रो. भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद

३. **प्रो. पंकज चंद्रा-सदस्य**
अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद, विश्वविद्यालय और
पूर्व निदेशक-आईआईएम बेंगलूरू

४. **सुश्री इलाबेन भट्ट-सदस्य**
संस्थापक- सेवा स्वाश्रयी महिला सेवा संघ, अहमदाबाद

५. **वित्तीय सलाहकार- पदेन सदस्य**
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली

६. **निदेशक/मुख्य नवप्रवर्तक अधिकारी- नामित सदस्य**
अहमदाबाद

सांगठनिक रूप रेखा

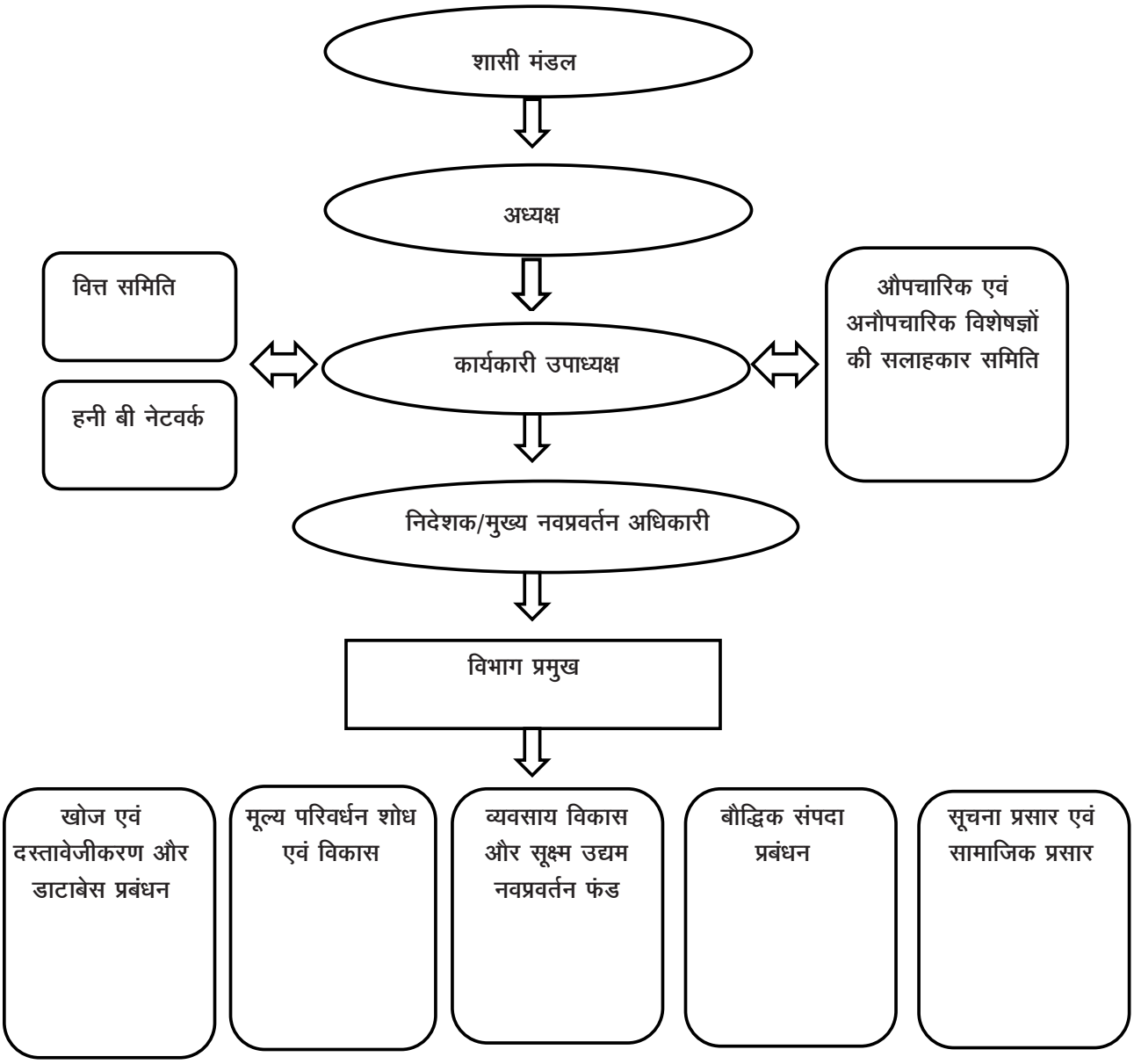
शासी मंडल
अध्यक्ष
वित्त समिति
हनी बी नेटवर्क
कार्यकारी उपाध्यक्ष
औपचारिक एवं अनौपचारिक विशेषज्ञों की सलाहकार समिति
निदेशक/मुख्य नवप्रवर्तन अधिकारी
विभाग प्रमुख
खोज एवं दस्तावेजीकरण और डाटाबेस प्रबंधन
मूल्य परिवर्धन शोध एवं विकास
व्यवसाय विकास और सूक्ष्म उद्यम नवप्रवर्तन फंड
बौद्धिक संपदा प्रबंधन
सूचना प्रसार एवं सामाजिक प्रसार

आगे कदम बढ़ाते हुए

भुवनेश्वर स्थित केआईआईटी विश्वविद्यालय में रानप्र-भारत, सेल का शुभारम्भ

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान-भारत, ने इस वर्ष भी खोज एवं दस्तावेजीकरण, मान्यकरण, मूल्य संर्वधन, बौद्धिक संपदा प्रबंधन और सामाजिक प्रसार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए नयी साझेदारियां स्थापित की और कई महत्वपूर्ण पहलों की शुरुआत की। देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम (भारत रत्न) का जाना हनी बी नेटवर्क, रानप्र-भारत और तृणमूल नवप्रवर्तकों के लिए एक अपूर्णनीय क्षति है। डॉ. कलाम ने साल २००२ में देश के तृणमूल नवप्रवर्तकों और नवप्रवर्तक समुदायों को सम्मानित करने की परम्परा शुरू की थी। बच्चों और युवाओं में समान रूप से रचनात्मकता को प्रोत्साहित करते थे और इग्नाइट पुरस्कार की शुरुआत (साल २००८) से साल २०१४ तक लगातार विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया। रानप्र ने डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम की याद में इग्नाइट का नाम बदलकर डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाइट अवार्ड्स रखा, ताकि सृजनशील बच्चों को उनसे प्रेरणा मिल सके। रानप्र-भारत और हनी बी नेटवर्क उनके जन्मदिवस (१५ अक्टूबर) को बच्चों की सृजनशीलता और नवप्रवर्तन दिवस के रूप में मनाता है।

रचनात्मकता की खोज में: शोधयात्रा

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान-भारत, ने सोसाइटी फॉर रिसर्च एंड एनिसिएटिव फॉर संस्टेबल टेक्नोलॉजी एंड इंस्टीट्यूटसन (सृष्टि) के द्वारा आयोजित ३५वीं और ३६वीं शोधयात्रा में सहयोग स्थापित किया। ३५वीं शोधयात्रा का आयोजन १३ से १८ मई २०१५ तक त्रिपुरा के ढलाई जिला के गंडचरा नारायणपुर से ललितपुर (हथिरमाथा) तक और ३६वीं शोधयात्रा १७ जनवरी से २२ जनवरी २०१६ तक अरूणांचल प्रदेश के सबसे निचले इलाके में जीरो से यतप तक आयोजित हुई। इस शोधयात्रा में देश और विदेश के विभिन्न क्षेत्रों और पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले लोग एक साथ चले और चार प्रकार के शिक्षकों (प्रकृति, एक दूसरे से, स्वतः और सामान्य लोगों से) से बहुत कुछ सीखा। यात्रा के दौरान शोधयात्रियों ने विभिन्न गांवों में बैठक, आइडिया और जैव विविधता प्रतियोगिताओं का आयोजन किया, साथ ही रचनात्मक कलाकारों, किसानों, विशिष्ट पारंपरिक ज्ञानधारकों, बुजुर्गों, किसानों, और नवप्रवर्तकों से मुलाकात की। रानप्र-भारत, ने ग्रामीणों के लिए प्रासंगिक व उपयोगी नवप्रवर्तनों का प्रदर्शन और हनी बी डाटा बेस में दर्ज जानकारियों का प्रदर्शन पोस्टर के जरिये किया।

त्रिपुरा के आदिवासी क्षेत्रों में यात्रा के दौरान शिक्षण का देश के उच्चतम शैक्षणिक विस्तार और प्राप्ति वाले त्रिपुरा के आदिवासी इलाके में यात्रा का अनुभव अनोखा था। केरला के मुकाबले कठिन भौगोलिक परिस्थिति के बावजूद त्रिपुरा ने साल २०१३ में उसे पीछे छोड़ दिया। शोधयात्रियों ने उनके पारंपरिक हैंडलूम, फसलों की किस्म, वाद्ययंत्र, संस्कृति का संरक्षण और आतिथ्य सेवा भाव को महसूस किया। हैंडलूम की बनी अपनी पारंपरिक वेशभूषा में यहां की महिलाएं चटक रंग का इस्तेमाल करती हैं, नई पीढ़ी ने पारम्परिक और नयी डिजाइन को एक साथ जोड़ने की कला सीख ली है। संस्कृति के लिहाज से समृद्ध चकमा (त्रिपुरा) के रियंग और अन्य समुदायों ने स्थानीय ज्ञान के प्रबंधन के जरिये अपनी पहचान बचाएं रखी है।

चकमा के पारंपरिक औषधिय ज्ञानधारक अनंत कुमार के पास मौजूद रजिस्टर में बीमारियों के लक्षण और उसके उपचार की जानकारी दर्ज थी। यात्रा के दौरान यात्रियों ने देखा की चकमा समुदाय के ज्यादातर पारंपरिक औषधिय ज्ञानधारकों ने अपने अनुभवों और मरीजों के सुझाव के आधार पर अपनी किताब तैयार की है। ज्यादातर शोधयात्री यहां पर ट्यूबर क्लोसिस के बाह्य आंतरिक उपचार के अनुभव के साथ आये थे, लेकिन यहां इसके निदान का अनुभव देखना अपने में अनोखा था। यह परंपरागत उपचार से अलग था शायद और वैज्ञानिक परीक्षण का एक मामला हो सकता है। शायद, एक नया किया जा सकता है। स्थानीय जैवविविधता पर आधारित इस परंपरागत औषधीय उपचार पर जल्द ध्यान देने की जरूरत है, क्यों कि स्थानीय युवा बिना किसी बाहरी पहल और समर्थन के इसे लंबे समय तक बचा नहीं बना सकते हैं।

चकमा आदिवासियों के साथ घूमते हुए शोधयात्रियों को रचनात्मकता और उसके विभिन्न रंगों का संरक्षण देखने का मौका मिला। यहां के ज्यादातर घरों में हाथ से बुने जाने वाले गहरे रंग वाले पारंपरिक हैंडलूम की सुंदर बनावट देखने को मिली। यहां की ज्यादातर महिलाएं स्वतः बुनी हुई पोशाक में थी। दूसरों को उपहार देने में वह इसका इस्तेमाल करती हैं। यहां की नई उम्र की महिलाएं पारंपरिक डिजाइन में आधुनिकता के लिहाज

त्रिपुरा में शोधयात्रा

बच्चों के बीच आइडिया प्रतियोगिता का आयोजन

से संशोधन कर रही हैं। यहां पर लोगों ने दो से छह महीने में पककर तैयार होने वाले फसलों की विभिन्न किस्मों जैसे धान, बैगन, कटहल, सब्जियां, कंद और अनाज के बीजों का संरक्षण किया हुआ था, ज्यादातार किसान इन्हीं की खेती करते हैं। यहां ज्यादातर घरों में शौचालय देखने को मिला, जबकि कुछ इलाकों में पानी के कमी से तत्काल निपटने की जरूरत दिखाई दी। ज्यादातर स्कूलों में बिजली, शौचालय और पानी की बेहतर व्यवस्था देखने को मिली। पूरे इलाके में सामान्यतः स्वच्छता की बेहतर व्यवस्था देखने को मिली। यहां के लोगों में शिक्षा की भूख है। शोधयात्रियों को इस आदिवासी इलाके के कई पढ़े-लिखे बुजुर्गों से मिलने का मौका मिला। पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिहाज से स्वस्थ, लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर इस इलाके में भविष्य में कई नई पहलों की जरूरत है। यहां के लोगों ने लोगों ने विभिन्न फलों जैसे कटहल, अनानास, केला के जरिये स्थानीय स्तर पर रोजगार पैदा किया है, जो की यहां के युवाओं में उद्यमशीलता को दर्शा रहा था।

युवाओं को ज्ञान पर आधारित वाहय उद्यमिता से जोड़कर स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग किया जा सकता है। देश और विदेश से आये शोधयात्रियों के लिए स्थानीय संस्कृति, संस्थाओं की उदारता, जैवविविधता और पर्यावरण संरक्षण, रंगीन हैंडलूम और स्वच्छ पर्यावरण का अनुभव प्रेरणादायी रहा। यहां पर लोगों में साइकिल चलित हल और पानी भरने के यंत्रों को देखने के लिए उत्सुकता थी।

फसलों के लिए खेत को तैयार करने के लिए लोग रासायनिक खरपतवार नाशक का उपयोग करते हैं। सरकार को इस क्षेत्र को रसायन मुक्त बनाने के लिए कई कदम उठाने की आवश्यकता है। यहां के नवप्रवर्तनों की अच्छी डिजाइन देखनी को मिली, लेकिन जल संरक्षण प्रणाली की कोई बेहतर नहीं थी। ज्यादा वर्षा वाले इस इलाके में छत के नीचे टीन चैनल या बांस के जरिए पानी कों टैंक में संरक्षित करने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

शोधयात्रा ने यात्रियों को पारंपरिक हर्बल उपचार प्रक्रिया के दस्तावेजीकरण के महत्ता को सिखाया। आइडिया प्रतियोगिता के दौरान त्रिपुरा के कम उम्र के बच्चे तुनाब जॉय ने दो बच्चों के एक साथ उपयोग में आने वाले छाते का आइडिया दिया, जिसके जरिए वह आसानी से एक साथ स्कूल जा सकें। कई स्थानीय समुदायों ने अपने पारंपरिक नृत्य की प्रस्तुति के जरिए शोधयात्रियों का मनोरंजन किया। भारी संख्या में टीवी डिश उपलब्ध होने की वजह से कुछ इलाकों में पारंपरिक नृत्य में आधुनिकता का समन्वय दिखा। प्रतियोगिता के जरिए व्यंजन की विविधता को देखने का मौका मिला, इसमें विभिन्न प्रकार के कंद मूल, सब्जियों, और खाद्य सामग्री को जंगल इकट्ठा किया गया। इसमें से कई खाद्य पदार्थ पहले से चलन में थे। चकमा के स्थानीय लोग आर्थिक रूप से भले ही कमजोर थे, लेकिन वह दिमागी रूप से काफी सम्पन्न थे। भौगोलिक परिस्थितियों के लिहाज से कठिन इस क्षेत्र में रह रहे लोगों में अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने की जिजीविषा और साहस दिखा। वह अपने परंपरा पर भी गर्व करते हैं।

चकमा इलाके के रहने वाले बच्चों में गर्मी के छुट्टियों के दौरान कुछ नया सीखने की लालसा थी। यह एक सहिष्णु समुदाय था, जो की अपने पुराने सामाजिक और राजनीतिक विवादों से बाहर आ चुके हैं। मुख्य रूप से खुद से प्रावधानीकरण करने से इस समाज को बाजार से जोड़ना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। यह उनकी भेद्यता को तो बढ़ाएगा, लेकिन यह घट भी सकता है। यह औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्रों के बीच बदले जाने और स्थान लेने वाले नियमों पर निर्भर करेगा। एक बांस प्रसंस्करण यंत्र, हाथ और पैर से चलने वाला पानी निकालने का यंत्र इस समुदाय को दिया गया। समुदाय के साथ लगातार जुड़कर विकास की संभावना को तलाश रहे हैं।

जैवविविधता प्रतियोगिता

३६वीं शोधयात्रा जीरो वैली में, अरुणाचल प्रदेश के निचले इलाके में स्थित जिला

३६वीं शोध यात्रा सृष्टि द्वारा रानप्र-भारत और नेचर केयर एंड आपदा प्रबंधन समिति के सहयोग से अरुणाचल प्रदेश के सबसे निचले इलाके में जिले में १७-२२ जनवरी २०१६ तक आयोजित की गई।

यह यात्रा जीरो से शुरू होकर यतप में समाप्त हुई। इस दौरान यात्रियों ने करीब ८० किलोमीटर क्षेत्र का भ्रमण किया, जिसमें करीब २३ गांव और १८ स्कूल शामिल थे। इस शोधयात्रा में देश और विदेश के विभिन्न पृष्ठभूमि के करीब ६५ लोगों ने भाग लिया, जिसमें किसान, नवप्रवर्तक, छात्र, प्रोफेशनल और शिक्षक शामिल थे। यहां लोग आपतानी और निशि समुदाय के लोगों से मिले।

यात्रियों ने आइडिया प्रतियोगिता, जैवविविधता प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया और रचनात्मक कलाकारों, पारंपरिक विशिष्ठ पारंपरिक ज्ञानधारकों, नवप्रवर्तकों से मुलाकात की। यहां वह ऐसे विभिन्न विशिष्ठ पारंपरिक ज्ञानधारकों से मिले, जो अपने साथ मानव और पशुओं से सम्बंधित उपचार के विभिन्न फार्मूले के साथ आए थे। यहां पर भारी संख्या में विचारों, पारंपरिक व्यंजनों, कृषि, मानव और पशु स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न हर्बल उपचारों का दस्तावेजीकरण किया गया। यात्रा के दौरान इलाके के लिहाज से महत्वपूर्ण नवप्रवर्तनों का प्रदर्शन किया गया और डाटाबेस की जानकारी को साझा किया गया। इसके साथ ही कृषि, पशु स्वास्थ्य से संबंधित और महत्वपूर्ण नवप्रवर्तनों की जानकारी भी स्थानीय लोगों के साथ साझा की गई।

३६वीं शोधयात्रा सीखने के लिहाज से सबसे महत्वपूर्ण रही। यात्रा के दौरान कृषि, मानव और पशु स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न पारम्परिक ज्ञान और कुछ रचनात्मक नवप्रवर्तनों का दस्तावेजीकरण किया गया। इलाके के पारंपरिक ज्ञान संरक्षण समिति का कार्य काफी बेहतरीन था, ऐसा शोधयात्रियों ने इससे पहले की यात्राओं में कभी नहीं देखा था। यह भी देखा गया कि स्थानीय समुदाय द्वारा सरंक्षित किये गये क्षेत्रों का लोग सम्मान करते हैं।

यहां के स्थानीय युवाओं की उत्कृष्टता, संवेदना और जोश को देखकर शोधयात्री पूरी तरह से चकित थे। यहां के बच्चों के

स्थानीय नवप्रवर्तकों का सम्मान

द्वारा दिए गए विचारों में कई को सम्मानित किया गया, जबकि कई अन्य उच्च स्तर पर सम्मान किए जाने के योग्य थे। शोधयात्री यहां पर ऐसे बच्चों से मिले, जिन्होंने न केवल इलाके के परेशानियों को रेखांकित किया था, बल्कि उसके निदान के लिए अपने विचारों का उपयोग करना चाहते थे। एक बच्चे को उसके अनूठे विचार को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन राशि उपलब्ध कराई गई, जिसे साल २०१६ के नवप्रवर्तन उत्सव के दौरान आयोजित बच्चों की कार्यशाला में भी भागीदारी का मौका दिया गया। यहां के स्कूलों में सुविधाओं को बढ़ाने का मौका था, इसके बावजूद शिक्षकों ने छिपी हुई प्रतिभाओं को खोजने में हमारी मदद की।

यहां पारंपरिक हर्बल ज्ञान में मूल्य संर्वधन के जरिए स्थानीय उत्पाद को बाजार में लाने का अवसर मौजूद था। हनी बी नेटवर्क, सृष्टि और रानप्र-भारत ने स्थानीय समुदायों को जुड़ने का प्रस्ताव दिया। ल्यागी भट द्वारा तैयार की गई बांस प्रसंस्करण मशीन और मीहिन पुशंग द्वारा तैयार धान की संशोधित मशीन ने शोधयात्रियों का ध्यान आकर्षित किया। धान प्रंसस्करण मशीन में बेल्ट पुल्ली सिस्टम की जगह पर एक्सल को दो यूनिवर्सल जोड़ के जरिए तैयार कर उसकी क्षमता में वृद्धि की गई थी। यहां पर यात्री हेज टाडो नान्या नाम की स्थानीय महिला किसान से मिले, जिन्होंने धान की करीब १५ किस्मों और अन्य फसलों का संरक्षण किया हुआ था।

यात्रियों ने स्थानीय समुदाय द्वारा जैविक खेती के लिए उठाए कदम, बांस के विभिन्न क्राफ्ट और प्रकृति संसाधनों को बचाने की सराहना की। यहां के लोगों की सांस्कृतिक रचनात्मकता, पारिस्थितिक विज्ञान संबंधी संवेदना, सामाजिक मित्रता उल्लेखनीय थी। यहां के बच्चों में कुपोषण की कमी न के बराबर दिखी और बच्चों द्वारा बुजुर्गों का सम्मान प्रेरणाप्रद था।

यात्रा की समाप्ति के बाद मुख्य सचिव श्री रमेश नेगी से मुलाकात कर अनुभवों को साझा किया गया। उन्होंने राज्य द्वारा नवप्रवर्तन के विकास में सहयोग देने, ईटानगर में नवप्रवर्तन प्रदर्शनी सह कार्यशाला (प्रस्तावित) के आयोजन के लिए अपनी सहमति दी।

शोध यात्रा के दौरान बांस से तैयार वस्तुओं की अदभुत कलाकारी देखने को मिली

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाइट पुरस्कार - २०१५, स्कूली विद्यार्थियों और अन्य बच्चों के लिए तकनीकी विचारों और नवप्रवर्तनों की राष्ट्रीय प्रतियोगिता

इग्नाइट पुरस्कार- २०१५ के विजेताओं को पुरस्कृत करते माननीय राष्ट्रपति, गुजरात की मुख्यमंत्री व गणमान्य

इग्नाइट पुरस्कार - २०१६- स्कूली विद्यार्थियों और अन्य बच्चों के लिए तकनीकी विचारों और नवप्रवर्तनों की राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए प्रविष्टीयाँ ३१ अगस्त २०१५ (इग्नाइट पुरस्कार २०१५ की समाप्ति के बाद) के बाद ली जाने लगी, जिसे ३१ अगस्त २०१६ तक स्वीकार किया जायेगा। अब तक करीब १० हजार से अधिक आवेदन प्राप्त हो चुके हैं।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाइट पुरस्कार २०१५ के दौरान देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से कुल २८,१०६ प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने ३० नवंबर २०१५ को अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान में विजेता ४१ बच्चों को पुरस्कृत किया। ३१ विचारों/ नवप्रवर्तनों के लिए चुने गए ४१ विजेताओं में १८ राज्यों के २७ जिलों के बच्चे

इग्नाइट प्रदर्शनी को देखते हुए माननीय राष्ट्रपति और माननीय राज्यपाल, गुजरात

शामिल थे।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाइट पुरस्कार बच्चों द्वारा दिए गए मूल प्रौद्योगिकी विचारों और नवप्रवर्तनों की एक राष्ट्रीय प्रतियोगिता है, जिसे बच्चों में सृजनात्मकता और मौलिकता का विकास करने के लिए हर वर्ष आयोजित किया जाता है।

प्रतियोगिता रानप्र द्वारा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई), हनी बी नेटवर्क, और दूसरे हिस्सेदारों के सहयोग से आयोजित की जाती है। कई अन्य राज्यों के शैक्षणिक बोर्डों जैसे हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, नागालैंड विद्यालय शिक्षा बोर्ड, हिमाचल प्रदेश उच्चशिक्षा निदेशालय, पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा परिषद, छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल, लोक शिक्षण संचालनालय मध्य प्रदेश, राजीव गाँधी शिक्षा मिशन, स्कूली शिक्षा विभाग- छत्तीसगढ़ सरकार, स्कूली शिक्षा परिषद-पुदुच्चेरी सरकार ने भी इस अभियान को सक्रिय रूप से समर्थित किया है।

अपने प्रथम गुजरात दौरे के दौरान माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाइट प्रतियोगिता २०१५ के विजेताओं को पुरस्कृत किया। उन्होंने बच्चों और आईआईएम के शिक्षकों को भारत में उच्च शिक्षा के विकास और देश में नवप्रवर्तन पारिस्थितिक तंत्र के पोषण विषय पर संबोधित किया। इस दौरान राज्यपाल श्री ओपी कोहली, मुख्यमंत्री श्रीमति आनंदी बेन पटेल, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख सचिव प्रो. श्री आशुतोष शर्मा, आईआईएम अहमदाबाद के निदेशक आशीष नंदा, रानप्र-भारत के अध्यक्ष आर. ए. माशेलकर मौजूद थे। कार्यक्रम का आयोजन रानप्र-भारत द्वारा आईआईएम अहमदाबाद के सहयोग से किया।

अपने स्वागत भाषण के दौरान डॉ. आर. ए. माशेलकर ने बदलते देश में समावेशी नवप्रवर्तन की जरूरत पर बात की। प्रो. आशुतोष शर्मा ने समावेशी नवप्रवर्तन को बढ़ावा देने के लिए

सिक्किम के मुख्यमंत्री इग्नाइट पुरस्कार विजेताओं के साथ

डीएसटी द्वारा उठाए गए कदमों का उल्लेख किया। उन्होंने दो नए पहलों (स्कूली बच्चों के लिए इंस्पायर योजना और आईटीआई के बच्च्चों में रचनात्मकता बढ़ाने की प्रतियोगिता, जिसमें रानप्र-भारत का महत्वपूर्ण भूमिका होगी) का उल्लेख किया।

अपने भाषण के दौरान माननीय राष्ट्रपति ने कहा कि रानप्र-भारत, और आईआईएम-अहमदाबाद, ने सामाजिक नवप्रवर्तन के भारतीय मॉडल को वैश्विक पहचान दिलाई है। उन्होंने राष्ट्रपति कार्यालय द्वारा किए गए विभिन्न पहलों, जैसे उच्च शिक्षा के लिए, नवप्रवर्तन और उद्यम के लिए, नवप्रवर्तन को बढ़ावा देने के लिए आयोजित की जाने वाली गतिविधिओं, नवप्रवर्तकों के रिहायशी कार्यक्रम के बारे में बताया। उन्होंने राष्ट्रपति भवन और रानप्र-भारत और हनी बी नेटवर्क के सहयोग द्वारा आयोजित किए जाने वाले नवप्रवर्तन उत्सव के बारे में उल्लेख किया, जिसका उद्देश्य तृणमूल नवप्रवर्तकों को विभिन्न क्षेत्रों के इनोवेटिव माइंडस से जोड़ा जा सके,माननीय राष्ट्रपति ने सबसे पहले रानप्र-भारत, द्वारा आयोजित किए गए प्रदर्शनी में विजेता बच्चों के प्रोटोटाइप को देखा और बच्चों से मिले।

प्रदर्शनी देखने के बाद उन्होंने कहा कि हमारे बच्चों ने अपने नवप्रवर्तन की भावना से सिद्ध कर दिया है कि वह किसी प्रकार की समस्या का निदान कर सकते हैं और नई संभावनाएं भी खोज सकते हैं। रचनात्मक युवाओं का नवप्रवर्तन संवेदना से सृजनशीलता का सबसे बेहतर उदाहरण है। श्रीमति आनंदी बेन पटेल ने कहा कि इग्नाइट पुरस्कार का नाम डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम आजाद के नाम पर करना सच्ची श्रद्धांजली है। विजेताओं में भारी संख्या में ग्रामीण इलाकों के बच्चे का होना यह सिद्ध करता है कि देश में युवा प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। उन्होंने सौर ऊर्जा से चलने वाली किसानी की मशीन और हाथगाड़ी (फोल्डेबल) का विशेष उल्लेख किया और कहा की यह किसानों के लिए उपयोगी साबित होगा। उन्होंने विजेता प्रतिभागियों के लिए को प्रोत्साहन पत्र भी लिखा।

धन्यवाद ज्ञापन देते हुए रानप्र-भारत, के कार्यकारी उपाध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार गुप्ता ने राष्ट्रपति व अन्य गणमान्य व्यक्तियों को धन्यवाद दिया और विजेता बच्चों को बधाई दी। बच्चों के दो नवप्रवर्तनों का गुजरात में उपयोग करने और प्रदर्शनी को सराहने के लिए श्री मति आनंदी बेन पटेल की सराहना की।

इग्नाइट पुरस्कार के विजेताओं और स्कूली बच्चों के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला (२८ से ३० नवंबर) का आयोजन सृष्टि के द्वारा रानप्र और यूनिसेफ के सहयोग से किया गया। इसका उद्देश्य था कि स्लम और ग्रामीण इलाके के बच्चों को समस्याओं की पहचान और निदान के लिए एक साथ लाया जाय।

द्वितीय नवप्रवर्तन उत्सव - २०१६, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली, १२ से १९ मार्च २०१६

राष्ट्रपति भवन में नवप्रवर्तन उत्सव- २०१६ का शुभारम्भ करते माननीय राष्ट्रपति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान मंत्री व गणमान्य

राष्ट्रपति भवन में नवप्रवर्तन उत्सव रचनात्मक समुदायों को सशक्त बनाने का एक ऐसा अनूठा प्रयास है, जैसा कि देश के इतिहास में पहले कभी नहीं किया गया। सप्ताह भर चलने वाले इस नवप्रवर्तन उत्सव के दूसरे संस्करण का शुभारंभ राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में १२ मार्च २०१६ को भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा किया गया और १९ मार्च २०१६ तक चला। इस कार्यक्रम का केंद्र भारत में रहने वाले आर्थिक रूप से गरीब, किंतु ज्ञान के धनी लोगों की अप्रयुक्त क्षमता की ओर देश का ध्यान आकृष्ट करना रहा। भारत शायद एकमात्र ऐसा देश है, जहां राष्ट्र के प्रमुख अपने सदन में इस तरह के उत्सव की मेजबानी करते हैं। इस आयोजन में राष्ट्रपति सचिवालय को भारत सरकार के विज्ञान एव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान (रानप्र) और सृष्टि (हनी बी नेटवर्क का एक भाग है) द्वारा सहायता की गयी।

हनी बी नेटवर्क की शुरुआत करीब २८ वर्ष पहले, छुपी हुई नवप्रवर्तक प्रतिभाओं को उजागर करने के लिए एक सामाजिक आंदोलन के रूप में की गयी थी और तभी से इसने भारत को रचनात्मक, सहानुभूतिशील व सहयोगी समाज बनाने में मदद करने वाले हमारे समाज के गुमनाम नायकों को मान्यता, सम्मान और पुरस्कार दिलाने की दिशा में एक छोटा पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

नवप्रवर्तन उत्सव २०१६ का शुभारंभ तृणमूल नवप्रवर्तनों की प्रदर्शनी से हुई। यहां राष्ट्रपति के साथ केंद्रीय विज्ञान-प्रौद्योगिकी व पृथ्वी विज्ञान मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, केंद्रीय अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री डॉ.नजमा ए हेपतुल्ला, राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डॉ. आर.ए. माशेलकर, विज्ञान-प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के सचिव प्रो.आशुतोष शर्मा और रानप्र के कार्यकारी उपाध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार गुप्ता भी उपस्थित रहे। उन्होंने नवप्रवर्तक उत्सव २०१५ के किताब का लोकार्पण भी किया। माननीय राष्ट्रपति ने सभी नवप्रवर्तकों से मुलाकात की और नवप्रवर्तनों को सराहा।

नोबेल पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी और अन्य विशिष्ट

राष्ट्रपति भवन में नवप्रवर्तन प्रदर्शनी

समावेशी नवप्रवर्तन पर गोलमेज सम्मेलन

माननीय राष्ट्रपति और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान मंत्री नवप्रवर्तन प्रदर्शनी को देखते हुए

चिंतक, नीति निर्माता, शिक्षाविद और देश-विदेश के उद्यमियों ने इसमें हिस्सा लिया।

नवप्रवर्तन उत्सव के पहले दिन राष्ट्रपति की सचिव श्रीमति ओमिता पॉल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि इस वर्ष कार्यक्रम को विस्तारित करते हुए रिहायशी कार्यक्रम के देशभर के नवप्रवर्तन विद्वानों, लेखकों और कलाकारों को भी शामिल किया गया है।

उन्होंने नवप्रवर्तन उत्सव की शुरुआत के बारे में चर्चा की और कहा की साल २०१३ में माननीय राष्ट्रपति ने देश के विभिन्न केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के कुलपति से मिले और देश में नवप्रवर्तन की दिशा में आगे बढ़ाने की जरूरत की बात साझा की। इसका अनुसरण विभिन्न भारतीय प्रौद्योगिक संस्थानों के निदेशकों, राष्ट्रीय प्रौद्योगिक संस्थानों, और केन्द्र और राज्य के विश्वविद्यालयों द्वारा किया गया। इस संबंध में डॉ. आर. ए. माशेलकर और प्रो. अनिल कुमार गुप्ता से विस्तार में चर्चा की जा चुकी है। इस विचार-विमर्श ने इस उत्सव की आधारशीला रखी और जमीनी स्तर के नवाचार की क्षमता और नए विचारों के जन्म पर एक नई बहस की शुरुआत हुई। इस वर्ष नवप्रवर्तन उत्सव में राष्ट्रीय और वैश्विक दोनों स्तर पर व्यापक भागीदारी दिखी। इस आयोजन में ६५ तृणमूल नवप्रवर्तकों ने भाग लिया, जिसमें किसानों द्वारा तैयार की फसलों की नई किस्मों, ऊर्जा के बचत वाले कई यंत्र, स्कूली बच्चों और आईटीआई विद्यार्थी शामिल थे। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से ८५ से अधिक नवप्रवर्तन क्लबों ने इसमें भाग लिया। नवप्रवर्तन में इस साल देश और विदेश के लोगों के अच्छी भागीदारी रही। नवप्रवर्तन उत्सव के दौरान सात नवप्रवर्तन विद्वान, दो कलाकार, दो लेखकों की दो सप्ताह तक राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्वारा मेजबानी की गयी। समावेशी नवप्रवर्तनों पर वैश्विक गोलमेज सम्मलेन (१२-१३ मार्च) आयोजन के तहत विभिन्न सत्रों (विज्ञान प्रौद्योगिकी और नवप्रवर्तन के लाभ, समावेशी पारिस्थितिकी तंत्र का विकास और समावेशी नवप्रवर्तन विकास के लिए शिक्षा) का आयोजन किया गया।

गोलमेज सम्मेलन के प्रतिभागियों ने समावेशी नवप्रवर्तन और तेजी से विकास की जरूरत पर चर्चा की। इसमें नवप्रवर्तन

चिकित्सा विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी पर गोलमेज सम्मेलन

को बढ़ावा देने के लिए तीन मुख्य चरण गति, स्केल, और टिकाऊपन तय किया गया। नीतियों में बदलाव में नवप्रवर्तन की जरूरत पर बल दिया गया। मुख्यतः वित्तिय समावेश, डीबीटी, प्रासंगिक सूचनाओं का संग्रहण, ई- कॉमर्स इत्यादि के मोबाइल फोन और बायोमेट्रिक नवप्रवर्तन के दो मुख्य बिन्दू है। दूसरे और तीसरे दर्जे के शहरों में स्टार्टअप प्रसार को बढ़ावा देने को चुनौती के रूप में चिन्हित किया गया। प्रतिभागियों ने इस बात पर भी चर्चा की कैसे अन्य क्षेत्रों के समावेशी नवप्रवर्तन विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़ सकता है। युवाओं (स्कूल - कॉलेज के छात्रों) के साथ शैक्षणिक संस्थानों को जोड़ने पर ध्यान केन्द्रित किया जाना महसूस किया गया। शोध संस्थाओं और विश्वविद्यालयों के परस्पर विचार नवप्रवर्तन आंदोलन के लिए मुख्य चालक साबित हो सकते हैं। प्रतिभागियों ने समावेशी नवप्रवर्तन पास्थितिकी तंत्र को आकार देने में शिक्षा की भूमिका पर चर्चा की और तकनीकी आंदोलन के साथ, पारस्थितिकी तंत्र में बदलाव लाने के लिए एक प्रकार की समाजिक नवप्रवर्तन आंदोलन की जरूरत महसूस की गई।

हनी बी नेटवर्क द्वारा बच्चों की रचनात्मकता पर कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें तय किया गया कि बच्चों को केवल उपदेश नहीं देना चाहिए, बल्कि उन्हें विचार और नवप्रवर्तन का सूत्र मानना चाहिए। प्रतिभागियों ने इस बात पर बल दिया की समस्याओं के नवीन निदान के लिए एक बदले हुए एटीटयूट की जरूरत होगी, जो कि जिज्ञासा और चिंतन से भरी होगी, जिसे बच्चों को शिक्षा के शुरुआती समय में इसे बिल्ड करने की जरूरत है।

तीनों गोलमेज सम्मेलनों का सारांश को भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के समक्ष प्रस्तुत किया गया। राष्ट्रपति ने अपने संबोधन में कहा कि हमारे सामाजिक आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र के भाग के रूप में नवप्रवर्तन की संस्कृति और उद्यमिता को सांस्थानिक बनाने की जरूरत है। नवप्रवर्तन और उद्यमिता को समावेशी बनाने के लिए उद्यमिता के विभिन्न प्रकार जैसे, नई तकनीकी फर्म और उत्पादक बिजनेस और ग्रामीण नवप्रवर्तक कंपनी पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। उन्होंने इस बात का भी उल्लेख किया कि इस प्रक्रिया को आनुपातिक रूप में बढ़ाना और आसपास इसका निर्माण करना होगा, आर्थिक व्यापार की टिकाऊ पद्धति, बी- कम आय वाले लोगों को इसमें शामिल करना होगा। नवप्रवर्तन और कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रकार के कौशल विकास मैकेनिजम संस्थाओं जैसे, आईटीआई को महत्वपूर्ण रोल इस सत्र में अदा करना होगा। इसके लिए जनसांख्यिकी विभाजन के उत्तोलन के जोर पर बल दिया गया।

नोबल विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी ने सामाजिक नवप्रवर्तन में बदलाव विषय सत्र में अपने संबोधन में कहा कि भारत नवप्रवर्तन की भूमि रही है और इसी ने विविधता के बावजूद समाज में भाई चारा के साथ रहने का रास्ता दिखाया है। पिछले कई दशकों से हमारा दिमाग एक निश्चित दायरे में सोच रहा था। अब यह महत्वपूर्ण है, कि हमने बिना किसी पूर्ण विराम के सवाल उठाना शुरू कर दिया है। श्री सत्यार्थी ने साथ ही सामाजिक नवप्रवर्तन के लिए थ्री डी मॉडल (बड़े के लिए स्वप्न, बेहतर के लिए स्वप्न, आंतरिक मजबूती की खोज, नए विचार, सीमा के बाहर सोचना और आसपास संभावनाओं का बढ़ावा और अब कर्म करो के प्रवृत्ति को अपनाना) का प्रस्ताव दिया।

गोलमेज सम्मेलन के दौरान सामाजिक नवप्रवर्तन की आने वाली बाधाओं (शक्ति का संकेद्रण, कार्य के लिए साइलो दृष्टिकोण, तकनीकी को शुरुआत में नहीं पकड़ना, आम लोगों में निर्णय क्षमता की कमी और सरकार और लोगों के बीच सूचनाओं की विषमता) को भी चिंहित किया गया। इस बात का सुझाव सामने आया कि हमें उपायों की ओर देखने की जगह ज्यादातर लोगों में समस्याओं के निदान की प्रवृत्ति को आगे बढ़ाना चाहिए। इसके लिए एक नए प्रकार की पीपीपी की जरूरत है, जो नवप्रवर्तन

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री नवप्रवर्तन प्रदर्शनी को देखते हुए

नवप्रवर्तन प्रदर्शनी को देखते हुए उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल

के विकास की प्रक्रिया में चिंतकों और सरकारी अधिकारियों को जोड़ सके। आखिर में एक ब्रेक-अवे सत्र का भी आयोजन किया गया, जिसमें गोलमेज सम्मेलन के प्रतिभागियों को चार छोटे-छोटे समूहों में बाटकर क्रमशः चार प्रमुख क्षेत्रों पर विचार विमर्श किया गया। इन क्षेत्रों में (१) नवप्रवर्तन स्टार्ट-अप के उद्भवन और गति वृद्धि मॉडल (२) नवप्रवर्तन और कौशल विकास (३) सार्वजनिक नीति व कार्यक्रमों में नवप्रवर्तन के लिए प्रोत्साहन और (४) व्यापक स्तर के बदलाव के लिए सामाजिक नवप्रवर्तन शामिल थे। दिन के आखिर में प्रतिभागी अहमदाबाद की नृत्यांगना अदिति मंगलदास और उनके साथियों की ४५ मिनट चले खूबसूरत कत्थक प्रस्तुति के साक्षी बने।

नवप्रवर्तनों के लिए सूक्ष्म स्तरीय पहलों और सार्वजनिक सेवा वितरण पर वैश्विक गोलमेज सम्मेलन का आयोजन १४ मार्च को किया गया, इसमें देश के भिन्न-भिन्न भागों से आए कई लोक सेवकों ने प्रतिभागियों के सामने अपने सेवा क्षेत्र में लाए नवप्रवर्तनों को प्रस्तुत किया और बताया कि कैसे इन नवप्रवर्तनों ने लोगों के जीवन में सुधार किया है।

यह चर्चा सार्वजनिक सेवा वितरण में नवप्रवर्तन, और इसमें बदलाव लाने के लिए विभिन्न शासन के विभिन्न स्तरों स्तरों पर बदलाव पर केन्द्रित थी। इस सत्र में देश के विभिन्न हिस्सों के सरपंचों, जिला, राज्य और केन्द्र के अधिकारियों, विभिन्न विभागों के प्रमुख, विद्वानों ने भाग लिया। इस दौरान यह सुझाव दिया गया कि हमें सीखने की एक प्रक्रिया की शुरुआत करन्ा चाहिए। इस गोलमेज सम्मेलन का सार यह रहा कि उन लोगों से कैसे मिला जाय, जिन्हें सेवा की जरूरत है, लेकिन आकांक्षा नहीं है। इस दौरान लोक सेवा प्रणाली के चार आयाम (तकनीक और संसाधन की सुगमता, बीमा, क्षैतिज और सीधा दोनों, योग्यता, कौशल का परिवर्तन और रवैया) तय किया गया। इस दौरान लोक सेवा के व्यक्तियों, महिला सरंपचों, और देश के विभिन्न हिस्सों से आये जिलाधिकारियों ने उनके राज्य के नवप्रवर्तन के बारे में जानकारी साझा की।

प्रतिभागियों ने सभी के लिए सार्वजनिक सेवा वितरण बनाने के लिए किये जाने वाले समावेशी कार्य को चिंहित किया। इस संदर्भ में नई चुन्ौतियां जैसे कैसे छूटे हुए लोगों को लोक सेवाओं के समावेशी कार्य में सम्मिलित किया जाय। कुछ समूह दूसरे से बेहतर सेवा दे रहे हैं, ऐसे में योजना के निवेश के स्वरूप, उसकी रचना पर ध्यान केन्द्रित किया जान्ा चाहिए। तीसरा क्षेत्र, संस्था की संरचन्ा और उसकी आधिकारिक संरचना पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है। इस दौरान एक पोस्टर प्रदर्शनी भी आयोजित की गई, जिसमें सरकारी सेवको द्वारा उठाए गए इनोवेटिव पहलों को दिखाया गया। इस दौरान नवोन्मेषी और रचनात्मक बच्चों के लिए सृष्टि द्वारा यूनिसेफ, हनी बी, रानप्र-भारत के सहयोग से कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यशाला में दिल्ली के आसपास स्थित मलिन बस्तियों की सामाजिक समस्याओं पर विशेषाधिकार प्राप्त व वंचित वर्ग के बच्चों के रचनात्मक सुझावों से समाधान की मांग की गई। इस कार्यशाला का आयोजन प्रदर्शनी स्थल पर ही किया गया था, ताकि बच्चों के समक्ष दूसरे अन्य बच्चों, प्रौद्योगिकी छात्रों और तृणमूल स्तर पर लोगों के नवप्रवर्तन प्रदर्शित हो। बच्चों के सामने नवप्रवर्तकों द्वारा वास्तविक जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए की गई अलग-अलग कोशिश भी प्रदर्शित हुईं। मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की मूलभूत समस्याओं को सुलझाने के लिए नवप्रवर्तन विकास के प्रति उनको प्रोत्साहित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल बच्चों की समस्याओं को प्रकट करने के लिए, वरन व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूप में समाधान खोजने हेतु बच्चों को सशक्त बनाने की दिशा में एक कार्यकारी ढांचा तैयार करना था।

इस दो दिवसीय कार्यशाला के दौरान, छात्रों ने समूह में कार्य किया और समस्याओं को रेखांकित किया। निदान के लिए अपने विचारों को दिया। यह बच्चे विभिन्न समस्याओं के लिए कई निदान दिए। पहले दिन प्रदर्शनी का दौरा और तृणमूल नवप्रवर्तकों के साथ बैठक के बाद क्षेत्रीय कार्य के बारे में संक्षिप्त जानकारी और मलिन बस्तियों का दौरा आयोजित किया गया। दूसरे दिन बच्चों ने प्रदर्शनी पंडाल के अंदर समूह में काम किया, जहाँ उन्होंने समस्याओं को रेखांकित करने के साथ-साथ इनको दूर करने के सुझाव भी प्रस्तुत किए।

नवप्रवर्तन प्रदर्शनी में किताब का लोकार्पण

गांधीवादी युवा प्रौद्योगिकी नवप्रवर्तन पुरस्कार समारोह

जीवाईटीआई अवार्ड्स

गांधीवादी युवा प्रौद्योगिकी नवप्रवर्तन पुरस्कार का आयोजन १३ मार्च, २०१६ को नवप्रवर्तन उत्सव के दौरान राष्ट्रपति भवन में सृष्टि द्वारा जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बीआइआरएसी) के सहयोग से किया गया। यह पुरस्कार देश में युवा संचालित नवप्रवर्तनों को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक पहल है। यह पुरस्कार अभियांत्रिकी, विज्ञान और अन्य व्यावहारिक प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में छात्र नवप्रवर्तन की भावना का द्योतक है।

पुरस्कार समारोह के दौरान समावेशी विकास, नवप्रवर्तक स्टार्टअप के लिए उद्भवन व नवप्रवर्तन और कौशल विकास पर गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें नवप्रवर्तन के समावेशी विकास, नवप्रवर्तन स्टार्टअप को तेज गति से आगे बढ़ाने वाले संरचना पर चर्चा की गई। प्रतिभागियों ने भारत में स्टार्टअप और नवप्रवर्तन परियोजओं के कमियों का उल्लेख भी किया। नवप्रवर्तन परियोजनाओं को बढ़ाने के लिए तीन चरण (इलाज, मेंटरशिप, उद्यम के वित्त पोषण के लिए ब्रोकर्स और एजेंट) तय किये गए, साथ ही अंतरराष्ट्रीय उदभवन सहयोग कार्यक्रम के अनुभवों को साझा किया गया।

रानप्र-भारत और जेकेयूएटीए, केन्या के साथ एमओयू

आगंतुक पुरस्कार समारोह- २०१६

आगंतुक पुरस्कार समारोह- २०१६ के अंतर्गत सबसे अच्छे विश्वविद्यालय की श्रेणी में तेजपुर विश्वविद्यालय को और शोध व नवप्रवर्तन श्रेणी में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के वैज्ञानिकों को पुरस्कृत किया गया। राष्ट्रपति द्वारा तेजपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मिहिर कांति चौधरी को सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय की श्रेणी में आगंतुक पुरस्कार से नवाजा गया। नवप्रवर्तन के लिए आगंतुक पुरस्कार २०१६, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. राकेश भटनागर को अनुवांशिक रूप से अभियंत्रित टीके और एंथ्रेक्स के विरुद्ध एक चिकित्सीय एंटीबॉडी विकसित करने के लिए दिया गया। शोध के लिए भी यह पुरस्कार जेएनयू के आणविक परजीवी विज्ञान समूह को आणविक परजीवी विज्ञान खासकर एंटी-मलेरिया, लीशमेनियासिस और एमोबायसिस के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य

के लिए दिया गया। ये पुरस्कार केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी, विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्तिथि में दिए गए।

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन क्लबों की बैठक

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन क्लबों के बैठक का आयोजन ५ मार्च को किया गया, जिसमें छह प्रमुख प्रतिनिधियों आईआईटी, कानपुर, केन्द्रीय विश्वविद्यालय जम्मू, आईआईटी मद्रास, आईआईटी त्रिचुरापल्ली, जामिया मिलिया इस्लामिया और आईआईटी दिल्ली के प्रतिनिधियों ने अपने क्लब व संस्थाओं में जारी गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी। इस दौरान तकनीकी उद्यम ब्रांड सिग्मा के सीईओ और को फाउंडर शरद शर्मा और जीओक्यूआईआई के सीईओ विशाल गोंडल ने अपनी प्रस्तुति दी।

शरद शर्मा ने नवप्रवर्तन के नींव के लिए जनतंत्रीकरण का सुझाव दिया, अगर यह हो गया तो सैकड़ों प्रयोग समस्याओं का निदान कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि तकनीकी में सामान्य समझ के इस्तेमाल के जरिए इसे उपयोगकर्ता के लिए साधारण और क्रियात्मक बनाया जा सकता है। इस दौरान अपनी बात रखते हुए श्री मति ओमिता पॉल ने कहा कि रचनात्मकता, नवप्रवर्तन, उद्यमिता और स्टार्टअप एक दूसरे के समुच्चय है और इसे जरूर बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने उल्लेख किया कि किस प्रकार से नवप्रवर्तन ने राष्ट्रपति भवन और यहां रहने वाले लोगों पर बड़ा प्रभाव डाला है।

नवप्रवर्तन को प्रेरित करने के लिए उसी दिन एक अन्य सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं, तकनीकी व्यापार उद्भवन से के देशभर के विभिन्न अधिकारी मौजूद थे। राष्ट्रीय नवप्रवर्तन क्लबों और प्रौद्योगिकी व्यवसाय को संरक्षण देने वालों (टीबीआइ) की उत्कृष्ट उपलब्धियों पर पोस्टर प्रस्तुत किया गया। इस दौरान एनआईसी के विशिष्टि उपलब्धियों पर एक पोस्टर प्रजेंटेशन भी दिया गया। प्रो. अनिल गुप्ता ने कहा कि समावेशी नवप्रवर्तन पर आगे बढ़ने से पहले हमें इसके अपवाद को भी समझना होगा। उन्होंने खाली स्थान को भरने पांच प्रकार (स्थानिक अपवाद, मौसम, सामाजिक और कौशल), निर्धारित किए।

चिकित्सा विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकियों में नवप्रवर्तनों पर गोलमेज सम्मेलन का आयोजन

चिकित्सा विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकियों में नवप्रवर्तनों पर एक गोलमेज सम्मेलन का आयोजन १६ मार्च को किया गया, जिसमें वैज्ञानिकों और तृणमूल नवप्रवर्तकों ने भाग लिया। इस दौरान दिखा की कैसे देश के तीक्ष्ण बुद्धि के लोग एक साथ चिकित्सा विज्ञान और जैवतकनीकी में नवप्रवर्तन को आगे बढ़ाने और इसे प्रभावशाली बनाने के लिए विचार मंथन कर रहे हैं। इस दौरान प्रतिभागियों ने स्वास्थ्य और जैवतकनीकी के बारे में अपने नवप्रवर्तनों के बारे में बताया।

सभी ने इस बात को दोहराया की कम आय वाले घरों की समस्याओं के लिए कम खर्च में बेहतर निदान की जरूरत है। यहां पर जमीनी स्तर के नवप्रवर्तकों को विश्वविद्यालओं के विभिन्न विभागों से जोड़ने और साथ ही प्रोटोटाइप, उत्पाद विकास, जांच की प्रक्रिया, दुबारा जांच, वैधता और उद्योगों के साथ सहयोग की जरूरत पर भी चर्चा की गई। देश की विभिन्न संस्थायें कम कीमत में मशीनें और जांच के लिए तैयार हैं, जिसमें कुछ संस्थाए आईसीएमआर की सहयोगी और कुछ जैवतकनीकी विभाग से जुड़ी हुई हैं। इस बात पर भी विचार-विमर्श किया गया कि चिकित्सा युक्ति का स्वास्थ्य मंत्रालय तक न पहुंच पाना दुखदायक है, जहां सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा में उसका उपयोग हो। इस विचार- विमर्श के दौरान चिकित्सीय यंत्रों के बाहर से आयात पर निर्भरता घटाने को लेकर भी चर्चा हुई।

बैंकिंग व वित्तीय क्षेत्रों के विशेषज्ञों के साथ विचार- विमर्श

वित्तीय नवप्रवर्तन के बारे में बैंकिंग व वित्तीय क्षेत्रों के विशेषज्ञों के साथ नीति और परामर्श पर १७ मार्च को बातचीत की गई और उसके बाद माननीय राष्ट्रपति के लिए गोलमेज विमर्श के प्रमुख सुझावों की प्रस्तुति दी गई। इस संवाद का संचालन एसआइडीबी के सीएमडी डॉ. क्षत्रपति शिवाजी द्वारा किया गया। यह मुख्य रूप से चार क्षेत्रों (१. तृणमूल नवप्रवर्तन २. उद्भवन प्रक्रिया को आगे किस प्रकार सशक्त किया जा सकता है ३. एंजेल वित्त पोषण ४. एंजेल और प्रारंभिक चरण हेतु केंद्रित वित्त पोषण के साथ-साथ अन्य वित्त पोषण) पर केंद्रित था।

पहले सत्र में नवप्रवर्तन के वित्त पोषण के विकल्पों पर चर्चा की गई और यह महसूस किया गया कि पारंपरिक वित्तीय पोषण छोटे क्षेत्रों के वित्तीय पोषण को पूरा नहीं कर पा रहें हैं। इसमें यह संस्तुति की गई की नवप्रवर्तनीय शोध और व्यवसायीकरण के लिए बैंकों में कम से कम एक प्रतिशत फंड की व्यवस्था होनी चाहिए। इस बात पर भी बल दिया गया कि बैंकों में नवप्रवर्तन पोषण के लिए अलग से एक शाखा खोली जानी चाहिए।

इसमें नवप्रवर्तन के व्यवसायीकरण में आने वाली परेशानियों (असंगठित क्षेत्रों में कम वित्तीय पोषण, ब्याज दर में असमानता,

उद्यमिता में आने वाली आधारभूत समस्या, यह तब है, जबकि उद्यमिता की सूची लगातार बढ़ रही है और नवप्रवर्तन की सूची घट रही है) को चिंहित किया गया। बड़ी कंपनियां कम क्षमता का प्रदर्शन करने वाले संपतियों पर कम ब्याज दे रही हैं। इस दौर में नक ल वाली उद्यमिता लगातार बढ़ रही है, जबकि यह सबसे खराब स्थित है और यह सही मायने में नवप्रवर्तन को प्रभावित कर रहा है। यहां पर इस बात पर भी बल दिया गया कि वित्तीय पोषण के साथ नियमों का अनुपालन भी जरूरी है। इस दौरान यह भी सलाह दी गई कॉर्पोरेट की सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) के तहत भी नवप्रवर्तन के पोषण का रास्ता खोलना चाहिए।

दूसरे सत्र में नवप्रवर्तन पारिस्थतिक तंत्र विकास को मजबूत करने को लेकर विचार-विमर्श किया गया और यह सुझाव दिया गया देश में नवप्रवर्तन से संबंधित नीतियों के निर्धारण के लिए राष्ट्रीय नवप्रवर्तन संवर्धन परिषद का गठन किया जाना चाहिए। अंत में सम्मेलन के विमर्शों से निकले प्रमुख सुझावों को राष्ट्रपति महोदय के सामने प्रस्तुत किया गया। इस सत्र में केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री श्री जयंत सिन्हा, एमएसएमई मंत्री कलराज मिश्र, केन्द्रीय रेल मंत्री सुरेश प्रभु, केन्द्रीय परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी और अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे, जिन्होंने सुविधा प्रदाता के रूप में सरकार की भूमिका (देश के विभिन्न स्थानों पर नवप्रवर्तन केन्द्र की स्थापना, विचारों के लिए अलग सोच की शुरुआत, ऐसे स्थानों की स्थापना जहां से नए विचार प्राप्त किया जा सके और रोजगार की संभावना को तलाशा जा सके) पर चर्चा की। राष्ट्रपति ने गोलमेज सम्मेलन के दौरान

एसआइडीबीआइ-स्टार्टअप-मित्र नामक ऑनलाइन मंच की शुरुआत की, जो कि नए उद्यमियों के लिए वित्त और शुरुआती चरण में होने वाली सभी आवश्यकताओं का एक ही स्थान पर समाधान करेगा।

१८ मार्च को स्वच्छ भारत से जुड़े उत्कृष्ट नवप्रवर्तनों की प्रदर्शनी और कृषक नवप्रवर्तकों व रानप्र के सामुदायिक कार्यशाला समन्वयकों की सीबीए, एमआइटी, यूएसए के निदेशक प्रो. नील गरशेनफेल्ड की सामुदायिक कार्यशाला आयोजित की गई। प्रो. नील गरशेनफेल्ड, निदेशक, सेंटर फॉर बिट्स एंड एटमस, एमआइटी, प्रो. अनिल कुमार गुप्ता (कार्यकारी उपाध्यक्ष, रानप्र-भारत), प्रो. गजेंद्र सिंह (पूर्व डीडीजी-अभियांत्रिकी, आसीएआर), प्रो. अमित सेठ (आईआईटी गांधी नगर), आइटीआई प्रशिक्षक, नजदीकी आईटीआई के प्रशिक्षकों, नजदीकी आईटीआई से प्रधानाचार्यों, फैब-लैब के लोगों और तृणमूल नवप्रवर्तकों ने इस कार्यशाला में हिस्सा लिया। प्रो. गरशेनफेल्ड ने डिजिटल निर्माण की आवश्यकताओं की व्याख्या की और दुनिया भर में स्थापित फैब लैबों पर अपने अनुभव साझा किए, कुछ रोचक उदाहरण भी पेश किए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आधुनिक मटेरियल का प्रयोग करके उत्पादों का वजन और कीमत कम की जा सकती है। तृणमूल नवप्रवर्तकों को आगे बढ़ाने के लिए स्थानीय सामुदायिक कार्यशाला के आयोजन और उसमें आने वाली परेशानियों और उसके निराकरण पर भी चर्चा की।

सप्ताह भर चले नवप्रवर्तन उत्सव २०१६ का समापन राष्ट्रपति भवन में १९ मार्च को हैकेथॉन शैली (अविराम तीव्र विकास) में वेब और मोबाइल अनुप्रयोग विकसित करने की १२ घंटे की कोडिंग प्रतियोगिता के साथ हुआ। जिन विषयों पर अनुप्रयोग विकसित हुए हैं उनमें (१) शिक्षकों द्वारा प्रत्येक कक्षा के बाद उपस्थिति लेना; (२) छात्रों के लिए परीक्षा का प्रमाणीकरण (३) सार्वजनिक स्मारकों में प्रवेश की निगरानी और (४) सार्वजनिक शौचालयों की जांच शामिल थे। राष्ट्रपति ने सभी श्रेणी के विजेताओं को कोड फॉर इंडिया के मोहनदास पाई और श्री कार्ल मेहता व अन्य विशिष्ट लोगों की उपस्थिति में सम्मानित किया। नवप्रवर्तन प्रदर्शनी १९ मार्च की शाम तक जारी रही। हैकेथन के साथ नवप्रवर्तन उत्सव २०१६ संपन्न हो गया।

खोज एवं दस्तावेजीकरण

राष्ट्रीय द्विवार्षिक प्रतियोगिता

एक अप्रैल २०१३ से ३१ मार्च २०१५ तक चली नौवीं राष्ट्रीय द्विवार्षिक प्रतियोगिता के तहत देशभर के विभिन्न भागों से ३३ हजार ५०० प्रविष्टियां प्राप्त हुई। दसवीं राष्ट्रीय द्विवार्षिक प्रतियोगिता की शुरुआत १ अप्रैल २०१५ से हुई, जिसके लिए आवेदन ३१ मार्च २०१७ तक स्वीकार किया जायेगा। तृणमूल नवाचार और विशिष्टि पारंपरिक ज्ञानधारकों से करीब तीन हजार प्रविष्टियां अब तक प्राप्त हो चुकी है।

नई साझेदारियां

खोज एवं दस्तावेजीकरण टीम ने देश के विभिन्न विज्ञान और तकनीकी परिषद, कृषि विज्ञान केन्द्रों से खोज व दस्तावेजीकरण के कार्य के लिए साझेदारियां स्थापित की। छत्तीसगढ़, हरियाणा, राजस्थान, दमन एव दीव, दादरा नगर हवेली, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, पंजाब, त्रिपुरा, अरूणांचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश, केन्द्र शासित प्रदेशों में नए लिंक खोजे गए और विभिन्न गतिविधियों के आयोजन की शुरुआत की गई।

बैठक/कार्यशाला

देश के विभिन्न हिस्सों जैसे रायपुर, दुर्ग, धमतरी (छत्तीसगढ़), विजग (आंध्र प्रदेश), अंगुल (ओडिसा), सुपौल (बिहार), इटारसी (मध्यप्रदेश), दमन और दीव, दादरा नगर हवेली, कुल्लू (हिमाचल प्रदेश), ईस्ट मिदनापुर, इलाहाबाद और प्रतापगढ़ और मदुरई (तमिलनाडू) के साथ पहले से जुड़े इलाकों में छात्रों, नवप्रवर्तकों, विशिष्ट पारंपरिक ज्ञानधारकों और ग्रामीणों के साथ कार्यशाला और बैठक आयोजित की गई।

नए जैव विविधता पर आधारित स्थानीय उपचार के दस्तावेजीकरण, जमीनी स्तर के नवाचारकों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए और विशिष्टि पारंपरिक ज्ञानधारकों से सीखने और उसे बढ़ावा देने के उद्देश्य से इन बैठकों का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रायर इन्फार्म कंसेंट (पीआईसी) की अवधारणा, और इसके जरूरत के बारे में चर्चा की गई, साथ ही हर्बल प्रैक्टिस के संदर्भ में पेटेंट के आवेदन के लिए नेशनल बायोडायवर्सिटी अथॉरिटी (एनबीए) की जरूरत के बारे में बताया गया।

गांधीवादी समावेशी नवप्रवर्तन चुनौती पुरस्कार २०१५ (जीका)

गांधीवादी समावेशी नवप्रवर्तन चुनौती पुरस्कार तीन नए और विकसित निदानों, धान लगाने की मशीन, लकड़ी से जलने वाली स्टोव, और चाय की पत्ते तोड़ने की मशीन के लिए दिया गया। इसमें देश भर से कुल ३०० प्रविष्टियां प्राप्त हुई थी।

मूल्य संवर्धन, शोध एवं विकास (वार्ड)

रानप्र-भारत के फैब्रिकेशन लैब को मजबूत बनाने और सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए अत्याधुनिक सीएनसी- वीएमसी मशीन, लेजर कटर, मैकेनिकल शियरिंग मशीन, पावर प्रेश, सीएनसी वायर कट इडीएम, और पाइप वेंडर के साथ मझले और बड़े स्तर की लेथ मशीनों आदि की खरीदारी प्रक्रिया पूरी की गई। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाइट पुरस्कार २०१५ में पुरस्कृत छात्रों के विचारों के प्रोटोटाइप रानप्र के अत्याधुनिक फैब लैब में विकसित किए गए। नवप्रवर्तक सपीर देबर्मा और क्लिशन देबर्मा देबर्मा (त्रिपुरा), दिपांकर दास (अंडमान निकोबार द्वीप समूह), सौरव डे (झारखंड), संतोष सिंह और खुशवंत राय (पंजाब), मो. रफीक अहंगर (जम्मू और कश्मीर) ने अपने नवप्रवर्तनों को रानप्र- भारत की लैब में तैयार किया।

इस अवधि के दौरान १२ प्रदेशों के २३ नवप्रवर्तकों के प्रोटोटाइप विकास में सहयोग पर करीब १० लाख खर्च किया गया। इसके साथ ही, ५ प्रदेशों के पांच संस्थानों को १३ नवप्रवर्तनों के मूल्य संवर्धन/मान्यकरण का कार्य सौंपा गया। अभियांत्रिकी टीम ने बौद्धिक संपदा प्रबंधन आवेदन के शुरुआती और पूर्ण आवेदन के लिए जरूरी तकनीकी जानकारी प्रारूप तैयार करने के विभिन्न चरणों में सहयोग किया। रानप्र ने तृणमूल नवप्रवर्तकों के द्वारा तैयार किए गए नवप्रवर्तनों के संशोधन और उसे उत्पाद में परिवर्तित करने के लिए एसटी माइक्रोइलेक्ट्रानिक्स से सहयोग स्थापित किया। इसके तहत शरीर को सही दिशा में रखने वाले कुर्सी का विकसित प्रोटोटाइप तैयार किया गया, जोहन डियर के सहयोग से ट्रैक्टर और घरेलू फर्नीचर में इसके प्रयोग की संभावना खोजी जा रही है।

औषधिय पद्धतियों के लिए शोध सलाह समिति की बैठक

शोध सलाहकार समिति और परियोजना समीक्षा समिति के बैठक का आयोजन ३१ अक्टूबर २०१५ को राष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद में की गई। इसमें कृषि, पशु चिकित्सा और मानव स्वास्थ्य से संबंधित शोध परियोजनाओं की समीक्षा और आगामी कार्यों की रूप रेखा रानप्र द्वारा तैयार की गई। प्रत्येक विभागों के कार्यों का वार्षिक विवरण नीचे दिया गया है।

कृषि

केरल के नवप्रवर्तक श्री शशिधरन, श्री शंकरा गुरु, कर्नाटका, और स्व. श्री राम लांजेवार, महाराष्ट्र द्वारा विकसित की गई धान की किस्म गोपिका, एनएमएस २ और श्रीराम का प्रायोगिक परीक्षण विवरण क्रमशः केरला कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय बेंगलूरू और वसंतराव नाइक कृषि विश्वविद्यालय प्रभनी से प्राप्त हुई। धान की किस्म गोपिका का अध्ययन उसके तीन समांतर किस्मों ज्योति, उमा और ऐश्वर्या के साथ यादृच्छिकृत भूखंड अभिकल्पना (रैंडोमाइज्ड ब्लॉक डिजाइन) के तहत किया गया, जिसमें गोपिका किस्म की पैदावार ३८.९ क्विंटल/प्रति हेक्टेयर पाई गई। आरबीडी के तहत ही एनएमएस २ किस्म का दो अन्य के सापेक्ष तीन स्थानों पर अध्ययन किया गया, जिसमें विशिष्ट मापदंड पर इसकी औसत पैदावार ४९.९२ क्विंटल/ हेक्टेयर पाई गई, जिसकी मानक त्रुटि माध्य $\pm$ १८१.८, क्रांतिक अंतर (p=०.०५) ५२६.५, और गुणांक में परिवर्तन ५.३१ प्रतिशत पाई गई। वसंतराव नाइक कृषि विश्वविद्यालय ने धान की किस्म श्री राम के खरीफ २०१६ के प्रयोग को दोबारा किया, क्यों कि यह प्रयोग कम बारिश के कारण असफल हो गयी थी। गाजर के चार किस्मों का जैव रसायन जांच सीएएलएफ लैब (राष्ट्रीय दुग्ध विकास बोर्ड) आणद में की गई। इसमें गाजर की किस्म मधुबन में बीटा कैरोटीन की मात्रा सबसे ज्यादा २७७.७ मिग्रा/ किग्रा, तथा इसके बाद लक्ष्मणगढ़ सेलेक्शन में १२४.५ मिग्रा/ किग्रा, दुर्गा ४ में ७२.०८ मिग्रा/ किग्रा, जेएमपी २१.८९

मिग्रा/किग्रा पाई गई, जबकि आयरन की सबसे ज्यादा मात्रा मधुबन किस्म में २७६.७ मिग्रा/ किग्रा, जेएमपी १६०.५४ मिग्रा/ किग्रा और दुर्गा किस्म ४ में ९५.८ मिग्रा/किग्रा मिली।

सेब की किस्म हरमन-९९ की आणविक स्तर पर वैज्ञानिक जांच मैदानी क्षेत्रों में फलोत्पादन वाले दो अन्य किस्मों अन्ना और डोरसेट गोल्डेन के सापेक्ष गुजरात राज्य जैव तकनीकी मिशन गांधीनगर, गुजरात के सहयोग से की गई। सेब की तीनों प्रजातियों की १४ डीएनए एसएसआर प्राइमर्स के द्वारा आणविक अध्ययन के दौरान पाया गया कि तीनों किस्में एक दूसरे से आणविक स्तर पर भिन्न थी और तीनों की वंशावली भी अलग थी।

किसानों की विकसित किस्मों का विभिन्न हिस्सों में परीक्षण

नवप्रवर्तकों किसानों द्वारा विकसित किए गए किस्म प्याज (रसीदपुरा), गोभी (अजीतगढ़ सेलेक्शन), इसबगोल (मारू इसाब), लोभिया (हाइकिंथ बीन) (जेके १), का परीक्षण क्रमशः एस.के.एन कृषि विश्वविद्यालय जयपुर, एस.के. राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर, राजस्थान, और सरदार कृषि नगर दांतीवाडा कृषि विश्वविद्यालय दांतीवाडा (गुजरात) में नवप्रवर्तकों के दावों के वैधता जांच के लिए परीक्षण किए जा रहे हैं।

तमिलनाडू कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर को एक मूल्यांकन परियोजना के लिए स्वीकृति दी गई। इसके तहत १. केजुरिना २. कोसेंड्रा और एंथूरियम (२) किसानों की विकसित किस्मों के क्षेत्र परीक्षण के लिए दिया गया, जिसके लिए बीज/रोपण सामग्री आदि को जमा करने की प्रक्रिया जून-जुलाई २०१६ में पूरी कर दी जाएगी ।

रानप्र-भारत, ने उष्णकटिबंधीय/उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के लिए सेब की किस्म (हरिमन ९९) के प्रसार के दूसरे चरण की शुरुआत की, जिसके तहत २५७२ पौधों का प्रसार देश के ११ प्रदेशों (पश्चिम बंगाल, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, त्रिपुरा, कर्नाटक, गुजरात, उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश) के चार शोध संस्थानों और २५० किसानों को उपलब्ध करवाये गए।

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत देश के विभिन्न स्थानों पर किसानों की किस्मों का परीक्षण (एआईसीआरपी)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (आईसीआर) की अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआईसीआरपी) में किसानों द्वारा विकसित की गई १२ किस्म का विभिन्न स्थानों पर परीक्षण के लिए धान और सरसों की किस्म के बीज का नमूना और शुल्क को एआईसीआरपी के संबधित नोडल एजेंसियों को जमा किया गया। काली मिर्च और इलायची की १० कृषकों के किस्मों के बीज का नमूना ९ एआईसीआरपी केन्द्रों पर परीक्षण के लिए जमा किया गया। यह परीक्षण भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कालीकट द्वारा निःशुल्क किया जायेगा।

सोयाबीन की किस्म पंडारीनाथ १ का परीक्षण मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों पर किसानों के खेतों में ११ यादृच्छिकृत भूखंड अभिकल्पना विधि के तहत आठ उपचार और ३ पुरावृत्ति के साथ किया गया। नवप्रवर्तक काशीनाथ लोखंडे द्वारा विकसित सोयाबीन की किस्म पंडारीनाथ १ का खरीफ सीजन २०१५-१६ में परीक्षण के दौरान वर्धा (महाराष्ट्र) और मुल्तई (मध्यप्रदेश) में दो अन्य किस्मों जेएस ३३५ के तुलना में बेहतर परिणाम मिले, जिसमें महाराष्ट्र में १२ क्विंटल/हेक्टयर और मध्यप्रदेश में १३ क्विंटल/हेक्टयेर पैदावार दर्ज की गई। परीक्षण के दौरान विभिन्न स्थानों पर पैदावार में कोई बदलाव देखने को नहीं मिला। किसानों से मिले डाटा और उनके सुझाव के मुताबिक पंडारीनाथ १ की पैदावार अन्य स्थानीय किस्मों से बेहतर दर्ज की गई।

सरसों की किस्म सितारा श्रृंगार का परीक्षण यादृच्छिकृत भू-खंड अभिकल्पना विधि के जरिए रबी २०१५-१६ में गुजरात के बनासकाठा जिले में ४६ किसानों के यहां किया गया, जिसमें ३.७३ क्विंटल/ हेक्टयेर से १०.१३ क्विंटल/हेक्टेयर पैदावार देखने को मिला। इस परीक्षण के दौरान ८५ प्रतिशत किसानों ने माना कि स्थानीय किस्मों से इसमें ज्यादा पैदावार हुई, जिसका डाटा तैयार कर लिया गया है और उसके विश्लेषण का कार्य जारी है।

सरसों की किस्म आरएलवी एक का परीक्षण रबी २०१५-१६ में गुजरात के बनासकाठा जिले में किया गया, जिसमें ६० प्रतिशत किसानों ने माना कि इसकी पैदावार अन्य स्थानीय किस्मों की तुलना में ज्यादा है। इसबगोल की मरू इसब किस्म का मूल्यांकन परीक्षण रबी सीजन २०१५-१६ में गुजरात के बनासकाठा जिले में किया गया। इस इलाके में खारा पानी की वजह से पैदावार में कमी पाई गई और यह किस्म बेहतर प्रदर्शन करने में असफल रही। इस परीक्षण में पैदावार के अध्ययन कार्य पूरा कर लिया गया, जबकि विश्लेषण का कार्य जारी है।

पाटन जिले के किसानों के खेत में गाजर की किस्म का परीक्षण में किया गया। यह परीक्षण किसान नवप्रवर्तकों के द्वारा विकसित किस्मों का दो अन्य स्थानीय तीन किस्मों के सापेक्ष किया गया। पांचों किस्मों की बुवाई यादृच्छिकृत भूखंड अभिकल्पना के तहत की गई, जिसमें लक्ष्मणगढ़ सेलेक्शन ने सबसे ज्यादा पैदावार

५२२.२ ± ६७.७७ क्विंटल/ हेक्टेयर (F= १२.५; df ४,२० p≤.०५) दर्ज की गई, जबकि अन्य किस्मों की पैदावार इसकी तुलना में कम पाई गई।

ग्रामभारती अनुसंधान फार्म पर परीक्षण कार्य

मिर्च में लीफ कर्ल रोग की रोकथाम के लिए छः हर्बल पद्धतियों का परीक्षण यादृच्छिकीकृत भूखंड अभिकल्पना परीक्षण के अंतर्गत किया गया। सबसे अधिक प्रभावी परिणाम छाछ से किये गए उपचार (७६.४ प्रतिशत), गौमूत्र से (४५.३ प्रतिशत) और इनके बाद बकरी के दूध और सृष्टि कृषक के उपचार में क्रमशः पाए गए। हिंगोटा (*Balanitesaegyptica*) तथा स्ट्रेप्टोमाइसिन (रसायन) के उपचार समरूप से प्रभावी पाए गए इस क्षेत्र परीक्षण में पाया गया कि छाछ और गौमूत्र का प्रयोग लीफ कर्ल रोग की रोकथाम के लिए अधिक प्रभावी था तथा साथ ही यह पद्धतिया पौधों में फूलों और फलों के विकास को भी बढ़ाता है।

भिंडी में कीटों के नियंत्रण के लिए हर्बल मिश्रणों का रासायनिक एवं अन्य प्रमाणित हर्बल दवाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इस प्रयोग के दौरान गणेश दत्ता का मिश्रण 40ml/L की दर से इस्तेमाल करने पर अन्य उपचारों और यहाँ तक कि रासायनिक उपचार (मानक त्रुटी ± ०.२५; क्रांतिक अंतर ०.७३ (P=0.०५); गुणांक में परिवर्तन १९.०४) से भी हरी मक्खियों की संख्यातुलनात्मक रूप से कम पाई गई। इसमें यह भी देखा गया कि गणेश दत्ता का मिश्रण १० ml/L ने फलों पर फल छेदक कीड़े का प्रभाव भी ५० प्रतिशत कम किया और फलों के खराब होने में २०.७ प्रतिशत कमी आंकी गई जो कि अन्य हर्बल मिश्रण (सृष्टि एजेडएस 10ml/L के अलावा) और रसायन उपचारों के पैमाने के बराबर ही है। वहीं अन्य उपचारों की तुलना में सृष्टि एजेडएसएस 10ml/L और रासायनिक उपचारों में अधिक पैदावार भी दर्ज की गई । नियंत्रण उपचार की तुलना में गणेश दत्ता का मिश्रण 40ml/L–के उपचार में २१.७५ प्रतिशत अधिक पैदावार रिकॉर्ड की गई।

गाजर की दो किस्मों (दुर्गा ४ और जेएमपी) का तुलनात्मक अध्ययन एक राष्ट्रीय तथा दो स्थानीय किस्मों के साथ ग्रामभारती अनुसंधान फार्म पर यादृच्छिकीकृत भूखंड अभिकल्पना के तहत पांच पुनरावृत्तीयों में किया गया। सबसे अधिक पैदावार दुर्गा- ४ किस्म में १५७.३ क्विंटल प्रति एकड़ मानकत्रुटी ± ६.०९ के साथ रिकार्ड की गई, जिसके बाद राष्ट्रीय चेक (national check) किस्म १४७.२ क्विंटल प्रति एकड़ मानकत्रुटी ± ४.९६ तथा स्थानीय चेक (local check) किस्म का परिणाम दर्ज किया गया। किसानों द्वारा विकसित गेहूं की १० किस्मों के तुलनात्मक मूल्यांकन हेतु शोध परीक्षण रबी २०१५-१६ के दौरान दो प्रचलित किस्मों (check varieties) HD-२९७६ और GJ- ४९६ के साथ यादृच्छिकीकृत भूखंड अभिकल्पनाके अन्तर्गत तीन पुनरावृत्तीयों में किया गया। प्रयोग के दौरान किस्मों की पैदावार में भिन्नता मानक त्रुटी १.९७ क्रांतिक अंतर (P= ०.०५) ५.९७, गुणांक में परिवर्तन (%) ९.५२के साथ पाई गई। सर्वाधिक पैदावार कर्णाटक की किस्म HZG ३० (४५.५ क्विंटल/हे.), उत्तर प्रदेश की किस्म कुदरत ७ (४१.७ क्विंटल/हे.), राजस्थान की किस्म BLK (४०.४ क्विंटल/हे.) तथा नियंत्रण किस्म (check variety) GJ ४९६ (३९.५ क्विंटल/हे.) में दर्ज की गई।

प्रयोग के दौरान पाया गया कि किसानों की किस्मों (HZG ३०, कुदरत-७, तथा BLK) की पैदावार नियंत्रण किस्म GJ ४९६ (check variety) से अधिक रही जबकि मध्य प्रदेश की किस्म राजयोग (३९.२ क्विंटल/हे.) और उत्तर प्रदेश की किस्म RK- ४ की पैदावार नियंत्रण किस्म HD-२९७६ से बेहतर दर्ज की गई। खरीफ २०१४ और २०१५ में किसानों द्वारा विकसित अरहर की तीन किस्मों (कुदरत-३, रिचा-२००० और रिचा-२००१) का तुलनात्मक मूल्यांकन दो स्थानीय किस्मों (चोटिला और GDP-१) के साथ यादृच्छिकीकृत भूखंड अभिकल्पनाके तहत किया गया। परीक्षण के दौरान पाया गया की किसानों द्वारा विकसित किस्मों का प्रदर्शन स्थानीय किस्मों की तुलना में बेहतर था। प्रयोग के दौरान कुदरत-३ का प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ रहा। इसकी अधिकतम पैदावार वर्ष २०१४ तथा २०१५ में ३१९०.१२ किलोग्राम/हे. और ३३.१७.२८ किलोग्राम/हे. मानक त्रुटी ± १२९.८४ एवं २३२.९०, क्रांतिक अंतर (P=०.०५) ४००.०८ (२०१४) तथा ७१७.६२ (२०१५), गुणांक में परिवर्तन प्रतिशत १०.८ (२०१४) एवं १८.२० (२०१५) के साथ क्रमशः दर्ज की गई।

वर्ष २०१४ और २०१५ में रिचा २००१ किस्म में सबसे अधिक फलिया (९४३.५५ ±५०.६३) तथा ९३५.७५ ± १०४.८९) क्रांतिक अंतर (P= ०.०५) १५६.०२, ३२३.१९ एवं गुणांक परिवर्तन (%) १८.८९ तथा ३१.२० के साथ क्रमशः रिकॉर्ड की गई। रिचा २००० तथा कुदरत-३ क्रमशः दुसरे और तीसरे नम्बर पर रही कपास और बैंगन में किट नियंत्रण के लिए १० हर्बल मिश्रणों का प्रयोग यादृच्छिकीकृत भूखंड अभिकल्पना के अंतर्गत तीन पुनरावृतियों के साथ किया गया। प्रयोग पूर्ण हो गया है, विश्लेषण कार्य जारी है।

पशु चिकित्सा

गर्भ नाल को गर्भ से बाहर निकालने के देशी उपचार का चिकित्सीय परीक्षण

पशुओं में गर्भ नाल को गर्भ से बाहर निकालने के देशी उपचार

का सफल चिकित्सीय परीक्षण, पशु प्रजनन विभाग, मादा रोग और प्रसूति प्रजनन, नागपुर पशु विज्ञान महाविद्यालय द्वारा किया गया। इस अध्ययन में गुजरात राज्य के करसन भाई गोविंदभाई पटेल और मूलचंदभाई लिंबाभाई परमार द्वारा बनाये गए हर्बल मिश्रण का ५ घंटे से कम समय में गर्भ नाल को बाहर निकालने में सफलता मिली। इसके अलावा तुलसीराम भाई भाब्दुभाई पवार और ठाकोर मकवाना पंचाभाई वीराभाई के बनाये हुए हर्बल मिश्रण से ९ घंटे के अंदर रिटेन प्लेसेंटा को बाहर करने में सफलता मिली। इस हर्बल मिश्रण का सफल अध्ययन इस बीमारी से ग्रसित पशुओं में किया। मानाभाई केसरभाई पटेल के पारम्परिक ज्ञान से निर्मित हर्बल मिश्रण का इन पशुओं के गर्भाशय पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

पशुओं में होने वाले अल्पकालिक बुखार पर पारम्परिक हर्बल औषधि का प्रभाव

डॉ. जी. सी. नेगी पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, पालमपुर (हिमाचल प्रदेश) में हर्बल मिश्रण का अल्पकालिक बुखार से ग्रसित पशुओं में चिकित्सीय और जैव रासायनिक परीक्षण किया गया। जानवरों की कमजोरी को अल्पकालिक बुखार की चिकित्सीय पहचान के तौर पर देखा जाता है। एस. पूनन, अमर सिंह और आर. पेरियासमी के पारम्परिक ज्ञान से निर्मित हर्बल मिश्रण का पशुओं की कमजोरी दूर करने में विशिष्ट प्रभाव पड़ा। शेख हिफाजत हुसैन, बिहार द्वारा दिए गए पारम्परिक ज्ञान से निर्मित हर्बल औषधिय मिश्रण से चौथे दिन पशुओं में कमजोरी दूर करने सफलता मिली, जबकि लक्ष्मणभाई पब्बाभाई भरवाद का हर्बल औषधिय मिश्रण चिकित्सीय लक्षण को दूर करने में असफल रहा। यह परीक्षण काँगड़ा जिला (हिमाचल प्रदेश) राज्य के अंतर्गत आने वाले १४ पशु चिकित्सालयों में किया गया।

पशुओं में होने वाले सूजन पर हर्बल पद्धति का प्रभाव

पारम्परिक ज्ञान से निर्मित औषधिय हर्बल मिश्रण का आफरा रोग के लिए चिकित्सीय परीक्षण, चिकित्सीय औषधि विभाग, एथिक्स और जूरीप्रूडेंस, नागपुर पशु चिकित्सा महाविद्यालय (नागपुर), महाराष्ट्र द्वारा किया गया। इस परीक्षण में देबेस्वर राभा (असम), सीतानाथ मुंडा (झारखण्ड), वंशबहादुर सिंह और रामस्वरूप यादव, बिहार द्वारा दिए गए पारम्परिक ज्ञान से निर्मित हर्बल मिश्रण एबडामिनल की परिधि को कम और रुमेन के बहाव को बढ़ाकर रोग को कम करते हैं।

तमिलनाडु के पी. वयापुरी की विधि का परीक्षण पशु औषधि चिकित्सा विभाग, नागपुर पशु चिकित्सा महाविद्यालय में किया गया। प्राकृतिक रूप से बीमारी से ग्रसित बकरी के रुमेन का बहाव ०.३३ व ०.२१ साइकिल प्रति मिनट्स पाया गया, जबकि दवा के देने के बाद यह २.५ घंटे मे १.६६ से ०.२१ साइकिल प्रति मिनट्स और ८ घंटे मे यह २.३३ ½ ०.२१ साइकिल प्रति मिनट्स पाया गया। इस चिकित्सीय परीक्षण के सकारात्मक परिणाम मिला।

पूरक आहार के रूप में मुर्गीपालन संबंधी दवाओं का प्रभाव

पश्चिम बंगाल से पांच पारम्परिक हर्बल मिश्रण का परीक्षण पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय, हसन (कर्नाटक) में किया गया। श्री मति तप्शी बेरा द्वारा दिए गए पारम्परिक ज्ञान से निर्मित हर्बल मिश्रण का अच्छा प्रभाव पाया गया।

हर्बल मिश्रण का लैक्टनल एनेस्ट्रस पर प्रभाव का परीक्षण

पारम्परिक ज्ञान से निर्मित तीन हर्बल मिश्रण का लैक्टनल एनेस्ट्रस पर प्रभाव का परीक्षण प्रसूति प्रजनन विभाग, नागपुर पशु विज्ञान महाविद्यालय में किया गया। गुजरात की श्री मति लाडूबेन सोमाभाई परमार, भूराभाई जेठाभाई रबारी और जगदीशभाई गलबाभाई परमार की विधियां फोलिकुलर सेल्स का उत्पादन बढ़ाती हैं,जो की औषधि का सफल प्रयोग दर्शाता है।

थानेली रोग पर हर्बल औषधि के प्रभाव का परीक्षण

मध्य प्रदेश राज्य के, सिहोर जिले के जमोनिया गांव की श्री मति ओमावती राठौर और श्री मति गीता राठौर के पारम्परिक ज्ञान से निर्मित हर्बल औषधि का थनेला बीमारी की सुब्क्लिनिकल अवस्था में प्रभाव का अध्ययन फार्म में किया गया। इस प्रक्रिया में ४५ खाने (२६.६६ प्रतिशत) का निरीक्षण किया, जिसमें १२ खाने में थनेला बीमारी के सुब क्लिनिकल लक्षण पाए गए। पारम्परिक ज्ञान से निर्मित हर्बल औषधि का इस बीमारी से ग्रसित पशुओं में निरीक्षण किया गया और इसका प्रभाव कैलिरोर्निया थनेला परीक्षण मानक विधि द्वारा किया गया। इस प्रयोगविधि से प्राप्त परिणाम का सांख्यिकी मूल्यांकन समान्तर विधि से किया गया। t०.०५ ११ दिनों से प्राप्त परिणाम २.६१ है, जो तालिका से प्राप्त द्य०.०५ ११ दिनों के परिणाम २.२० से कहीं अधिक थी, जो की औषधि का सफल प्रयोग दर्शाता है।

पशु चिकित्सा संबंधी देशी उपचार के मूल्यांकन के लिए सांस्थानिक समझौते

पशु चिकित्सा संबंधी आठ परियोजनाओं को डॉ. जीसी नेगी कॉलेज ऑफ वेटनरी एंड एनिमल साइंस पालमपुर (हिमाचल प्रदेश), नागपुर वेटनरी कॉलेज नागपुर (महाराष्ट्र), वेटनरी

विश्वविद्यालय ट्रेनिंग एंड रिसर्च सेंटर सलेम (तमिलनाडू), वेटनरी कॉलेज हसन कर्नाटका, और बांबे पशु विज्ञान चिकित्सा महाविद्यालय महाराष्ट्र ने कार्य पूर्ण किया गया। जबकि पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान मथुरा उत्तर प्रदेश ने परियोजना को आगे बढ़ाने की सिफारिश की। पशु चिकित्सा संबंधी पांच नए प्रोजेक्ट (पशु चिकित्सा महाविद्यालय सिमोगा, पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय प्रोडत्तूर (आंध्रप्रदेश), कॉलेज वेटेनरी एंड एनिमल साइंस उदगिर महाराष्ट्र, फैकेल्टी ऑफ वेटनरी साइंस एंड एनिमल हसबैंडरी जम्मू और कॉलेज ऑफ वेटनरी साइंस एंड एनिमल हसबैंडरी भुवनेश्वर (ओड़ीसा)) को ३१ अक्टूबर २०१५ को परियोजना समीक्षा समिति के सामने प्रस्तुत किया गया।

परियोजना समीक्षा समिति द्वारा मूल्यवर्द्धित पद्धतियों का मूल्यांकन

पशुचिकित्सा संबंधी १५ विधियों को परियोजना समीक्षा समिति (आरएसी) के सामने प्रस्तुत किया गया और उनका मूल्यांकन किया गया। यह विशिष्ट औषधियां सूजन, पशुओं में अल्पकालिक बुखार, एनेस्टस, अपरा का देशी उपचार और किलनी के प्रति काफी प्रभावशाली मिली। करसन भाई गोविंद भाई के एक्सप्लसन ऑफ प्लेसेंटा की विधि के लिए गुजरात के बनासकाठा जिले में डाडगाम में परस्पर विचार विमर्श किया गया। पशुओं में बुखार के लिए मान्य विधि के नवप्रवर्तक शेख हिफाजत हुसैन पूर्वी चंपारण (बिहार) से मुलाकात की गई।

ओडिसा और पश्चिम बंगाल में पारंपरिक ज्ञानधारकों के बैठक का आयोजन

ओडिसा (अंगुल, अंगुल जिला) और पश्चिम बंगाल (बाजकुल, पूर्वा मेदनीपुर जिला) के विशिष्ट पारंपरिक ज्ञानधारकों के बीच बैठक का आयोजन किया गया। ओडिसा के हीलर्स की बैठक का आयोजन इनोवेशन क्लब, ओडिसा के सहयोग से किया गया।

उत्तराखंड के संस्थानों के साथ संधि की स्थापना

देहरादून के तुयिनी तालुका के सुखेड़ गांव में राज्य पशुपालन विभाग के सहयोग से एक प्रदर्शन का आयोजन किया गया। यहां पर किसानों ने औषधिय सम्मिश्रण का उपयोग अपने पशुओं पर किया और उन्होंने यह महसूस किया कि कम कीमत वाली स्थानीय स्तर पर दवा काफी उपयोगी हो सकती है। गुजरात के साबरकाठा जिले के नवप्रवर्तक श्री कठाविया कुमाजी बरा जी द्वारा तैयार किए गए इस विधि का अगले दिन काफी सकारात्मक परिणाम देखने को मिला, जिसकी किसानों और पशुपालन विभाग के अधिकारियों ने सराहना की। रानप्र ने उत्तराखंड पशुपालन विभाग के निदेशक साथ इस विधि की जानकारी को साझा करने का इरादा जाहिर किया। पहाड़ी क्षेत्रों में आसानी से मिलने वाले पौधे के जरिए बनने वाले इस सम्मिश्रण का उपयोग किया जा सकता है। इस प्रयास से किसानों के खर्च को कम किया जा सकता है।

मानव स्वास्थ्य

इस अवधि के दौरान मानव स्वास्थ्य के संदर्भ में भारी संख्या में प्रविष्टियां प्राप्त हुई, जिनका वैधता परीक्षण देश के विभिन्न संस्थानों में किया गया। पथरी रोग के उपचार से संबंधित चार हर्बल प्रैक्टिस को विवो परिस्थितियों में शोध के लिए भेजा गया, जिनमें से दो विधिओं में महत्वपूर्ण एंटी यूरोलीथीएटिक गतिविधि प्राप्त हुई। दो मिर्गी रोकने वाली औषधि की जांच अधिकतम विद्युत् आक्षेपी चूहों पर की गई। दोनों-विधियों में मिर्गी के उपचार के बेहतर परिणाम सामने आए।

मोटापा कम करने के तीन हर्बल उपचारों की विधि को वैधता की जांच के लिए भेजा गया, जिनमें से दो में कुल सीरम कोलेस्ट्रॉल, लो डेसिटी लाइपो प्रोटीन और टाइग्लिसराइड के स्तर को कम किया। जबकि इन उपचारों का सीरम के हाइ-डेंसिटी लाइपोप्रोटीन के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तीसरे उपचार में सीरम के कुल रक्त-वसा (कोलेस्ट्रॉल) और उच्च घनत्व लेपोप्रोटीन (हाइ-डेंसिटी लाइपोप्रोटीन) के ऊपर कोई महत्वूर्ण परिणाम देखने को नहीं मिला, जबकि कम घनत्व लेपोप्रोटीन (लो-डेंसिटी लाइपोप्रोटीन) और ट्राईइग्लिसराइड में यह कमी लाता है। डंकिन-हर्टली गिनी पिक्स पर प्रति अस्थमा गतिविधिओं के लिए पांच पद्धतियों की जांच तुलनात्मक रूप में की गई और यह पाया गया कि यह पद्धतियां हिस्टामिन और ल्यूकोसाइट काउंट के स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। ग्रासरूट पद्धतियों पर आधारित हर्बल समिश्रण की वैधता परीक्षण मसूढ़ों के सूजन और प्लेक के लिए वैधता परीक्षण के लिए मानव पर किया गया। सम्मिश्रण के इन वीटो परीक्षण के दौरान जांच में कई जीवाणुओं (स्टेप्टोकोकस म्यूटेंट एमटीसीसी ४९७, स्टेप्टोकोकस गोर्डोनी एमटीसीसी २६९५, निसेरिया म्यूकोसा एमटीसीसी १७७२, मोरेक्सला स्पी. एमटीसीसी ३६०५ और ब्रेवीबैक्टिरियम लिक्विफेसियंस एमटीसीसी २५) में सफल परिणाम मिला और चिकित्सीय परीक्षण में महत्वपूर्ण परिणाम मिला।

रानप्र-भारत और आईसीएमआर की सहभागिता

रानप्र और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के सहयोग से ८०० हर्बल पद्धतियों के चयन प्रक्रिया को

आगे बढ़ाया गया और ८० अग्रणी विधिओं का चयन उसकी वैधता के लिए हुआ। इसमें ११ मुख्य बीमारियों जैसे, दर्द और सूजन, अर्थराइटिस, शुगर, जिगर विकार, कैंसर, मोटापा, ऑस्टियोपोरोसिस (हड्डियों का कमजोर होना), मलेरिया, टीबी, उच्च रक्तचाप, हृदय संबंधी विकार, व्यसन मुक्ति, डायरिया, पेचिश आदि पर ज्यादा बल दिया गया।

आईसीएमआर और रानप्र-भारत कार्यदल द्वारा चयनित पद्धतियों की वैधता के लिए रानप्र कार्यदल ने देश के विभिन्न अनुबंध शोध संस्थानों (सीआरओ) का दौरा किया। इसमें से सात संस्थाओं ने इस प्रक्रिया के लिए अपना प्रस्ताव जमा किया। इसे विशेषज्ञों की समिति ने कीमत, समय सीमा और टिकाउपन के लिहाज से जांचा-परखा। विशेषज्ञ समिति ने यह सलाह दिया कि हमें परियोजना को सौंपने के पहले देश के विभिन्न सीआरओ का दौरा करके उनकी विशेषज्ञता और संरचना की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए, साथ ही परीक्षण के लिए तय शुल्क को कम करने के लिए सहमत किया जाय।

कार्यदल द्वारा विशेषज्ञों और समिति के सदस्यों के साथ इन सभी केंद्रो का दौरा किया और उनसे इस संबंध में चर्चा की गई। इसके साथ ही मानव स्वास्थ्य संबंधी रोगों के अध्ययन के लिए विशेषज्ञों की समिति द्वारा मापदंड और मसविदा तय किया गया। रानप्र- भारत समूह ने नवप्रवर्तकों की पूर्ण जानकारी दर्ज करने, पौधे और पद्धति के पूर्ण दस्तावेजीकरण के लिए दौरा किया। समूह के सदस्यों ने भारी संख्या में हर्बल पद्धति ज्ञानधारकों के मरीजों से भी मुलाकात की और उनके अनुभवों को दर्ज किया। इस अवधि के दौरान आईसीएमआर ने आईसीएमआर-रानप्र कार्यबल परियोजना का दूसरा चरण की राशि जारी की।

रानप्र-भारत, और वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सीआईएसआर) की सहभागिता

रानप्र-भारत ने वैज्ञानिक तथा सीएसआईआर-सीडीआरआई के साथ दो हर्बल पद्धतियों के उच्च रक्त चाप प्रतिरोधी गुणों की विद्युत आक्षेपी चूहों के ऊपर जांच और अध्ययन के लिए तीन और १६ प्रमुख पद्धति के मलेरिया प्रतिरोधी गुणों के अध्ययन के लिए अनुबंध किया गया। मलेरिया और उच्च रक्त चाप के उपचार पद्धतियों के वैधता परीक्षण का कार्य शुरू कर दिया गया। सीएसआईआर-सीआईएमएपी के साथ तालमेल को मजबूत करने और हर्बल ग्रासरूट पद्धतियों और पौधों के किस्म के मान्यकरण के लिए रानप्र-भारत कार्यदल द्वारा दौरा किया गया। रानप्र ने तृणमूल नवप्रवर्तकों द्वारा विकसित की गई गाजर की किस्म के जैव रासायनिक मार्कर के मूल्यांकन मापदंड के लिए जानकारी साझा की। रानप्र ने सीआईएमएपी के शोधकर्ताओं को डाटा बेस से प्रमुख पद्धतियों को खोजने का कार्य सौपा गया। इस बात का भी उल्लेख किया जाना जरूरी है कि शोध वैज्ञानिक इसका में प्रकाशन पेटेंट के आवेदन के बाद ही कर सकते हैं, जबकि ठोस आधार के मामले में आईपीआर शोधकर्ताओं के साथ जानकारी को साझा कर सकता है, लेकिन मामले के ऊपर निर्भर करेगा।

रानप्र-भारत और सृष्टि की सहभागिता

चाय के छह सूत्रण के भौतिक विश्लेषण (आद्रता, कुल राख, अघुलनशील एसिड, पानी में घुलनशील राख, राख की क्षारीयता, कच्चे रेशे, वाटर एक्सट्रेक्ट, अशुद्धता, रंग और नमूना उपस्थिति) का विश्लेषण किया गया। इसके साथ कीटो को रोकने के लिए हर्बल कीटनाशक का फील्ड वैधता परीक्षण किया गया। इस सभी पद्धतियों का दस्तावेजीकरण सिक्किम में ३४वीं शोधयात्रा के दौरान किया गया था। सरसों के खेत में रस चूसने वाले कीट ो को रोकने के लिए किए गए सफल परिणाम देखने को मिला। पांच कृषि पद्धतियों का खेत में परीक्षण किया गया। हर्बल कीट नाशक विधि का प्रदर्शन राजकोट के जसडान में एक बैठक के दौरान किया गया। व्यंजन के २० प्रकार का दस्तावेजीकरण उनके पौष्टिकता, कार्बोहाइड्रेट, एसकोर्बिक एसिड, आयरन, पौटैशियम और बोरान की उपलब्धता के आधार पर किया गया। फलों के पकने की पांच पद्धतियों से २१ जीवाणु निकाले गए और उनका फल पकने की अवधि में उनके प्रभाव का अध्ययन किया गया। यह देखा गया कि जब जीवाणु अलग-अलग थे तो फल पकने की अवधि कम थी। मानव और पशुओं के लिए जीवाणु नाशक मिश्रण विकसित किए गए। पशुओं के उपचार के लिए तैयार किए गए हर्बल मिश्रणों को इंडियन हर्बस व राकेशफर्मास्ट ूटिकल और मानव के उपचार के लिए तैयार किए गए हर्बल मिश्रण को बेंगलूरू स्थित ३ एम कंपनी को
मान्यकरण के लिए दिए गए। इसके अलावा ११ पौधों को प्रसंस्कृत किया गया और उसकी वैधता जांच के लिए देश के विभिन्न संस्थानों को भेजा गया।

व्यवसाय विकास और सूक्ष्म उद्यम अभिनव कोष

सूक्ष्म उद्यम अभिनव कोष (एमवीआईएफ) के दूसरे चरण की शुरुआत

रानप्र-भारत और सिडबी के द्वारा लघु उद्यम नवप्रवर्तन निधि के दूसरे चरण की शुरुआत के लिए १५ जनवरी को २०१६ को समझौता किया गया। इसका पहला चरण साल २००३ में शुरू किया गया था, जिसके तहत १९३ परियोजनाओं को राशि

स्वीकृति की गई थी और इसमें से करीब ७५ प्रतिशत राशि की वापसी हुई। यह सिद्ध करता है कि रानप्र और हनीबी नेट वर्क द्वारा द्वारा नवप्रवर्तकों को बेहतर सलाह मुहैया कराई गई। एमवीआईएफ का दूसरा चरण की राशि नवप्रवर्तकों के उद्यमिता को बढ़ावा देने में सहायक होगा। नवप्रवर्तन तकनीकी को यह तेजी से आगे बढ़ाएगा और उत्पाद को बाजार में लाने में मदद प्रदान करेगा।

तकनीकी हस्तांतरण और आगे प्रगति

अखरोट तोड़ने वाली मशीन और वालनट पीलर के तकनीकी का व्यवसायिक हस्तांतरण मि. रफीक इंजीनियरिंग, अनंतनाग को दिया गया। नागपुर स्थित कबीरा साल्यूशन को एडजस्टेबल वॉकर की तकनीकी का हस्तातंरण रानप्र-भारत द्वारा किया गया और इसके पहले मालगोदाम की स्थापना सफलतापूर्वक २० सितंबर २०१५ को की गई। रानप्र-भारत का व्यवसाय विकास समूह लगातार उन्हें बिजनेस संबंधी और प्रदर्शन सुझाव सुझाव दे रही है।

रानप्र-भारत, अहमदाबाद स्थिति इंडिया इनोवेटिक्स प्राइवेट लिमिटेड को नवप्रवर्तक मुश्ताक अहमद डार के पोल प्रो तकनीकी हस्तांतरित की और उसे व्यापार में सहयोग उपलब्ध करा रही है। रानप्र तकनीकी का प्रसार देश के विभिन्न बिजली बोर्ड को पत्र के जरिए कर रहा है।

मेला, प्रदर्शनी और बैठक में सहभागिता

रानप्र-भारत ने भारत-अफ्रीका फोरम समिट २०१५ में सहभागिता की, जहां जिम्बाबवे के माननीय राष्ट्रपति श्री मान राबर्ट मुगांबे ने तृणमूल नवप्रवर्तनों में खासतौर पर गन्ने की आंख निकालने का यंत्र को लेकर अपनी दिलचस्पी दिखाई। इस मामले में जिम्बावे के राजदूत श्री मान मैक्सवेल रागा के साथ एक बैठक में की गई और उन्हें इस मशीन की एक यूनिट दी गई। अफ्रीकन देशों ने बहुद्देशीय खाद्य प्रसंकरण मशीन में अपनी रूचि दिखाई और अफ्रीका के गणमान्य व्यक्तियों ने पोल प्रो के साइट इंडिया इनोवेटिक्स प्राइवेट लिमिटेड का दौरा किया।

रानप्र ने नई दिल्ली में १४ से २७ नवंबर २०१५ तक चले भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला में भाग लिया, जिसमें करीब ८ लाख रूपए का सीधे विक्रय और करीब ६० लाख का आर्डर मिला। लोगों द्वारा नवप्रवर्तनों के संबंध में भारी संख्या में जानकारी मांगी गई, जिससे नवप्रवर्तकों को व्यापार प्रसार में काफी मदद मिली। रानप्र द्वारा लगाई गई नवप्रवर्तनों की प्रदर्शनी को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी व पृथ्वी विज्ञान विभाग मंत्री श्री डॉ. हर्षवर्धन द्वारा सराहा गया।

ग्रासरूट नवप्रवर्तनों के प्रचार-प्रसार के लिए रानप्र भारत ने देश के कई हिस्से में आयोजित प्रदर्शनियों में भाग लिया।

इंजीनियरिंग एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल द्वारा २४ से २६ नवंबर तक मुंबई में आयोजित हुई इंडिया इंजीनियरिंग शो २०१५ और बेंगलूरू में २५ सितंबर को आयोजित नेशनल स्टार्टअप सेंटर की बैठक में भाग लिया। इसमें स्थानीय जरूरतों के हिसाब से औद्योगिक उपक्रम को बढ़ावा देने के प्रस्ताव को पारित किया गया। रानप्र ने २९ से ३० अक्टूबर २०१५ को नई दिल्ली स्थित जामिया मिलिया इस्लामिया के फाउंडेशन डे और नई दिल्ली स्थित दिल्ली हाट में आयोजित हुए वीमेन ऑफ इंडिया एक्जीबिशन २०१५ में सहभागिता की। इसके साथ ही नेशनल काउंसिल फॉर रूरल इंस्टीट्यूट, हैदराबाद के फाउंडेशन डे पर १९-२० अक्टूबर २०१५ को आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया और उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड में १३ से १७ दिसंबर २०१५ को आयोजित हुए स्थानीय मेले में ग्रासरूट नवप्रवर्तनों की प्रदर्शनी लगाई।

अन्य पहल

रानप्र ने नवप्रवर्तकों से बेहतरीन पद्धतियों के तात्कालिक विकास और ट्रेंड के सम्बन्ध में संवाद स्थापित करने के लिए अहमदाबाद में २२ सितंबर को एक बैठक आयोजित की। इसके साथ ही तृणमूल नवप्रवर्तकों के अन्तर्राष्ट्रीय ग्राहकों को सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से आयात- निर्यात हाउस और अंतर्राष्ट्रीय ट्रांसपोर्ट कम्पनियों के प्रतिनिधियों के साथ एक बैठक आयोजित की। रानप्र व्यवसाय विकास के साथी ग्राहकों को सुविधा देने और नवप्रवर्तकों के मदद के उद्देश्य से नई तकनीकियों जैसे व्हाटसप आदि का इस्तेमाल कर रहे हैं। नवप्रवर्तनों के बारे में जानकारी मांग रहे लोगों के साथ ज्यादा समय व्यतीत किया जा रहा है।

बौद्धिक संपदा प्रबंधन (आईपीआर)

भारतीय बौद्धिक संपदा प्रबंधन कार्यालय में इस अवधि के दौरान ६२ अनंतिम विनिर्देश, एक पूर्ण विनिर्देश, २१ पीएस टू सीएस आवेदन और ७४ परीक्षाओं के लिए आवेदन किया गया। इस अवधि के दौरान आईपीआर विभाग ने १० प्रथम परीक्षण रिपोर्ट प्राप्त की और चार सुनवाई में उपस्थित रहे। इसके साथ ही औषधिय उत्पाद का पेटेंट प्राप्त करने के लिए ज्ञानधारकों

के साथ भारतीय जैवविविधता प्राधिकरण (एनबीए) के लिए दस्तावेजीकरण के प्रक्रिया को पूरा किया।

किसानों द्वारा विकसित किये गए पौधों के किस्मों के पंजीकरण के लिए पौध किस्म और किसान अधिकार प्राधिकरण अधिनियम २००१ के तहत कुल १२ आवेदन किया गया। मध्यप्रदेश के नवप्रवर्तक राजकुमार राठौर द्वारा विकसित किये गए अरहर की किस्म ऋचा २००० का पंजीकरण स्वीकृति प्रमाण पत्र (संख्या ६४, २०१५) जारी हुआ।

सूचना प्रसार एवं सामाजिक प्रसार

शोधयात्रा के लिए तय किये गए रास्ते में पड़ने वाले इलाके के स्थानीय संसाधनों, समस्याओं और मानव संसाधन की पहचान पूर्ण की गई। स्थानीयता के लिहाज से उपयोगी नवप्रवर्तन खाद्य प्रसंस्करण मशीन को उत्तरी सिक्किम के लूम गांव में स्थापित करने का प्रस्ताव तैयार किया गया। रामपुर, उत्तर प्रदेश में स्थापित परियोजन को पुर्नजीवित किया। राजस्थान-हरियाणा के सीमा पर चाक २ गांव में लगे बायोमास गैसीफायर का उपयोग स्थानीय लोगों द्वारा बंद किये जाने के बाद उसे वापस ले लिया गया।

रानप्र-भारत, ने उष्णकटिबंधीय/उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के लिए सेब की किस्म (हरिमन ९९) के ७२०० पौधों का प्रसार देश के १७ संस्थानों, ४५० किसानों और २५० ग्रामीणों को पूर्वोत्तर राज्यों, अंडमान निकोबार द्वीप समूह समेत देशभर में किया।

मीडिया

पिछले वर्षों की तरह इस अवधि में भी प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ मिलकर नवप्रवर्तकों, तृणमूल नवप्रर्वतनों, नवप्रवर्तकों और उनके कार्यों के संबंधित कहानियों, का प्रकाशन किया गया। रानप्र ने मेल टुडे,
शद्दाख डॉट काम, एनडीटीवी, टीएलसी, एनएसपी, टाइम्स इंटरनेट लिमिटेड, द हिन्दू, टाइम्स ऑफ इंडिया, तथ्य भारती, वर्ल्ड साइकिलिंग एटलस समेत देश के अन्य बड़े प्रकाशन हाउस के साथ समन्वय स्थापित किया।

साइंस एक्सप्रेस- जलवायु परिवर्तन विशेष

डीएसटी ने रानप्र को साइंस एक्सप्रेस के आठवें चरण (१५ अक्टूबर २०१५ से ७ मई २०१६ तक) में भाग लेने और कोच नंबर ११ रानप्र को नवप्रवर्तन प्रदर्शनी लगाने के लिए आवंटित किया। इसमें तृणमूल नवप्रवर्तकों और छात्रों से सम्बंधित सात प्रदेशों के नवप्रवर्तनों जैसे अगरबत्ती के लिए बांस की तीली बनाने की मशीन, कपास की बाती बनाने की मशीन, रैपर पिकर, मिट्टीकूल श्रृंखला के विभिन्न उत्पाद, टी क्लाइंबर,

साइंस एक्सप्रेस के रास्ते में पड़ने वाले स्टेशन पर आइडिया प्रतियोगिता का आयोजन

मैनुअल मिल्किंग मशीन, संशोधित वाकर विथ एडजस्टेबल लेग, ट्रेवलिंग बैग विथ फोल्डिंग सीट को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में नवप्रवर्तनों का चयन सामान्यताः और सरलता के हिसाब से किया गया था। इसका उद्देश्य आम लोगों को अपने आसपास की समस्याओं को पहचानने और उसका तकनीकी निदान खोजने के लिए प्रेरित करना था। कोच में नवप्रवर्तनों, रानप्र के विभिन्न कार्यक्रमों, गतिविधियों के संबंधी जानकारियों के लिए पोस्टर लगाया गया।

साइंस एक्सप्रेस के रास्ते में पड़ने वाले विभिन्न स्टेशनों पर पोस्ट र प्रदर्शनी और आइडिया प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रानप्र ने आसपास के स्कूलों में पहुंचकर आइडिया प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस गतिविधि का आयोजन ९ प्रदेशों के १९ जिलों में (जम्मू और कश्मीर (२), उत्तर प्रदेश (१), पश्चिम बंगाल (१), असम (१), ओडिसा (१), छत्तीसगढ़ (२), तेलंगाना (२), आंध्र प्रदेश (४), गुजरात (५) किया गया। इसमें करीब ३५००० बच्चों से जुड़कर और उनसे १५१३५ विचार/नवप्रवर्तन की प्रविष्टियां प्राप्त की गई।

जम्मू और कश्मीर में रानप्र समूह ने ३८ स्कूलों के १७०० बच्चों से जुड़कर करीब १३०० और इलाहाबाद में २१०४ विचारों की प्रविष्टियां प्राप्त की। जबकि न्यू जलपाईगुड़ी और न्यू बोंगाइन में सर्दी का मौसम में ज्यादातर विद्यालय बंद होने की वजह से महज ८६ विचारों की प्रविष्टियां प्राप्त की जा सकी। ओडिसा के झारसुगरड़ा से ५६, छत्तीसगढ़ के विलासपुर और खुमारी से १०५३, विचार/नवप्रवर्तन की प्रविष्टियां प्राप्त की। आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में रानप्र साथियों/पल्ले स्रुजना ने १३ हजार ७०० स्कूलों बच्चों से जुड़कर करीब ८६१६ विचार/नवप्रवर्तन की प्रविष्टियां प्राप्त की। गुजरात में करीब ११ हजार छात्रों से जुड़कर २०६२ विचार/नवप्रवर्तनों की प्रविष्टियां प्राप्त की गई। शिक्षकों को नवप्रवर्तन के प्रति संवेदनशील बनाने और बच्चों को रचनात्मक बनाने में सहयोग देने के उद्देश्य से वलसाड जिले में १०० स्कूली शिक्षकों के साथ बैठक की गईं।

भविष्य की दिशा के लिए पंचवार्षिक समिति

किसी भी संस्था का विस्तार और विकास उसके सम्पूर्ण गतिविधियों की समीक्षा, लक्ष्य, शासनादेश, और मूल्य पर आधारित सामाजिक आंदोलन की गहन समीक्षा पर निर्भर करता है। ऐसे में यह निर्णय लिया गया कि प्रति पांच वर्ष में रानप्र के शासनादेशों और गतिविधियों की गहन समीक्षा की जाएगी और आगे के लक्ष्य तय किए जाएंगे। पंचवार्षिकी समिति का गठन प्रो. वीएस रामामूर्ति (पूर्व सचिव विज्ञान एंव प्रौद्योगिकी विभाग, पूर्व निदेशक एनआईएएस बेंगूलूरू, ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक) की अध्यक्षता में हुई। समिति में प्रो. अनिल गुप्ता, प्रो. कुलदीप माथुर (रानप्र-भारत को स्थापित करने में अपना अहम योगदान दिया), सुश्री रिया सिंहा चोक्काकुला,(पूर्व सीआईओ रानप्र- भारत), प्रो. सुर्दशन अयंगर (गांधीवादी शिक्षाविद और गुजरात विद्यापीठ के पूर्व कुलपति), और डॉ. विपिन कुमार (सचिव सदस्य) शामिल हैं। समिति ने रानप्र के कर्मचारियों, नवप्रवर्तकों और हितधारकों के साथ कई बैठकें की और अपना सुझाव सौंपा। इसमें रानप्र के कार्यान्वयन के विकेन्द्रीकरण और उसके स्थानीय कार्यालय को खोले जाने का सुझाव प्रमुख था, जिससे नवप्रवर्तकों की जरूरतों को आसानी से पूरा किया जा सके।

नवोदित पहल

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज (NIAS) के साथ एमओयू

रानप्र ने सहभागिता और विज्ञान, तकनीकी और नवप्रवर्तन (एसटीआई) के क्षेत्र में आगे के प्रयास, लोकनीति, सामाजिक विज्ञान के आपसी प्रतिच्छेदन के लिए नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज के साथ १० मई २०१५ को एनआईएएस परिसर बेंगलूरू में सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया गया। सहभागिता का उद्देश्य देशभर में खासतौर पर आदिवासी और पिछड़े क्षेत्रों में तृणमूल नवप्रवर्तनों का प्रसार व एसटीआई और व्यक्ति/ समुदाय पर पड़ने वाले प्रभावों के शोध व विश्लेषण में सहयोग प्रदान करना है। समझौते के तहत रानप्र एनआईएएस में हनी बी नेटवर्क का हब विकसित करेगा, जो की तृणमूल नवप्रवर्तनों प्रसार और सामाजिक प्रसार का कार्य करेगा। इसके तहत कई अन्य कार्य जैसे समावेशी नवप्रवर्तन पर ग्रीष्मकालीन कक्षाओं का आयोजन आदि शामिल है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण केन्द्र के साथ सहमति एमओयू

मानव स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न गतिविधियों के लिए २७ अप्रैल २०१५ को रानप्र ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण केन्द्र के साथ समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किया। इसके तहत मानव स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न गतिविधियां जैसे, स्वास्थ्य संबंधी नवीन तकनीकियों के मूल्यांकन, तकनीकियों के उत्पादन के लिए तकनीकी हस्तांतरण, सामुदायिक स्वास्थ्य प्रणाली के क्षमता और वैधता की जांच की प्रायोगिक परियोजना को सहयोग, लोक स्वास्थ्य प्रणाली में सहयोग, चयनित किये गए कार्य क्षेत्र में क्षमता बढ़ाने के लिए ट्रेनिंग और अन्य हेल्थकेयर तकनीकी के क्षेत्र में सहभागिता शामिल है। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन

को तकनीकी सहायता मुहैया करने के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण केन्द्र का गठन किया गया है।

जॉहन डीयर प्राइवेट लिमिटेड के साथ एमओयू

रानप्र ने १६ अप्रैल २०१५ को इनोवेटिव तृणमूल तकनीकी परियोजनाओं पर एक साथ मिलकर कम करने के लिए जॉहन डीयर प्राइवेट लिमिटेड, पुणे के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। समझौते के तहत विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का खाका तैयार किया गया है, जिसमें जॉहन डीयर रानप्र नवप्रवर्तकों को सहयोग और ज्ञान को साझा करने के लिए कारखाना में आमंत्रित करेगा। विचारों के आदान प्रदान के लिए जॉहन डीयर के अभियंता नवप्रवर्तकों के कारखाने का भी दौरा करेंगे। नवप्रवर्तक और अभियंता मूल्य संवर्धन और उत्पाद विकास के साझा परियोजनाओं में साथ मिलकर कम करते हैं। जॉहन डीयर रानप्र डाटाबेस से उत्पाद और व्यवसाय की संभावनाओं वाले नवप्रवर्तनों की पहचान करेगा। जॉहन डीयर प्राइवेट लिमिटेड, पुणे ट्रैक्टर के साथ कृषि संबंधी मशीनों के उत्पादन का कार्य करता है। नई तकनीकी, बेहतर डिजायन और नवप्रवर्तन विचार जॉहन डीयर के वैश्विक व्यापार में मदद करता है।

अन्य सहभागितायें

रानप्र ने २० अगस्त २०१५ को हिमाचल प्रदेश स्थित हार्टिकल्चरल प्रोड्यूस मार्केटिंग एंड प्रोसेसिंग कारपोरेशन लिमिटेड के साथ सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। रानप्र के तकनीकी मजबूती और हार्टिकल्चरल प्रोड्यूस मार्केटिंग एंड प्रोसेसिंग कारपोरेशन लिमिटेड के वितरण नेटवर्क के जरिये एक- दूसरे की विशेषज्ञता का बेहतर उपयोग हो सकेगा। एक अन्य सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर हनी बी नेटवर्क संस्थानों और कुमुलस (४९- वैश्विक विश्वविद्यालयों और कला, डिजाइन एंड मीडिया विद्यालयों का संगठन) के बीच ५ दिसम्बर २०१५ को आईआईटी मुंबई में बैठक के दौरान किया गया। यह संबंध तृणमूल नवप्रवर्तनों को अंतरराष्ट्रीय डिजायन विशेषज्ञता मुहैया कराने में मदद प्रदान करेगा।

रानप्र- हनी बी नेटवर्क ने कमालियोंट के साथ सहभागिता की और १०-११ नवम्बर २०१५ को हेलसिंकी, फिनलैंड में सिल्वर बुलेट से सिल्वर बाजार कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

तृणमूल नवप्रवर्तकों को पहचान दिलाना

अर्चना कोंवर, (शाक अबर्जाबर वाली बैशाखी) असम ने नेशनल सेंटर फॉर प्रमोशन फॉर इम्प्लायमेंट फॉर डिसेबल पीपुल का एम्फेसिस यूनिवर्सल डिजायन पुरस्कार-२०१५ प्राप्त किया। इसमें रानप्र- भारत ने अर्चना के साथ केरल की रहने वाली बीजू वर्गीज (दिव्यांगो की आसानी के लिए कार में रेट्रोफिटिंग अटैचमेंट), शालिनी कुमार बिहार (वाकर विथ एडजस्टेबल लेग) को भी नामित किया था।

रानप्र-भारत और सृष्टि ने महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा असाधारण कार्यों के लिए दिए जाने वाले राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०१५ के लिए देश के विभिन्न नवप्रवर्तक छात्रों को नामित किया था, जिसमें सोरिंग लेप्चा (गांव के बच्चों में जन्म के साथ की होने वाली बीमारियों के रोकथाम के लिए कम कीमत

विदाई समारोहः नवप्रवर्तन विद्वानों का रिहायशी कार्यक्रम

में पानी साफ करने वाला यंत्र), मायल लेप्चा (पानी के बहाव के दौरान मोबाइल फोन चार्ज करने के लिए वाटर टैप में एक छोटे जनरेटर का उपयोग), अनन्या केजी (ऊर्जा से चलने वाला आटोमैटिक मोबाइल नेबुलाइजर), आदित्य मक्कड (रिवर्स गियर वाला रिक्शा, फोल्डेबल सीट और इंडिकेटर के साथ), अफान सिद्दीकी (बुजुर्गों को बस में चढ़ने में सहायता करने वाली मशीन) आदि का चयन इस पुरस्कार के लिए किया गया। इन सभी को बाल दिवस के मौके पर माननीय राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने राष्ट्रपति भवन में पुरस्कृत किया। इसमें से कुछ बच्चों को प्रतिष्ठित इग्नाइट अवार्ड में भी पुरस्कृत किया जा चुका है, जबकि कुछ बच्चों की खोज शोधयात्रा के दौरान, और सृष्टि द्वारा यूनिसेफ और रानप्र के सहयोग से आयोजित कार्यशाला से किया गया था।

नवप्रवर्तक विद्वानों का रिहायशी कार्यक्रम

नवप्रवर्तकों, लेखकों और कलाकारों के लिए नवप्रवर्तक विद्वान रिहायशी कार्यक्रम की शुरुआत १२ मार्च २०१६ को हुआ और करीब दो सप्ताह तक चला। इसमें तृणमूल नवप्रवर्तक जी. रत्नाकर, कर्नाटक (मिनी वाटर टरबाइन), मुश्ताक अहमद डार, जम्मू और कश्मीर (अखरोट तोड़ने वाली मशीन), लालबाई कजेला राल्ते, मिजोरम (बांस की स्टिक बनाने वाली मशीन), सी. मल्लेशम, आंध्र प्रदेश (आंशु मेकिंग मशीन), अमृत भाई अगरावत, गुजरात (बुलक कार्ट और अभिनव पुल्ली), मिस अनुराधा पाल, दिल्ली (राइट बायोटिक, एंटी बायोटिक फाइंडर), और स्वप्निल तालुकदार, असम (पैर से चलने वाली पेज बदलने की मशीन) शामिल थे। इस अवधि के दौरान सभी को संबंधित मंत्रालयों, शोध संस्थाओं आदि के साथ संभावित सहयोग और आगे के शोध और नवप्रवर्तन के प्रसार के संबंध में बातचीत का मौका मिला। इसका उद्देश्य उन्हें नीतियों, तकनीकी और अन्य संस्थाओं जैसे उद्योग, भारतीय मानक ब्यूरो और अन्य हितधारकों के साथ जोड़ना था। माननीय राष्ट्रपति ने सभी के साथ बातचीत की और उन्हें प्रेरित किया। रानप्र- भारत ने राष्ट्रपति भवन से समन्वय स्थापित करके आवेदन की स्क्रीनिंग, नवप्रवर्तकों के साथ समन्वय, तकनीकी संस्थाओं, सरकारी विभागों, मंत्रालयों के साथ समन्वय में सहयोग स्थापित करके कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना अहम योगदान दिया।

प्रशासनिक मामले
कर्मचारी वर्ग की भर्ती

रानप्र-भारत की कार्यक्षमता को बढ़ाने के लिए भर्ती संबंधी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया, जिसमें वरिष्ठ अध्येता, अध्येता, रिसर्च एसोसिएटस, मैनेजर्स आदि के इसके लिए साक्षात्कार का आयोजन ७ अप्रैल, १२ मई, १२-१३ जून, अक्टूबर २०१६ और २०१५ में, इसके साथ ही १२-१३ जनवरी, ३० जनवरी, २३ फरवरी २०१६ को किया गया। इससे ७६ उम्मीदवारों का चयन किया गया।

सरकार संबंधी गतिविधियां

रानप्र ने साल २०१४-१५ की वार्षिक रिपोर्ट समीक्षा विवरण के साथ हिन्दी और अंग्रेजी में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग को जमा की। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के वार्षिक
रिपोर्ट के लिए जानकारी, ग्रामीण विकास से संबंधित विभिन्न स्वदेशी तकनीकियों की जानकारी संसदीय समिति की बैठक में प्रस्तुति के लिए दिया गया, स्वायत्तशासी संस्थाओं के अध्ययन के लिए डाटा, वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग को व्यय समीक्षा विवरण के साथ और उसके उत्पादकता संबंधी आकड़ा उपलब्ध कराया गया। इसके साथ ही वार्षिक आरटीआई रिपोर्ट, आउट कम बजट (२०११ से २०१५) से संबंधी जानकारी और संसदीय सवालों के जवाब दिए गए।

प्रकाशन की सूची २०१५-२०१६
२०१६

1. Gopalbhai Surtia, Paresh Panchal, Mahesh Patel, Ravikumar RK and Vipin Kumar. (2016) Improving livelihood initiatives through environmental friendly solutions derived from livestock byproduct. International Journal of Science, Environment and Technology, 5(2):658 – 665

2. Kanal Chhajed, Rakesh Maheshwari, Raghunath Lohar, Khimji Kanadiya (2016) Assistive Aid for Women Workers Carrying Load on Their Head: A Case Study. International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology 5(2): 2159 -2168

3. Keyur Panara, Pawan K. Singh, Pooja Rawat, Vivek Kumar, Momin Maruf, Kanti Patel, R K Ravikumar and Vipin Kumar (2016) Importance of Alangiumsalviifolium and its Pharmacological Update, European Journal of Medicinal Plants, 12(4): 1-15

4. Ravikumar R K, Kinhekar Amol S, Ingle V C, Sonkusale Prashant, AwandkarSudhakar P., Tembhurne Prabhakar A, Kumar Vipin (2016) Effect of Heat Stress on Haematological and Immunological Parameters in Broiler Chicken, The Indian Journal of Veterinary Sciences and Biotechnology, 11(3): 40-42

5. Ravikumar R K, Dutta L, Kinhekar A S, Kumar V (2016). People's knowledge for addressing societal needs: Lessons learnt while engaging farming communities as a part of research system. Adv. Anim. Vet. Sci. 4(1s): 1-8

6. Ravikumar R K, Periyaveeturaman C, Selvaraju D, Kinhekar A S, Dutta L and Vipin Kumar (2016) Community oriented ectoparasite intervention system: Concepts for on-farm

application of indigenous veterinary medication, Adv. Anim. Vet. Sci. 4(1s): 9-19.

Ø **Published international conference proceedings**

2016

1. Indigenous innovations in livestock production systems: NIF initiatives, Invited paper, Sarjan R K, Prasad R M V and Anand Rao K Innovative designs and implements for global environment and entrepreneurial needs optimizing utilitarian sources, INDIGENOUS, International Livestock Conference & Expo, 23rd Annual convention, ISAPM, Hyderabad, India, 28-31, Jan, Pp. 28-35.

2015

1. Christian Toelg, Vipin Kumar (2015) A rural innovation framework for African countries, Intersection of Indigenous and Traditional Knowledge and Technology Design, Bidwell, N. J, & Winschiers-Theophilus, H., Santa Rosa, California: Informing Science Press
2. Dayabhai Bharwad, Vipul Vasan, Amol S Kinhekar, Vivek Kumar, Ravikumar R.K. and Vipin Kumar (2015) Therapeutic evaluation of indigenous veterinary medication for endoparasite infestation in bovines under field condition. Indian Journal of Applied Research 5(4): 755-756.
3. Devgania BS, Khordia D, Chodvadiya MB, Patel R, Patel D, Kinhekar AS, Singh PK, Kumar V, Bhojne GR, Ravikumar RK, Kumar V. (2015) Reverence of community towards grassroot livestock innovation: Responding to stakeholders need against sub-clinical mastitis in Amreli District, Gujarat, India. Adv. Anim. Vet. Sci. 3(12): 689-693.
4. Jamunabhen Bhanabhai Patel, Sheila Patel, Purushotham Patel, Ravikumar, R K , Amol S Kinhekar, Vivek Kumar, Ingle V C, Sudhakar Awandkar, Prabhakar A Tembhurne and Vipin Kumar, (2015) Poultry immunity against Ranikhet Disease Virus (RDV) - A case study of an indigenous poultry medication in village production systems of Maharashtra, India, Journal of Chemical and Pharmaceutical Research 7(4):1040-1042.
5. Jayshree D. Patel, Nirmal S. Sahay and Vipin Kumar (2015) Fingerprinting of the Acacia nilotica (L.) bark extract having antibacterial property. Journal of Health Science 3:132-136
6. Mahipalchary Kadivendi, Rakesh Maheswari, Ravikumar, R K , Mukeshkumar M. Chauhan, Amol S Kinhekar, Vivek Kumar and Vipin Kumar (2015) Integrated approach for Engaging Farming Community- Opportunities and Challenges for Low Cost Inputs. International Journal of Agriculture Innovations and Research 3(6): 1691-1695.
7. Pandit R, Singh P K and Kumar V (2015). Natural remedies against multi-drug resistant Mycobacterium tuberculosis. Journal of Tuberculosis Research, 3 (4): 173-183.
8. Periyaveeturaman, C , Selvaraju, D, Kinhekar, A S , Singh, P K , Ravikumar, R K and Kumar, Vipin (2015) Efficacy of herbal composition against ectoparasite infestation in dogs, Advances in Applied Science Research, 6(8): 242-245.
9. Ravikumar R K , Amol S Kinhekar and Vipin Kumar. (2015) Innovative means for regulating global warming through indigenous veterinary system: Are we missing sustainable solutions? Journal of Chemical and Pharmaceutical Research, 7(5):951-954.
10. Ravikumar R K, Kinhekar A S and Kumar Vipin. (2015) Indigenous veterinary medication: An approach for mitigating climate change in livestock production system, Ruminant Science, 4(2): 29-32.
11. Ravikumar, R K, Amol S Kinhekar, Nirmal S Sahay, Vivek Kumar, Pawan K Singh, Mahesh B Chodvadiya and Vipin Kumar (2015) Methodological approach for sustaining indigenous veterinary knowledge of society: Case studies to control of endoparasite from the regions of Gandhinagar, Bhavnagar and Junagadh districts of Gujarat State, India, Indian Journal of Applied Research, 5(10): 640-642.
12. Ravikumar, R K , Amol S Kinhekar and Vipin Kumar (2015) Study on Efficacy of Veterinary Medication for Effective Rumen Function - A Strategy to Minimize Greenhouse Gas Emission. Global Journal for Research Analysis, 4 (4): 1-2.
13. Ravikumar R K, Hardev Choudhary and Vipin Kumar. (2015) Means for retaining farming communities in semi-arid regions of Gujarat state. Agric. Update, 10(2): 158-163
14. Ravikumar, R K , Lopamudra Dutta, Vivek Kumar and Vipin Kumar (2015) Strengthening indigenous veterinary system - An approach for mobilizing community from West Bengal", Asian Academic Research Journal of Social Science & Humanities. 34 (1): 286-290
15. Ravikumar R K, Vivek Kumar, Hardev Choudhary, Amol S Kinhekar and Vipin Kumar, (2015) Efficacy of indigenous polyherbalectoparasiticide formulation against hard tick infestation in cattle (Bosindicus), Ruminant Science, 4(1):43-47.
16. Sitaben Lasiabhai R Gaikwad, Dayabhai N Ramana, Rahametkhan P Solanki, Lakhabhai B. Khatana, Gohil Nanuben K, Vasava Natvarbhai G, Purshotam Patel, Nirmal S Sahay, Jayshree Patel, Ravikumar R K, Pawan K Singh, Amol S Kinhekar and Vipin Kumar, (2015) Efficacy of an indigenous veterinary medication to control endoparasite infestation in clinically diagnosed large ruminants affected with diarrhoea amongst field conditions: Gujarat, India, European Journal of Experimental Biology, 5(5):81-84
17. Vijay Kumar, Devendra Patil, Nitin Maurya (2015) A Study of Attack on PHP and Web Security, Communications on Applied Electronics (CAE), Foundation of Computer Science FCS, New York, USA, 1(4): 1-13

Ø **Book Chapter**

1. Vipin Kumar and Ravikumar R K, (2015) Realistic aspiration of livestock health care through Indigenous Veterinary System in India, New Delhi:Dairy India

Ø **Abstract in Conference**

1. Amirdaraj K, Bhoodhathan K, Ayyathurai K, Kumar V, Singh PK, Chandrashekhar V M (2015). Biological evaluation of some selected medicinal plants (NIF leads) for their hepatoprotective and anti-arthritic activity, 3rd ICCIG at IIMA, p 121
2. Dharambir Kamboj, and Anamika Dey (2015) Role of Intermediaries in bridging and blending innovations from formal and informal sectors for an Inclusive Innovation system 3rd ICCIG at IIMA, p 125

3. Ghulam Hassan1 Qadiri, Badri Mahato1, Abdul Rehman Sada1, Gulam Hassa Pala1, Tejal Gandhi2 (2015), Evaluation of Antihypertensive Activity of Four Herbal Grassroots Practices, 3rd ICCIG at IIMA, p 122

4. Gulam A M, Hakeem A R, Robert, Rammehar S, Nida A K, Ombeer, Kumar V, Singh P K, Trivedi S (2015). Validation of antimycotic potential of traditionally used Indian herbal extracts against dermatophyte strains causing human skin disease. 3rd ICCIG at IIMA, p 120

5. Khumujam Jina Devi and Debati Devi (2015) Mangal Herbal Soap, 3rd ICCIG at IIMA, p 125

6. Mahesh Patel (2015) Dynamics of Technology Commons: A case of Bullet Santi, 3rdICCIG at IIMA, pp. 134-135

7. Mohanlal B, Binoy Kurian, and Gulshan Vashistha (2015) Reversible reduction gear for marine diesel engine and Z-drive propeller. 3rd ICCIG at IIMA, p 123

8. Nitin Maurya (2015) Innovation imperative: The case of Mushtaq Ahmad Dar, a young Kashmiri innovator. 3rd ICCIG at IIMA, p 123

9. Prakash Singh Raghuvanshi and Hardev Chaudhary, (2015) Kudrat reformer, 3rdICCIG at IIMA, p 125

10. Ravikumar R K, Vivek Kumar, Sudeep Kumar, Mohinder Bhadwal, Sakarabhai Kallubhai Bhariya and Khumaji Badaji Kataviya (2015) Methodologies of institutional recognition for veterinary knowledge holder(s) –An approach in the regions of Jammu & Kashmir, Tamil Nadu and Gujarat, 3rd ICCIG at IIMA, pp 118-119

11. Thakor Makvana Pachalbhai, Mrugesh Patel, Samir K Shah, Mamta B Shah (2015) Phytopharmacological studies on indigenous medicinal plants, 3rd ICCIG at IIMA, pg122

12. Vivek Kumar (2015) Is all traditional knowledge community knowledge? 3rd ICCIG at IIMA, p 39

Ø **Published National conference proceedings**

1. Ravikumar, R K , and Vipin Kumar, (2015) New frontiers for Indigenous Knowledge Research System [IKRS]: Non Linear Innovation System [NLIS] and Open Source Innovation System [OSIS], Lead Paper, Eds. Jaswinder Singh, HK Verma, Navdeep Singh, Simrinder Singh and Rajesh Kasrija, National conference on push to the livestock farming through knowledge empowerment of the farmers, Nov 18-20, Guru Angad Dev Veterinary and Animal Sciences University [GADVASU], Ludhiana. Pp. 239-242. [1st National Conference of Society of Veterinary and Animal Husbandry Extension (SVAHE)].

वार्षिक लेखा २०१५-२०१६

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत

वार्षिक लेखा

वर्ष 2015-2016 के लिए

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी-सं-एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च, 2015 16 को तुलन पत्र

	अनुसूची सं.	रुपये 31 मार्च, 2016 को		रुपये 31 मार्च, 2015 को
आधार/पूँजीगत निधि एवं देयताएं				
आधार/पूँजीगत निधियां	1		520,56,046	290,79,870
उद्दिष्ट निधियाँ	2		12,54,90,513	12,85,08,337
वर्तमान देयताएं एवं प्रावधान	3		36,86,962	59,37,984
कुल			**1812,33,520**	**16,35,26,191**
परिसम्पत्तियां				
अचल परिसम्पत्तियां	4			
सकल एकमुश्त		374,16,139		310,12,495
घटाएं : मूल्यह्रास		233,49,592		197,03,811
निवल एकमुश्त			140,66,547	113,08,684
निवेश			-	-
वर्तमान परिसम्पत्तियां, ऋण, अग्रिम एवं अन्य परिसम्पत्तियां	5		1671,66,973	1522,17,507
कुल			**1812,33,520**	**1635,26,191**
महत्वपूर्ण लेखा नीतियां एवं लेखा पर टिप्पणियां	11			

समान तिथि की हमारी रिपोर्ट के अनुसार
वास्ते **रमनलाल जी. शाह एंड कं.**
चार्टड एकाउंटेंट्स
फर्म पंजी सं. 108517W

साझेदार
विवेक एस. शाह
सदस्यता सं. 112269
स्थान : अहमदाबाद
तिथि : 29 SEP 2016

उक्त तुलन पत्र मेरे/हमारे अधिकतम विश्वास
के अनुसार न्यास की निधियों/देयताओं
तथा संपत्ति/परिसंपत्तियों की सही सूचना देता है।

न्यासी

Executive Vice Chairperson
National Innovation Foundation-India
Autonomous Body of Department of Science & Technology, Govt. of India
Satellite Complex, Satellite, Ahmedabad-15

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत

पंजी-सं-एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च, 2016 को समाप्त वर्ष का आय व व्यय खाता

	अनुसूची सं.	रुपये 31 मार्च, 2016 को समाप्त वर्ष हेतु		रुपये 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष हेतु
आय				
अनुदान एवं सब्सिडियाँ				
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा योजनागत अनुदान		1200,00,000		9,49,00,000
(घटाएं : डीएसटी, भारत सरकार अनुदान में स्थांतरित धनराशि जो गैर आवर्ती मदों में व्यय को व्यक्त करती है)		59,15,394		(45,29,234)
			1140,84,606	9,03,70,766
अर्जित ब्याज	6		43,49,747	-
अन्य आय	7		43,509	-
कुल			**1184,77,862**	**9,03,70,766**
व्यय				
स्थापना व्यय	8		315,91,339	1,95,32,714
आवर्ती व्यय	9		568,20,924	346,67,112
अन्य प्रशासनिक व्यय	10		98,47,286	88,48,574
मूल्यह्रास			36,45,781	30,93,402
कुल			**1019,05,330**	**661,41,802**
तुलन पत्र को स्थांतरित आय के ऊपर व्यय की अधिकता			**165,72,532**	**(39,31,598)**
महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ और लेखा पर टिप्पणियाँ	11			

समान तिथि की हमारी रिपोर्ट के अनुसार
वास्ते **रमनलाल जी. शाह एंड कं.**
चार्टड एकाउंटेंट्स
फर्म पंजी सं. 108517W

साझेदार
विवेक एस. शाह
सदस्यता सं. 112269
स्थान : अहमदाबाद
तिथि : 29 SEP 2016

उक्त तुलन पत्र मेरे/हमारे अधिकतम विश्वास
के अनुसार न्यास की निधियों/देयताओं
तथा संपत्ति/परिसंपत्तियों की सही सूचना देता है।

न्यासी

Executive Vice Chairperson
National Innovation Foundation-India
Autonomous Body of Department of Science & Technology, Govt. of India
Satellite Complex, Satellite, Ahmedabad-15

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी-सं-एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च 2016 के तुलनपत्र का अंश बनने वाली अनुसूची

	रुपये 31 मार्च, 2016 को		रुपये 31 मार्च, 2015 को
अनुसूची : 1 - आधारभूत/पूँजीगत निधि :			
1 आधारभूत निधि			
पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष	-		-
जोड़ें: वर्ष के दौरान	-		-
		-	-
2 पूँजीगत निधि			
पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष		4,33,294	4,33,294
3 स्थायी परिसम्पत्तियों के लिए डीएसटी, भारत सरकार का अनुदान			
पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष	217,45,384		195,74,568
जोड़ें: (गैर-आवृत्ति मदों के खाते में प्राप्त अनुदान)	59,15,394		21,70,796
4 पूंजी संचय		276,60,778	217,45,384
इस वर्ष के दौरान दान प्राप्त किया			
5 आय एवं व्यय खाते का शेष		4,88,250	
पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष	69,01,192		108,32,790
जोड़े/ (घटाएं) : आय एवं व्यय खाते से हस्तांरित आय में अधिकता/ (घाटा)	165,72,532		(39,31,598)
		-	-
		234,73,724	69,01,192
कुल		**520,56,046**	**290,79,870**

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी-सं-एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च 2016 के तुलनपत्र का अंश बनने वाली अनुसूची

		रुपये 31 मार्च, 2016 को		रुपये 31 मार्च, 2015 को
अनुसूची : 2 - आधारभूत/पूँजीगत निधि :				
1 डीएसटी बीज परियोजना				
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष		(89,200)		(89,200)
ख प्राप्त अनुदान		-		-
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग				
i. पूँजीगत व्यय				
अचल परिसम्पत्तियाँ		-		-
ii. राजस्व व्यय				
उपभोग योग्य एवं अन्य सामग्रियाँ		-		-
वेतन एवं मज़दूरी		-		-
उपरि व्यय		-		-
यात्रा व्यय		-		-
	कुल व्यय	-		-
वर्ष के अंत में कुल शेष (क+ख-ग)			(89,200)	(89,200)
2 डीएसटी परियोजना - वेट				
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष		(1,09,268)		(1,09,268)
ख प्राप्त अनुदान		-		-
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग				
i. पूँजीगत व्यय		-		-
ii. राजस्व व्यय				
उपभोग योग्य एवं अन्य सामग्रियाँ		-		-
आकस्मिक व्यय		-		-
वेतन एवं मज़दूरी		-		-
उपरि व्यय		-		-
यात्रा व्यय		-		-
	कुल व्यय	-		-
वर्ष के अंत में कुल शेष (क+ख-ग)			(1,09,268)	(1,09,268)
3 एनएमपीबी (आयुष) परियोजना				
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष				7,084
ख प्राप्त अनुदान		-		
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग				
i. पूँजीगत व्यय				
अचल परिसम्पत्तियाँ		-		-
अन्य				
ii. राजस्व व्यय				
उपभोग योग्य सामग्रियाँ		-		-
कार्यबल				5,594
कार्यशाला				1,490
	कुल व्यय	-		7,084
वर्ष के अंत में कुल शेष (क+ख-ग)			-	-
4 डीएसटी परियोजना-टेकपीडिया				
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष				-
ख प्राप्त अनुदान		-		30,61,614
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग				
i. पूँजीगत व्यय				
अचल परिसम्पत्तियाँ		-		-
अन्य		-		-
ii. राजस्व व्यय				
संचार व आकस्मिक व्यय				2,61,614
कार्यबल				10,20,000
पोर्टल प्रबंधन				11,00,000
यात्रा व्यय				5,00,000
कार्यशाला				1,80,000
	कुल व्यय	-		30,61,614
वर्ष के अंत में कुल शेष (क+ख-ग)			-	

RAMANLAL G. SHAH & CO. CHARTERED ACCOUNTANTS AHMEDABAD

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी-सं-एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च 2016 के तुलनपत्र का अंश बनने वाली अनुसूची

		रुपये 31 मार्च, 2016 को		रुपये 31 मार्च, 2015 को
5 आईसीएमआर - वनस्पति एवं पादप निधान परियोजना				
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष		(7,00,420)		7,00,420
ख प्राप्त अनुदान		7,00,000		-
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग				
i. पूँजीगत व्यय				
अचल परिसम्पत्तियाँ		-		
अन्य		-		-
ii. राजस्व व्यय				
परामर्श शुल्क		-		-
आकस्मिक व्यय		-		
उपरि व्यय		420		-
यात्रा व्यय		-		
	कुल व्यय	420		
वर्ष के अंत में कुल शेष (क-ग)				7,00,420
6 आईसीएमआर- सृष्टि प्रयोगशाला परियोजना				
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष				941
ख प्राप्त अनुदान		-		-
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग				
i. पूँजीगत व्यय				
अचल परिसम्पत्तियाँ		-		
अन्य		-		-
ii. राजस्व व्यय				
उपरि व्यय				941
	कुल व्यय	-		941
वर्ष के अंत में कुल शेष (क-ग)			-	-
7 रजत जयंती विज्ञान संचारक फैलोशिप				
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष				93,607
ख प्राप्त अनुदान		-		-
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग				
i. राजस्व व्यय				93,607
	कुल व्यय			93,607
वर्ष के अंत में कुल शेष (क+ख-ग)		-		-
घटाएं: डीएसटी को लौटाया गया निधि का शेष		-		-
शेष			-	
9 डीएसटी परियोजना - आदिवासी समुदायों का कल्याण				
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष		-		
ख प्राप्त अनुदान		9,62,395		1,40,00,000
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग				
i. पूँजीगत व्यय				
अचल परिसम्पत्तियाँ		-		
अन्य		-		
ii. राजस्व व्यय				
उपभोग योग्य सामग्रियाँ				1,07,17,642
वेतन				11,70,000
यात्रा व्यय				11,49,963
	कुल व्यय			1,30,37,605
वर्ष के अंत में कुल शेष (क-ग)			9,62,395	9,62,395
10 हरिओम आश्रम				
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष		1,02,50,000		
ख प्राप्त अनुदान				1,02,50,000
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग				
i. पूँजीगत व्यय				
ii. राजस्व व्यय		4,90,000		
	कुल व्यय	4,90,000		
वर्ष के अंत में कुल शेष (क-ग)			97,60,000	1,02,50,000
11 आईसीएमआर एफओआईएन परियोजना				
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष		-		
ख प्राप्त अनुदान		13,25,000		14,30,000
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग		13,25,000		14,30,000
वर्ष के अंत में कुल शेष (क-ग)			-	

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी-सं-एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च 2016 के तुलनपत्र का अंश बनने वाली अनुसूची

	रुपये 31 मार्च, 2016 को		रुपये 31 मार्च, 2015 को
12 आईसीएमआर रा.न.प्र. कार्य दल परियोजना			
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष	60,84,487		
ख प्राप्त अनुदान	60,45,000		61,55,000
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग	1,66,21,308		70,513
वर्ष के अंत में कुल शेष (क-ग)		44,91,821	60,84,487
13 डीएसटी परियोजना - आदिवासी क्षेत्रों में मोबाइल प्रदर्शनी			
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष	90,00,000	-	
ख प्राप्त अनुदान			
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग	-		90,00,000
i. पूँजीगत व्यय			
ii. राजस्व व्यय	1,50,263		
कुल व्यय	1,50,263		
वर्ष के अंत में कुल शेष (क-ग)		88,49,737	90,00,000
14 नाबार्ड फ्वाईन परियोजन			
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष			
ख प्राप्त अनुदान	20,00,000		
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग			
i. पूँजीगत व्यय			
ii. राजस्व व्यय	20,00,000		
कुल व्यय	20,00,000		
वर्ष के अंत में कुल शेष (क-ग)			
15 सिडबी फ्वाईन परियोजन			
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष			
ख प्राप्त अनुदान	16,00,000		
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग			
i. पूँजीगत व्यय			
ii. राजस्व व्यय	20,00,000		
कुल व्यय	20,00,000		
वर्ष के अंत में कुल शेष (क-ग)		(4,00,000)	
16 भारत- दक्षिण अफ्रीका द्विपक्षीय विशेषज्ञ बैठक			
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष			
ख प्राप्त अनुदान	6,50,000		
ग घटाएं : निधि के उद्देश्य हेतु व्यय/ उपयोग			
i. पूँजीगत व्यय			
ii. राजस्व व्यय	1,36,915		
कुल व्यय	1,36,915		
वर्ष के अंत में कुल शेष (क-ग)		5,13,085	
14 सूक्ष्म उद्यम नवप्रवर्तन निधि - सिडबी खाता	8,52,28,173		7,93,56,862
क पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष	60,90,787		
ख निधि खातों में वर्ष के दौरान अग्रिम और निवेशों से प्राप्त आय	1,93,136		5,87,131
वर्ष के अंत में कुल शेष (क+ख)		9,15,12,096	8,52,28,173
15 नवप्रवर्तन निधि			
पिछले तुलनपत्र के अनुसार शेष	1,78,82,170		1,20,27,461
जोड़ें: वर्ष के दौरान प्राप्त राशि			11,70,974
जोड़ें: वर्ष के दौरान हस्तांतरित राशि (नोट 1 (ज) अनुसूची -11 देखें)	14,51,318		52,79,735
घटाएं: वर्ष के दौरान लगी राशि	3,50,000		5,96,000
		1,89,83,488	1,78,82,170
कुल		**12,54,90,513**	**12,85,08,337**

RAMANLAL G. SHAH & CO. CHARTERED ACCOUNTANTS AHMEDABAD

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी-सं-एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च 2016 के तुलनपत्र का अंश बनने वाली अनुसूची

अनुसूची : 3 - वर्तमान देयताएं एवं प्रावधान :			
प्राप्त अग्रिम			
नवप्रवर्तक फैलोशिप निधि हेतु	6,700		6,700
बकाया व्यय	16,16,488		37,45,986
विविध लेनदार	6,40,969		21,85,298
अन्य	92,221	23,56,378	
			-
अन्य देयताएं			
कर्मचारियों की एनपीएस कटौती	-		
एनपीएस देय खाता	13,30,584		
		13,30,584	
कुल		**36,86,962**	**59,37,984**

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी. सं. एफ/7412/अहमदाबाद

वित्तीय वर्ष 2015-16

31 मार्च 2016 के तुलनपत्र का अंश बनने वाली अनुसूची

अनुसूची : 4 - अचल परिसंपत्तियाँ :	सकल एकमुश्त				मूल्यह्रास				
विवरण	को शेष 42,095	वर्ष के दौरान अभिवृद्धि	वर्ष के दौरान कटौती	को सकल ब्लॉक 42,460	को मूल्यह्रास 42,095	वर्ष के दौरान कटौती	2015-16 तक मूल्यह्रास	कुल मूल्यह्रास 2015-16 तक	को नेट ब्लॉक 42,460
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
कंप्यूटर एवं सहायक परिसंपत्तियाँ									
कंप्यूटर	85,06,871	22,49,815	-	1,07,56,686	73,63,164	-	16,36,355	89,99,519	17,57,167
नेटवर्किंग उपकरण	11,76,491	-	-	11,76,491	10,58,205	-	70,972	11,29,177	47,314
स्कैनर	3,63,990	-	-	3,63,990	3,51,023	-	7,780	3,58,803	5,187
सॉफ्टवेयर	33,27,960	2,28,400	-	35,56,360	32,02,011	-	1,44,090	33,46,101	2,10,259
उपस्कर एवं जुड़नार (मेज कुर्सी इत्यादि) तथा जड़ स्टॉक									
उपस्कर एवं जुड़नार (मेज कुर्सी इत्यादि)	25,29,194	9,54,237	-	34,83,431	10,71,836	-	2,28,901	13,00,737	21,82,694
विद्युत संस्थापन	69,610	-	-	69,610	40,892	-	2,872	43,764	25,846
कार्यालय उपकरण									
एयरकूलर	3,64,804	3,18,477	-	6,83,281	1,40,959	-	70,277	2,11,236	4,72,045
बैलून	35,438		-	35,438	24,930	-	1,576	26,506	8,932
बायो मैट्रिक सिस्टम	-	25,150	-	25,150	-	-	3,773	3,773	21,377
कैमरा	12,45,101	3,19,399	-	15,64,500	6,31,836	-	1,15,945	7,47,781	8,16,719
ईपीएबीएक्स सिस्टम	1,62,249	34,466	-	1,96,715	97,328	-	12,323	1,09,651	87,064
उपकरण	47,54,579	38,790	-	47,93,369	14,68,704	-	4,97,841	19,66,545	28,26,824
फैब लैब उपकरण	16,14,676	11,82,770	-	27,97,446	9,51,968	-	1,91,149	11,43,117	16,54,329
फैक्स मशीन	36,907	-	-	36,907	29,631	-	1,091	30,722	6,185
अग्निशामक यंत्र	18,505	-	-	18,505	12,586	-	888	13,474	5,031
फोटो कॉपी मशीन	57,000	1,47,000	-	2,04,000	41,933	-	13,285	55,218	1,48,782
पब्लिक एड्रेस सिस्टम	60,111	-	-	60,111	42,286	-	2,674	44,960	15,151
रेफ्रीजरेटर	39,010	-	-	39,010	25,078	-	2,090	27,168	11,842
सोनी एलसीडी	91,000	-	-	91,000	64,015	-	4,048	68,063	22,937
टेप रिकॉर्डर	36,427	-	-	36,427	27,752	-	1,301	29,053	7,374
टेलीफोन/मोबाइल उपकरण	6,84,404	3,20,233	-	10,04,637	3,15,279	-	79,387	3,94,666	6,09,971
वाटर कूलर	-	23,000	-	23,000	-	-	3,450	3,450	19,550
किताबें	10,927	10,790	-	21,717	3,278	-	7,826	11,104	10,613
वाहन									
एक्टिवा होंडा	44,168	-	-	44,168	33,036	-	1,670	34,706	9,462
बजाज पल्सर	68,289	-	-	68,289	51,077	-	2,582	53,659	14,630
हौंडा सिटी	10,37,399	-	-	10,37,399	5,36,485	-	75,137	6,11,622	4,25,777
टाटा सफारी	13,11,519	-	-	13,11,519	6,78,244	-	94,991	7,73,235	5,38,284
टाटा इंडिका	5,45,341	-	-	5,45,341	2,60,669	-	42,701	3,03,370	2,41,971
मोबाइल प्रदर्शनी वैन	27,09,873	-	-	27,09,873	11,66,949	-	2,31,439	13,98,388	13,11,485
हीरो एच एफ डीलक्स	52,547	-	-	52,547	3,941	-	7,291	11,232	41,315
ट्रैक्टर जॉन डियर	-	5,51,117	-	5,51,117	-		82,668	82,668	4,68,449
टीवीटीएस विगो	58,105	-	-	58,105	8,716		7,408	16,124	41,981
कुल	**3,10,12,495**	**64,03,644**	**-**	**3,74,16,139**	**1,97,03,811**	**-**	**36,45,781**	**2,33,49,592**	**1,40,66,547**
पिछले वर्ष में	**2,99,86,248**	**21,70,796**	**(11,44,549)**	**3,10,12,495**	**1,75,68,618**	**(9,58,209)**	**30,93,402**	**1,97,03,811**	**1,13,08,684**

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी. सं. एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च 2016 के तुलनपत्र का अंश बनने वाली अनुसूची

	रुपये 31 मार्च, 2016 को		रुपये 31 मार्च, 2015 को
अनुसूची 5 : - वर्तमान परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम और अन्य परिसंपत्तियाँ :			
1 नकदी एवं बैंक शेष			
रोकड़ शेष		-	-
बैंकों में शेष			
बचत खातों में			
- कोटक महिंद्रा, वस्त्रापुर - एसबी खाता सं. 762			51,598
यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, वस्त्रापुर, एसबी खाता सं. 724, एंड	2,99,34,376	-	3,05,31,377
		2,99,34,376	3,05,82,974
चालू खातों में			
- एक्सिस बैंक, वस्त्रापुर - खाता सं. 1548	27,26,477		2,00,535
- एक्सिस बैंक, वस्त्रापुर - खाता सं. 8099 एमवीआईएफ	4,56,551		18,49,813
		31,83,027	20,50,348
सावधि जमा खाते में			
- रानप्र निधियों से	3,57,31,566		3,32,79,522
- एमवाईआईएफ निधियों से	7,40,12,857		6,63,40,812
		10,97,44,423	9,96,20,334
कुल		14,28,61,826	13,22,53,656
2 ऋण, अग्रिम और अन्य परिसंपत्तियाँ			
वसूली योग्य अग्रिम, नकद या वस्तु या मूल्य रूप में		14,58,082	19,43,164
आधार परिसम्पतियां के लिए अग्रिम		44,52,813	
एमवीआईएफ निधि (सिडबी) से नवप्रवर्तकों को अग्रिम		1,15,89,674	1,18,01,538
		54,29,175	50,15,168
आयकर का अग्रिम भुगतान		13,75,403	12,03,981
कुल		2,43,05,146	1,99,63,851
कुल		**16,71,66,973**	**15,22,17,507**

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी. सं. एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च, 2016 को समाप्त होने वाले वर्ष
के लिए आय एवं व्यय खाते का अंश बनने वाली अनुसूची

	रुपये 31 मार्च, 2016 को समाप्त वर्ष हेतु	रुपये 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष हेतु
अनुसूची : 6 - अर्जित ब्याज :		
भारत सरकार के बचत बांड पर 8% अर्जित	-	-
बैंकों में सावधि जमा पर ब्याज	57,92,196	52,69,925
बचत बैंक खातों पर ब्याज	6,943	9,810
अन्य से अर्जित ब्याज	1,926	
कुल अर्जित ब्याज	58,01,065	52,79,735
घटाएं: नवप्रवर्तन निधि में हस्तांतरित	(14,51,318)	(52,79,735)
कुल	**43,49,747**	**-**
अनुसूची : 7 - अन्य आय :		
उद्दिष्ट परियोजनाओं से प्रशासनिक उपरिव्यय वसूली	-	
विविध आय	43,509	-
अचल परिसंपत्ति की बिक्री से लाभ	-	
	43,509	
घटाएं: नवप्रवर्तन निधि में हस्तांतरित	-	
कुल	**43,509**	

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी. सं. एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च, 2016 को समाप्त होने वाले वर्ष
के लिए आय एवं व्यय खाते का अंश बनने वाली अनुसूची

	रुपये 31 मार्च, 2016 को समाप्त वर्ष हेतु		रुपये 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष हेतु
अनुसूची : 8 - स्थापना व्यय :			
मूल वेतन	35,29,904		34,26,513
परामर्श शुल्क			2,23,334
संविदात्मक भुगतान	73,26,702		27,84,078
मंहगाई भत्ता	42,02,312		36,08,478
नियोक्ता का एनपीएस में अंशदान	7,73,371		7,03,834
फैलोशिप	1,41,91,603		70,39,552
मकान किराया भत्ता	7,06,270		6,85,310
चिकित्सा प्रतिपूर्ति / चिकित्सा उपचार पर व्यय	88,545		2,21,945
परिवहन भत्ता	7,72,632		8,39,670
		3,15,91,339	
कुल		**3,15,91,339**	**1,95,32,714**
अनुसूची : 9 - आवर्ती व्यय :			
1 व्यवसाय विकास			
सफाई / कार्यशाला (ईएमटी के साथ)			2,29,190
मानदंड निर्धारण एवं बाज़ार शोध	3,97,254		11,21,751
प्रदर्शन (व्यवसाय विकास)	14,65,566		14,78,405
ऑनलाइन कैटालॉग	9,985		66,000
व्यवसाय योजनाओं में विद्यार्थियों की संलग्नता	1,44,000		2,21,265
यात्रा (व्यवसाय विकास)	8,01,806		8,11,234
		28,18,611	**39,27,845**
2 सूचना प्रसार एवं सामाजिक प्रसार			
नवप्रवर्तन प्रदर्शनी			20,125
प्रदर्शन (डीएनएसडी)	5,44,304		1,35,695
किसानों/मीडिया/कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से व्यवहारों का प्रसा	8,00,174		
प्रदर्शनियाँ एवं नवप्रवर्तन प्रदर्शनी	6,21,916		12,63,666
नवप्रवर्तन प्रसार केंद्र	2,52,760		2,50,235
मुद्रण एवं प्रकाशन (डीएएसडी)	2,93,742		4,74,561
यात्रा (सूचना प्रसार)	5,17,054		2,59,519
कार्यशालाएँ/बैठकें (प्रसार)	14,616		33,536
		30,44,566	**24,37,337**
3 बौद्धिक संपदा अधिकार एवं कानून			
विशेषज्ञ/परामर्शदाता समिति बैठक (बौद्धिक संपदा अधिकार)	9,131		2,155
राष्ट्रीय पेटेंट आवेदनों को फ़ाइल करना	34,71,969		14,51,078
ट्रेडमार्क एवं भौगोलिक अनुप्रयोगों को फ़ाइल करना	3,145		740
पीसीटी अनुप्रयोग	18,235		
यात्रा (बौद्धिक संपदा अधिकार)	1,00,526		1,08,968
		36,03,006	**15,62,941**

RAMANLAL G. SHAH & CO. AHMEDABAD CHARTERED ACCOUNTANTS

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी. सं. एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च, 2016 को समाप्त होने वाले वर्ष
के लिए आय एवं व्यय खाते का अंश बनने वाली अनुसूची

	रुपये 31 मार्च, 2016 को समाप्त वर्ष हेतु		रुपये 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष हेतु
4 सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) एवं डेटाबेस			
कंप्यूटर रखरखाव एवं अपग्रेडेशन	5,06,712		2,36,736
डेटाबेस एवं सॉफ़्टवेयर विकास, प्रूफ़रीडिंग	24,37,063		13,74,473
इंटरनेट	45,06,995		6,35,062
यात्रा (आईटी)	600		3,014
वेबसाइट	2,17,738		1,26,026
		76,69,108	**23,75,311**
5 खोज एवं दस्तावेजीकरण			
विज्ञापन - क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय	46,14,362		32,56,269
सहयोगियों को	39,16,655		12,65,000
विशेषज्ञ/परामर्शदाता बैठकें (खोज एवं दस्तावेजीकरण)	35,521		1,07,013
इग्नाइट (खोज एवं दस्तावेजीकरण)	22,76,364		9,51,564
नमूना/प्रोटोटाइप संग्रह एवं पहचानना	15,39,592		90,038
यात्रा (खोज एवं दस्तावेजीकरण)	9,48,554		6,51,592
सत्यापन/विस्तृत दस्तावेजीकरण	8,66,910		19,72,852
कार्यशालाएँ एवं प्रकाशन	17,41,525		15,61,993
		1,59,39,483	**98,56,321**
6 मूल्य परिवर्धन और शोध एवं विकास (वार्ड)			
विशेषज्ञ/परामर्शदाता बैठकें (वार्ड)	2,65,931		10,57,178
प्रायर आर्ट सर्च, नवप्रवर्तनों का प्रमाणीकरण	1,01,68,515		13,12,966
प्रोटोटाइप/उत्पाद परीक्षण	36,11,774		1,85,184
यात्रा (वार्ड)	20,36,456		15,91,660
मूल्य परिवर्धन एवं उत्पाद विकास	25,48,951		2,52,341
		1,86,31,628	**38,94,647**
7 प्रौद्योगिकी अधिग्रहण निधि के अंतर्गत अधिग्रहित प्रौद्योगिकी		**-**	**-**
8 पुरस्कार कार्यक्रम व्यय			
आवास	10,66,077		10,62,819
खान-पान (कैटरिंग)	7,87,409		6,72,567
सूचना प्रसार	3,51,632		-
प्रदर्शनी व अन्य व्यय	14,45,860		13,05,502
फ़ोटोग्राफी	38,000		38,000
पुरस्कार			46,60,000
स्टेशनरी व प्रिंटिंग			6,46,113
यात्रा व परिवहन	14,63,544		18,47,533
ट्रॉफी			2,13,326
		51,14,522	**1,04,45,860**
9 अचल परिसंपत्तियों की बिक्री में हानि			**1,66,850**
कुल		**5,68,20,924**	**3,46,67,112**

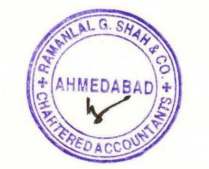

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी. सं. एफ/7412/अहमदाबाद

31 मार्च, 2016 को समाप्त होने वाले वर्ष
के लिए आय एवं व्यय खाते का अंश बनने वाली अनुसूची

	रुपये 31 मार्च, 2016 को समाप्त वर्ष हेतु		रुपये 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष हेतु
अनुसूची 10 : - अन्य प्रशासनिक व्यय :			
अंकेक्षकों की फीस			
वैधानिक अंकेक्षण फीस		46,000	33,708
आंतरिक एवं समवर्ती अंकेक्षक फीस	2,01,250		
अन्य प्रमाणन फीस	18,230	2,19,480	2,28,429
आवास		47,276	2,87,026
बैंक शुल्क		3,790	1,979
भवन मरम्मत शुल्क		1,65,129	2,85,463
वाहन खर्च		10,975	1,02,139
विद्युत एवं ऊर्जा		3,01,093	2,32,036
जी.सी. बैठक खर्च		2,18,536	2,77,183
बीमा खर्च		61,516	1,22,585
कार्यालय खर्च		1,66,095	10,16,341
डाक खर्च		2,47,541	3,37,862
मुद्रण एवं स्टेशनरी		6,60,583	5,79,745
नियुक्ति खर्च		15,70,277	82,74,03,28,18,218
किराया, रेट एवं कर		17,91,240	11,18,700
मरम्मत एवं रखरखाव		3,67,375	8,30,746
सुरक्षा खर्च		8,46,060	1,02,686
टेलीफोन एवं संचार शुल्क		1,15,895	
यात्रा खर्च		10,80,889	
वाहन चलाने और रख रखाव		3,17,866	3,29,090
सदस्य शुल्क		3,435	
ब्याज और दंड		9,482	
टी डी एस लिखित छूट		96,753	
कुल		**98,47,286**	**88,48,574**

RAMANLAL G. SHAH & CO. AHMEDABAD CHARTERED ACCOUNTANTS

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी. सं. एफ/7412/अहमदाबाद

वित्तीय वर्ष 2015-2016

अग्रिम खाता एमवीआईएफ परियोजनाएँ		
	रु.	**रु.**
उत्तर पूर्व क्षेत्र		
बांस की खपच्ची/पट्टी बनाने का यंत्र	5028	
समन्वयन एजेंसी के पास पड़ी धनराशि	5622	
मूगा रीलिंग मशीन	20000	
अनार छीलने का यंत्र	12000	42650
उत्तर क्षेत्र		
पटाखे जलाने का उपाय	7000	
समन्वयन एजेंसी के पास पड़ी धनराशि	15480	
औषधीय पौधों की बढ़त का उपाय	162407	
एचएनपी-प्रदर्शन प्रोत्साहक, पेट्रोल इंजन के लिए - हरिनार	141767	
संशोधित सौर चूल्हा	5047	
बहुफसली थ्रेसर	584931	
अनेक बीज बोने वाली सीडड्रिल	385268	
स्टोव के लिए सेफ्टी वाल्व	16000	
खाई खोदने की मशीन	993480	2311380
पश्चिम क्षेत्र		
साइकिल कुदाल	15000	
स्वास्थ्य लाभ हेतु कुर्सी	37390	
मिट्टी कूल - मिट्टी निर्मित उत्पाद	1991	
परेश पांचाल- अगरबत्ती बनाने की मशीन	250000	
स्टेंसिल कटिंग उपाय - नाजिम शेख	168950	
गन्ना रोटेटर	47486	
समन्वयन एजेंसी के पास पड़ी धनराशि	-30207	490610
शेष आगे...		**2844640**

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
पंजी. सं. एफ/7412/अहमदाबाद

वित्तीय वर्ष 2015-2016

	रु.	रु.
पिछला शेष...		**2844640**
<u>दक्षिण क्षेत्र</u>		
सेवा (बहृद्देशीय खाना बनाने का बरतन - अब्दूल रज्जाक)	42150	42150
<u>रानप्र की सीधी निगरानी वाली परियोजनाएँ</u>		
बाँस से अगरबत्ती की डंडी बनाने की मशीन	300000	
भगवान सिंह डांगी- रीपर विनरोवर	300000	
बी. मोहनलाल - जलीय रिवर्सिबल रिडक्शन गीयरबॉक्स	730000	
बोममगनी मल्लेश- इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के लिए रिमोट	120000	
क्लीयर बनाना एल्कली - बसंत शर्मा	96050	
सी.वी.राजू- हैंड से कुछ भी संभव	380045	
दादाजी खोबरागड़े - डी.आर.के 2008 धान की किस्म	200000	
दीपक भराली - डिज़ायन निर्माण यंत्र	915010	
निदेशक एसएमआईटी - अजूबा ट्यूब लाइट फ्रेम	182032	
डीएन वेंकट- कई तरह के पेड़ों पर चढ़ने में सहायक उपकरण	370000	
डॉ. के.एल.राव - हनी बी आन्ध्र प्रदेश	9000	
जी चंद्रशेखर- पासीफ्लोरा फोएतिदा (झूमका लता फूल)	360000	
हुमा शौचालय क्लीनर - मो. मोतीन अहमद	24000	
इमली तोषी नामो - बहृउपयोगी हस्तमुक्त हेलमेट का अग्रभाग	13500	
लोहे की जाली बनाने का यंत्र - एन. इन्द्र कुमार सिंह	90000	
जय प्रकाश सिंह - गेहूँ की किस्में	75000	
जयदीप मण्डल	530000	
जयप्रकाश - ऊर्जा किफायती स्टोव	300000	
मो. फज़लूल हक - धान का थ्रेसर	804075	
मुजीब खान - विकलांगों के लिए संशोधित कार	60000	
प्रेम सिंह सैनी - फोन चालित स्विच	200000	
राज कुमार राठौर - रिचा 2000	137172	
रामा शंकर शर्मा - संशोधित हैण्डपम्प	37000	
शैलेंद्र रखेचा- एनिमेशन युक्त टी-शर्ट	185000	
गन्ने की आँख निकालने का यंत्र-रोशनलाल विश्वकर्मा	900000	
तुलसी ग्रोथ प्रमोटर	200000	
उमेश चंद शर्मा- इंटरलॉकिंग ईंटें	400000	
यलो फूरियर टेक्नो. प्रा. लि.-इंडियन टी मेकिंग	210000	
ऐरेकानट काटने वाला यंत्र - वजीर	500000	
अखरोट तोड़ने वाला यंत्र - मुश्ताक अहमद दार	5000	
ज्ञान - सेल (जम्मू-कश्मीर)	70000	8702884
कुल		**11589674**

RAMANLAL G. SHAH & CO. AHMEDABAD CHARTERED ACCOUNTANTS

अनुसूची 9सी
(नियम 32 देखें)

01-04-2015 से 31-03-2016 तक की अवधि के लिए अंशदान अधीन आय विवरण

	सार्वजनिक न्यास का नाम :	**राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान-भारत** बंगला नं. 1, सैटेलाइट सेंटर, सैटेलाइट कॉम्पलेक्स, प्रेमचंदनगर रोड, जोधपुर टेकरा, सैटेलाइट, अहमदाबाद - 380015
	पंजीकरण सं.	एफ/7412/अहमदाबाद

		रुपये	
	सकल वार्षिक आय		
	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा योजनागत अनुदान	1200,00,000	
	ब्याज से अर्जित आय	58,010,65	
	कुल सकल वार्षिक आय		1258,01,065
	उस आय का विवरण जो अनुच्छेद 58 नियम 32 के तहत अंशदान के प्रभार्य नहीं है:		
(i)	अन्य सार्वजनिक न्यासों व धर्मदास से वर्ष के दौरान प्राप्त दान		
(ii)	सरकार और स्थानीय प्राधिकरणों से प्राप्त अनुदान	1200,00,000	
(iii)	ऋणशोधन या मूल्यह्रास निधि पर ब्याज		
(iv)	शिक्षा के उद्देश्य से खर्च राशि	1019,05,330	
(v)	चिकित्सीय राहत कार्य के उद्देश्य से खर्च राशि		
(vi)	पशुओं की चिकित्सा के लिए खर्च राशि		
(vii)	अकाल, सूखा, बाढ़, आग या अन्य प्राकृतिक विपत्ति के कारण उत्पन्न संकट से राहत के लिए प्राप्त दान से होने वाला व्यय।		
(viii)	कृषि उद्देश्य हेतु प्रयुक्त भूमि से हुई आय में से कटौती		
(क)	भू राजस्व और स्थानीय निधियाँ/उपकर		
(ख)	बड़े भूस्वामी को देय किराया		
(ग)	उत्पादन लागत, यदि न्यास द्वारा खेती की जा रही हो		
(ix)	गैर-कृषि उद्देश्य हेतु प्रयुक्त भूमि से हुई आय में से कटौती		
(क)	मूल्यांकन, उपकर और अन्य सरकारी या निगम के कर		
(ख)	बड़े भूस्वामी को देय प्रत्यक्ष किराया		
(ग)	बीमा किश्त		
(घ)	भवनों के कुल किराए का 10 प्रतिशत मरम्मत में		
(ङ)	संग्रहण लागत, किराए पर दिए गए भवनों के कुल किराए का 4 प्रतिशत		
(x)	प्रतिभूति स्टॉक से आय या प्राप्तियों की संग्रहण लागत, ऐसी आय का 1 प्रतिशत		
(xi)	अंशदान अधीन अनुमानित सकल वार्षिक किराए के 10 प्रतिशत के हिसाब से, ऐसे भवन जो किराए पर न दिए गए हों या उनसे कोई आय न होती हो, की मरम्मत के लिए कटौती		
	कुल आय जो अंशदान के प्रभार्य नहीं है।		1258,01,065
	सकल वार्षिक आय जो अंशदान के प्रभार्य है		**0**

कृते राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान

न्यासी

Executive Vice Chairperson
National Innovation Foundation-India
Autonomous Body of Department of Science & Technology, Govt. of India
Satellite Complex, Satellite, Ahmedabad-15

स्थान : अहमदाबाद
तिथि : 29 SEP 2016

समान तिथि की हमारी रिपोर्ट के अनुसार
वास्ते **रमनलाल जी. शाह एड क.**
चार्टर्ड एकाउंटेंट्स
फर्म पंजी स. 108517W

साझेदार
विवेक एस. शाह
सदस्यता सं. 112269

RAMANLAL G. SHAH & CO. AHMEDABAD CHARTERED ACCOUNTANTS

बॉम्बे पब्लिक ट्रस्ट एक्ट 1950

अनुसूची IXC (नियम 32 देखें)

01-04-2015 से 31-03-2016 तक की अवधि के लिए अंशदान अधीन आय विवरण

सार्वजनिक न्यास का नाम : राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान-भारत

बंगला नं. 1, सैटेलाइट सेंटर,सैटेलाइट कॉम्पलेक्स, प्रेमचंदनगर रोड,
जोधपुर टेकरा, सैटेलाइट, अहमदाबाद - 380015

दूरभाष: + 91 079 26753501, +91 079 2673 2095 / 2456, इ–मेल : info@nifindia.org

शासी का नाम, पता और दूरभाष, जिसे लेखा रिपोर्ट सौंपा: अनुलग्नक **1 देखे**

बैंक खाता के संबंध में विवरण: बचत खाता संख्या: 606802010000724
बैंक का नाम: यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया , प्रेमचंदनगर, अहमदाबाद.

विदेश से हस्तांतरण के संबंध में बैंक खाता संख्या: उपलब्ध नहीं, एफसीआरए संख्या
पंजीकरण सं.एफ/7412/अहमदाबाद

		रुपये	
	सकल वार्षिक आय		
	उस आय का विवरण जो अनुच्छेद 58 नियम 32 के तहत अंशदान के प्रभार्य नहीं है:		
(क)	वर्ष के दौरान प्राप्त सभी प्रकार के दान		
	(क) कोर्पस		
	(1) देश से	-	
	(2) विदेश से, एफसीआरए संख्या और दिनांक	-	
	(ख) सामान्य		
	(1) देश से	-	
	(2) विदेश से, एफसीआरए संख्या और दिनांक	-	
(ख)	सरकार और स्थानीय प्राधिकरणों से प्राप्त अनुदान		
	(1) सरकार और स्थानीय प्राधिकरण		
	(विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा योजनागत अनुदान)	12,00,00,000	
	(2) विदेश	-	
	(3) निधिकरण एजेन्सी द्वारा		
	(1) देश	-	
	(2) विदेश से, एफसीआरए संख्या और दिनांक	-	
	ब्याज से आय	58,01,065	
	कुल सकल		12,58,01,065
(ग)	शिक्षा के उद्देश्य से खर्च	10,19,05,330	
(घ)	चिकित्सा सहायता के उद्देश्य से खर्च	-	
(च)	(1)कृषि उद्देश्य हेतु प्रयुक्त भूमि से हुई आय में से कटौती		
	(2) भू राजस्व और स्थानीय निधियाँ/उपकर	-	
	(3) बड़े भूस्वामी को देय किराया	-	
	(4) उत्पादन लागत, यदि न्यास द्वारा खेती की जा रही हो	-	
	(5)उत्पादन लागत, यदि न्यास द्वारा खेती की जा रही हो	-	
(छ)	(1) गैर-कृषि उद्देश्य हेतु प्रयुक्त भूमि से हुई आय में से कटौती		
	उद्देश्य :		
	(2) मूल्यांकन, उपकर और अन्य सरकारी या निगम के कर	-	
	(3) बड़े भूस्वामी को देय प्रत्यक्ष किराया	-	
	(4) बीमा किश्त	-	
	(5) भवनों के कुल किराए का 10 प्रतिशत मरम्मत में	-	
	(6) संग्रहण लागत, किराए पर दिए गए भवनों के कुल किराए का 4 प्रतिशत	-	
	(7) कृषि उद्देश्य हेतु प्रयुक्त भूमि से हुई आय		
(ज)	प्रतिभूति स्टॉक से आय या प्राप्तियों की संग्रहण लागत, ऐसी आय का 1 प्रतिशत	-	
(झ)	अंशदान अधीन अनुमानित सकल वार्षिक किराए के 10 प्रतिशत के हिसाब से, ऐसे किराए पर न दिए गए हों या उनसे कोई आय न होती हो, की मरम्मत के लिए कटौती	-	
	कुल आय जो अंशदान के प्रभार्य नहीं है।		12,58,01,065
	सकल वार्षिक आय जो अंशदान के प्रभार्य है		-

कृते राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान

Executive Vice Chairperson
National Innovation Foundation-India
Autonomous Body of Department of Science & Technology, Govt. of India
Satellite Complex, Satellite, Ahmedabad-15

न्यासी

स्थान :अहमदाबाद
दिनांक : 29 SEP 2016

समान तिथि की हमारी रिपोर्ट के अनुसार
वास्ते रमनलाल जी. शाह एंड कं.
चार्टर्ड एकाउंटेंट्स
फर्म पंजी सं. 108517W

RAMANLAL G. SHAH & CO. AHMEDABAD CHARTERED ACCOUNTANTS

साझेदार
विवेक एस. शाह
सदस्यता सं. 112269

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत

अनुसूची : ११ - महत्वपूर्ण लेखा नीतियां एवं लेखा टिप्पणियां :

१. महत्वपूर्ण लेखा नीतियां :

क) लेखा का आधार

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक लागत सम्मेलन के तहत लेखा के प्रोद्भवन आधार पर, भारत में लेखा के सामान्यतः स्वीकृत सिद्धांतों (इंडियन जीएएपी) के अनुरूप, यथायोग्य ढंग से, और बंबई सार्वजनिक न्यास अधिनियम, १९५० के प्रावधानों के अनुसार और वित्त मंत्रालय द्वारा जारी केन्द्रीय स्वायतशासी निकायों के लेखा संबंधी दिशा निर्देशों के अनुरूप तैयार किए गए हैं। लेखा नीतियों पर प्रतिष्ठान द्वारा निरंतर अमल किया गया है और लेखा नीतियां, अन्यत्र संदर्भित नहीं, भारत में लेखा के सामान्यतः स्वीकृत सिद्धांतों के अनुरूप हैं।

ख) राजस्व मान्यता

सभी आय और व्यय की पहचान, विशिष्ट एवं सशर्त अनुदानों को छोड़कर, प्रोद्भवन आधार पर की गयी है। ऐसे अनुदान की खर्च नहीं की गयी राशि दाता संगठन के निर्देशों के अनुसार वापस या पुनः निर्दिष्ट की जानी होती है। उसी अनुसार खर्च नहीं की गयी राशि को तुलन पत्र की तिथि पर देयता में प्रदर्शित किया जाता है। सरकारी अनुदान/ सब्सिडियों का उगाही आधार पर लेखाकरण होता है।

ग) अचल परिसम्पत्तियां और अमूर्त परिसम्पत्तियां

अचल परिसम्पत्तियों को संचित मूल्यह्रास घटाकर लागत पर अभिव्यक्त किया जाता है। लागत में परिसम्पत्ति को इसके निर्दिष्ट उपयोग हेतु इसकी कार्यकारी स्थिति में लाने के लिए आवश्यक सभी व्यय शामिल होते हैं। अचल परिसम्पत्तियों, जो अनुदान से प्राप्त हुई हैं, को अनुसूची २ में अनुदान के उपयोग के रूप में संबंधित उद्दिष्ट निधियों में प्रदर्शित किया जाता है।
चल विनिमय दर पर किसी प्रकार की हानि या प्राप्ति, जो स्थायी परिसम्पत्ति को प्रभावित करती हो, को स्थायी परिसम्पत्तियों की लागत में समायोजित किया जाता है।

घ) मूल्यह्रास एवं परिशोधन

मूल्यह्रास को मूल्यह्रासित मूल्य (डब्ल्यूडीवी) पर आयकर नियमों, १९६२ के अनुरूप अनुलग्नक । में निर्धारित ढंग से और दरों पर उपलब्ध कराया जाता है।

ङ) सरकार से प्राप्त योजना/गैर-योजना अनुदान

वर्ष के दौरान प्राप्त योजना अनुदान राजस्व खाते में जमा होते हैं, सिवाय इसके कि वर्ष के दौरान पूंजीगत परिसंपत्तियों के अधिग्रहण के लिए प्रयुक्त अनुदानों को संबंधित पूंजीगत निधि में जमा किया जाता है।

अनुसूची : ११ - महत्वपूर्ण लेखा नीतियां एवं लेखा टिप्पणियां :
पिछले पृष्ठ से जारी...

च) उद्दिष्ट निधियां
विशिष्ट परियोजनाओं के लिए प्राप्त निधियां/अनुदान अलग खाते में जमा होते हैं और इनका उपयोग संबंधित निधि/अनुदान खातों में नामे भी होता है। इन निधियों/अनुदानों का शेष चालू परियोजनाओं पर अभी भी अदत्त धनराशियों को दिखाता है।

छ) नवप्रवर्तन निधि
वर्ष के दौरान अर्जित ब्याज को नवप्रवर्तन निधि में जमा किया गया है।

ज) फैलोशिप और वज़ीफ़ा
प्रायोजित फैलोशिप और वज़ीफ़े का प्रायोजित परियोजना निधि/अनुदान पर लेखाकरण किया जाता है। संस्थान की निधियों के संवितरित फैलोशिप और वज़ीफ़े राजस्व व्यय के रूप में देखे जाते हैं और इन्हें स्थापना व्यय में नामे किया जाता है।

झ) प्रौद्योगिकी अधिग्रहण पर व्यय
नवप्रवर्तकों से नवप्रवर्तित उत्पादों के अधिकार, इन उत्पादों को कम लागत या बिना किसी लागत के आम लोगों को उपलब्ध कराने हेतु, अधिगृहीत करने के लिए किए गए भुगतानों को प्रौद्योगिकी अधिग्रहण निधि के तहत अधिग्रहीत प्रौद्योगिकी के रूप में आवर्ती व्यय की तरह भुगतान के वर्ष में राजस्व लेखा में प्रभारित किया जाता है।

ञ) निवेश
निवेशों को लागत पर व्यक्त किया जाता है।

ट) सेवानिवृत्ति और अन्य कर्मचारी लाभ
प्रतिष्ठान ने कर्मचारियों को भुगतान योग्य किसी भी प्रकार के सेवानिवृत्ति लाभों को सृजित नहीं किया है। सेवानिवृत्ति लाभों का लेखाकरण, कर्मचारियों को जब कभी वे देय एवं भुगतान योग्य हों, के लिए किया जाता है।

ठ) कराधान
आयकर अधिनियम, १९६१ के प्रावधानों अनुरूप आयकर प्रावधान लागू किए जाते हैं।

ड) विदेशी मुद्रा का लेन-देन
विदेशी मुद्रा में किए गए लेन-देनों का लेखाकरण लेन-देन की तिथि को विनिमय दर के आधार पर किया जाता है।

२. लेखा टिप्पणियां :
क) न्यासियों की राय में वर्तमान परिसम्पत्तियां, ऋण और अग्रिम सामान्य स्थिति में नकदीकरण पर एक मूल्य रखते हैं, जोकि कम से कम वह धनराशि है जिसे वे तुलनपत्र में व्यक्त करते हैं।
ख) न्यासियों की राय में तुलनपत्र की तिथि को कोई भी आकस्मिक देयता नहीं है।

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत

अनुसूची : ११ - महत्वपूर्ण लेखा नीतियां एवं लेखा टिप्पणियां :

ग) नवप्रवर्तकों को दिए गए ऋणों एवं अग्रिमों का शेष, पुष्टि/ समाधेयता और आवश्यक समायोजनों, यदि कोई हों, के अधीन होता है, जिन्हें जिस वर्ष उनका निपटारा होता है उसमें आगे ले जाया जाता है।

घ) कराधान

यह देखते हुए कि आयकर अधिनियम १९६१ के तहत कोई भी कर योग्य आय नहीं है, आयकर के कोई भी प्रावधान आवश्यक नहीं समझे गए हैं।

ङ) निष्पादित की जाने वाली पूंजीगत संविदाओं की अनुमानित धनराशि रु. -२४२१४९९

इस वर्ष के दौरान ट्रस्ट ने १११००००० रुपए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग से पूंजीगत अनुदान के रूप में प्राप्त किया, जिसका उपयोग इस प्रकार किया गया

i. स्थायी परिसंपत्ति में वृद्धि रूपए	५९,१५,३९४
ii. स्थायी परिसंपत्ति के लिए अग्रिम जमा ओ/एस ३१ मार्च २०१६ को	४४,५२,८१३
iii. स्थायी परिसंपत्तियों की तरफ शेष राशि	७,३१,७९३
(जो कि प्राप्त किया गया और तुलन पत्र के दिन तक बाद के उपयोग के लिए रखा गया)	
कुल	१,११,००,०००

च) वित्त समिति के बैठक के प्रस्ताव संख्या २५/२०१६ और शासी मंडल के बैठक के प्रस्ताव संख्या १८१/२०१६ दिनांक २७ जून २०१६ के तहत नवाचार निधि के तहत दिए अनुदान पर २०१५-१६ वित्तीय वर्ष के दौरान अर्जित ब्याज बदलकर रुपये (४३,४९, ७४७) रुपये ४३ लाख ४९ हजार सात सौ सैतालिस हो गया, जो की नवाचार निधि में जमा नहीं किया गया है

छ. चालू वित्तीय वर्ष के आकड़े के साथ तुलनीय बनाने के लिए पुराने वर्ष के आकड़े को पुनः व्यवस्थित/इकट्ठा कर गया है

अनुसूची-१ से ११ को ३१ मार्च, २०१६ के तुलनपत्र एवं समान तिथि को समाप्त हुए वर्ष के लिए आय एवं व्यय खाते के अभिन्न अंग के रूप में संलग्न किया गया है।

समान तिथि की हमारी रिपोर्ट के अनुसार
वास्ते रमनलाल जी. शाह एंड कंपनी
चार्टर्ड एकाउंटेंट्स
फर्म रजि. सं. १०८५१७ डब्ल्यू

RAMANLAL G. SHAH & CO. AHMEDABAD CHARTERED ACCOUNTANTS

विवेक एस. शाह
साझीदार
सदस्यता संख्या ११२२६९
स्थान : अहमदाबाद

तिथि : 29 SEP 2016

न्यासी

Executive Vice Chairperson
National Innovation Foundation-India
Autonomous Body of Department of Science & Technology, Govt. of India
Satellite Complex, Satellite, Ahmedabad-15

स्थान : अहमदाबाद

तिथि :

वार्षिक लेखा

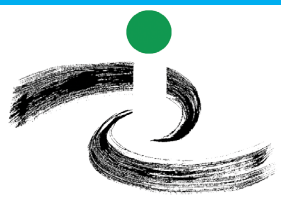

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान-भारत

सेटेलाइट कॉम्प्लेक्स, जोधपुर टेकरा, सेटेलाइट
अहमदाबाद- ३८००१५, गुजरात
पिन -३८००१५
दूरभाषः +९१ ०७९-२६७३२४५६
फैक्सः +९१ ०७९-२६७३१९०३
ई मेल- info@nifindia.org
www.nif.org.in

ग्रामभारती
नजदीक ग्रामभारती चाररास्ता
गांधीनगर - महुदी रोड
गांधीनगर
गुजरात
पिन - ३८२७२१
दूरभाषः ०२७६४-२६११३१/३२/३८/३९